

श्री सद्गुरुवेनमः

आत्म ज्ञान बिना नर भटके

एक पुरुष है सबसे न्यारा। सब घट व्यापक अगमअपारा ॥
ताकी भक्ति महा निरतारा। भक्ति करे सो उतरे पारा ॥

—सतगुरु मधु परमहंस जी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, जिला साम्बा (जे. एण्ड के.)

आत्म ज्ञान बिना नर भटके

— सतगुरु मधुपरमहंस जी

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)

ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	March, 2009
Copies	—	5000

Website Address.

www.sahibbandgi.org

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*satgurusahib@sahibbandgi.org

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri
Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)
Ph. (01923) 242695, 242602

Mudrak: Sartaj Printing Press, Jalandhar

विषय सूचि

पृष्ठ संख्या

1. सत्य पुरुष तब गुप्त रहाय	7
2. हैं दयाल द्रोह नहीं वाके	31
3. जाके हृदय साँच है ताके हृदय आप	44
4. आखिर यह तन खाक मिलेगा	63
5. अन्तवाहक शरीर का रहस्य	86
6. मन तरंग में जगत भुलाना	99
7. एक हंस के मन जो आई	105
8. जो जिसके शरणागति तिसको ताकी लाज	107
9. साहिब अमृत वाणी	116
→ सतगुरु शब्द सुधारें	116
→ मिले न बुझावनहारा	117
→ सतगुरु मेरे आए	118
→ गुरु के हाथ काहे न बिकानो	119
→ योगिया बहुरि गुफा न आवै	119
→ तेरो को है रोकनहार	120
→ दिल में खोजि दिलहि में खोजो	121
→ सतगुरु साहिब आए मेरे पाहुना	122
→ अजहू तेरा न गयो	123
→ सतगुरु है रंगरेज	123
→ जो तू पिय की लाइली	124
→ गुरु दियो बौराइ	125



दो शब्द

आपके पास शुद्ध आत्मज्ञान पहुँचाना चाहता हूँ। आज शुद्ध आत्मज्ञान की बात कोई नहीं कर रहा है। सब भटके हुए हैं। कुछ बाहर में भटके हुए हैं तो कुछ अन्दर में। कोई भी सच्चे आत्मज्ञान की बात नहीं कर रहा है।

इस संसार में सगुण-निर्गुण से संबंधित जितनी भी भक्तियाँ प्रचलित हैं, सब काल की हैं। उनमें किसी में भी पूर्ण आत्मज्ञान नहीं है। जब तक आत्मज्ञान नहीं हो जाता तब तक जीव सदा के लिए भवसागर से नहीं छूट सकता है। इस जीव को सत्य-भक्ति की राह दिखाने वाला भी कोई नहीं मिलता। अमर-लोक का संदेश देने वाला भी कोई नहीं मिलता।

वा घर की सुधि कोई न बतावे, जहँवा से हंसा आया है॥

यदि मिलता भी है तो वो खुद वहाँ नहीं पहुँचा होता है, केवल साहिब की वाणियों की नक़ल करके ही बोलता है। इसी कारण फिर आ-जाकर निरंजन में ही उलझा देता है। इस तरह सत्य-भक्ति से रहित जीव आत्मज्ञान से बहुत दूर हो गया है। जब तक जीव अमर-लोक में नहीं पहुँच जाता, जब तक जीव सच्चे साहिब को नहीं पा लेता, तब तक सदा के लिए मुक्त नहीं हो सकता है। अमर-लोक में पहुँचकर ही पूर्ण आत्मज्ञान होता है। और उस लोक में पहुँचने के लिए सच्चे सद्गुरु के सच्चे नाम की ज़रूरत है। पर दुनिया इस रहस्य को नहीं समझ पाती है और पाखण्डियों के चंगुल में फँसकर बाहर भटक जाती है। वो प्रभु तो अन्दर में बैठा हुआ है, पर दुनिया उसे बाहर खोज रही है, क्योंकि स्वार्थियों ने उलझा दिया है। मनुष्य भटक रहा है, उसे पाने के लिए कमाई, योग, जप, तप, ध्यान आदि कर रहा है, पर इन चीज़ों से वो नहीं मिलने वाला। वो प्रभु तो सहज में ही मिलने वाला है। वो तो अन्दर में ही बैठा है। ज़रूरत है तो केवल सद्गुरु के द्वारा उसे प्रकट कर देने की। अन्यथा वो प्रभु आपसे कहीं दूर नहीं है।

पानी में मीन पियासी। मोहि सुनि सुनि आवत हाँसी॥

घर में पड़ी वस्तु नहिं सूझो, बाहर खोजन जासी॥

मृग की नाभि माहिं कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी॥

आत्म ज्ञान बिना सब सूना, का मथुरा का कासी॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज मिले अविनासी॥



सत्य साहिब कबीर थे, कह गये संत सभी

वाह वाह कबीर के गुरु पूरा है, वाह वाह कबीर गुरु पूरा है।
पूरे गुरु के मैं बलि जौहों, जाका सकल जहूरा है ॥

अव्वल संत कबीर हैं, दूजै रामानन्द।
तासे भक्ति प्रगट भई, सात दीप नव खण्ड ॥

यक अर्ज गुफतम पेश, तू दर गोश कुन करतार।
हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवर दिगार ॥
—नानक देव जी

बहुत जीव अटके रहे, बिन सतगुरु भव माहिं।
दादू नाम कबीर बिन, छूटे ऐकौ नाहिं ॥

दादू बैठि जहाज पर, गये समुदरतीर।
जल में मच्छी जो रहैं, कहे कबीर कबीर ॥

कोई सगुन में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।
अटपट चाल कबीर की, मोसे कही न जाय ॥
—दादू दयाल जी

गगनमण्डल से उतरे, साहिब पुरुष कबीर।
चोला धरा खवास का, तोड़े यम जंजीर ॥

दास गरीब कबीर को चेरा। सत्य लोक अमर पुर डेरा।
 अमृत पान अमिय रस चोखा। पीवे हंसा नहीं धोखा॥
 अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में, बंदी छोड़ कहाय।
 सो तो पुरुष कबीर है, जननी जना न माय॥
 साहिब पुरुष कबीर ने, देह धरी न कोय।
 शब्द स्वरूपी रूप है, घट घट बोलै सोय॥
 —गरीब दास जी

स्वामी! जौ तुम गवौ सो हौं गाऊँ, तुम्हारा ज्ञान विचारूँ।
 कहैं रैदास सुणों हो स्वामी, भर्म कर्म सब छाडूँ॥
 —रविदास जी

पानी ते पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर।
 अन्न अहार करता नहीं, ताको नाम कबीर॥
 —नाभादास जी

मेरे कन्त कबीर है, वर और नहिं वरिहों।
 दादू तीन तिलाक है, चित और न धरिहों॥
 —दादू दयाल जी

कक्का केवल नाम है, बब्बा वरण शरीर।
 ररा सब में रमि रहा, जिसका नाम कबीर॥
 सोई ज्ञानी पुरुष है, सतगुरु सत्य कबीर।
 रज वीरज पैजा नहीं, सुआसा नहीं शरी॥



सत्य पुरुष तब गुप्त रहाय

विष अमृत रहत इक संग। मलयागिरि में रहत भुजंगा ॥

इस शरीर के अंदर विष भी भरा है और अमृत भी। यह देही का खेल कितना सूक्ष्म है! इतना बुद्धिमान प्राणी शरीर के संचालन के सिस्टमों को नहीं जानता है। बहुत बड़ा दुख है। जब भी अपने को जानने की कोशिश करता है तो अबूझा-सा महसूस होता है। लगता है कि इसे अपने बारे में जानकारी नहीं है। नहीं जानता है कि आत्मा कहाँ बैठी है, मन कहाँ बैठा है, क्या कर रहा है। नहीं जान रहा है कि काम, क्रोध आदि कैसे काम कर रहे हैं। नहीं जानता है कि मन का रूप कैसा है। मन के पास क्या ताकत है, नहीं जान रहा है। इंसान नहीं जानता है कि आत्मा शरीर में कैसे स्थित है। मनुष्य नहीं जानता है कि कहाँ से आया है और कहाँ जाना है। इन बातों से आदमी बिलकुल भी बेखबर है। घट का बिलकुल परिचय नहीं है।

काया गढ़ खोजो मोरे भाई। तेरी काल अवध टर जाई ॥

क्या मनुष्य अंदर की संरचना, अपनी आत्मा, कर्मज्ञानेन्द्रियों को समझने में सक्षम है? अपनी ताकत से किस सीमा तक जा सकता है? ये विषय अत्यंत गंभीर हैं। हममें अगर विरोधी शक्तियाँ काम कर रही हैं तो कैसे कर रही हैं? क्या कर रही हैं? वो कैसे भ्रमित कर रही हैं? हमारा शत्रु कौन है, कैसा है, जो हमारी आत्मा को अज्ञान की पतों में ढके हुए है? हम अक्षम हो रहे हैं। जब चिंतन करते हैं तो संकेत मिलता है कि क्रूर ताकत, जो हमारी विरोधी है, वो ही हमें अपना निजस्वरूप पाने नहीं दे

रही है। जब अपनी आत्मा की ओर बढ़ते हैं तो वो रुकावट दे रही है। इन बातों पर कोई चिंतन नहीं कर रहा है। हम आस लगाए हुए हैं कि स्वर्ग में जाकर मोक्ष पायेंगे। जब वहाँ सुख का भोग किया जा रहा है तो मन है। इसलिए वहाँ आत्मज्ञान नहीं है। वहाँ तो कर्मों का फल भोगा जा रहा है। त्रिलोक के अन्दर जितने भी लोक हैं, कोई सुरक्षित नहीं है। शातिर ताक़त इतनी ताक़तवर है।

सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे ॥

एक विरोधी ताक़त हमें बाँधे हुए है। वो जब भी चाहती है, जैसा भी चाहती है, करवा लेती है। शरीर का कण्ट्रोल भी वही कर रही है।

मन ही निरंजन सबै नचाए।

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीहृत पंडित काजी ॥

उसी की हुकूमत चल रही है। हमारा अन्तःकरण उसी के द्वारा संचालित हो रहा है। जब भी चाहता है, जो भी चाहता है, करवाता है। हम सब नितान्त एक क्रूर ताक़त के हाथ में हैं। किसी कीमत पर अपनी सामर्थ्य से नहीं छूट सकती है आत्मा। अगर ईमानदारी से भक्तियों की तरफ देखें तो समस्त भक्तियों का केंद्र मन तक है। जिनके सान्निध्य में हम मोक्ष की आकांक्षा करते हैं, वो खुद मुक्ति की राह पर कितना चल चुके हैं, आत्मा और, परमात्मा के कितने नज़दीक हैं, यह देखना होगा।

अंधे को अंधा मिले, राह बतावे कौन ॥

इसका मतलब है, हमें देखना होगा कि जिनका अनुकरण करके, जिनके नक्शेकदम पर चलकर हम अपना कल्याण करना चाहते हैं, उनका अपने मन पर कितना नियंत्रण है, वे आत्मा के कितने नज़दीक पहुँचे हैं। क्या वे हमारी आत्मा को विरोधी ताक़त से छुड़ाने में सक्षम हैं? जब चिंतन करते हैं तो वो जानकारी नहीं रख रहे हैं। बाप अपने बेटे को गद्दी देकर जा रहा है।

अंधा अगुआ तेहि गुण माहिं। बहु अंधा तेहि पाछे जाहिं ॥

साहिब ने सच बोला, पर वो भी मृदुल भाषा में बोला।

वाणी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

इस दुनिया में अंधापन चल रहा है। जैसे अन्तर्मुखी होंगे, आपका विरोध होगा। कभी मेरे नामी कहते हैं कि लोग विरोध करते हैं। मैं कहता हूँ कि यह तो होगा ही। जैसे ही आप कुरीतियों को छोड़ेंगे, अन्तर्मुखी होंगे, आपका विरोध होगा। जिस महापुरुष ने पाखण्ड के विरुद्ध बोला, उसे यातनाएँ दी गयीं। चाहे आज हम उन्हें भगवान के तौर पर, महात्मा के तौर पर मान रहे हैं, पर उस काल में उनका घोर विरोध हुआ। इस तरह साहिब ने एक मुहिम चलाई कि आत्मा को छुटकारा प्राप्त कराना है। क्यों? क्योंकि यह विरोधी ताकतों के शिकंजे में है। हमारी आत्मा को ये अनात्म कर्मों में लगा रही हैं।

जो आत्मा के अनुकूल नहीं है, वही सब इससे करवाया जा रहा है। जैसे बाजीगर बंदर के स्वभाव के विरुद्ध सब काम करवा रहा है, इस तरह संसार के सभी काम आत्मा के स्वभाव के प्रतिकूल हैं। जैसे शेर को पकड़कर उसे आग के गोले के बीच में से जंप करवाया जाता है। यह उसके स्वभाव के प्रतिकूल है। वो कतई नहीं करना चाहता है। पर उसे भयभीत करके करवाया जाता है। शेर की आँखों में अँधकार में भी देखने वाला तत्व है, इसलिए वो रोशनी की तरफ देखना नहीं चाहता है। उसके सिर में दर्द होता है। पर भयवश उसे करना पड़ता है। इस तरह मन सब कुछ आत्मा से करवा रहा है। चोरी करने जा रहे हैं तो आत्मा शामिल हो जाती है। हम वर्तमान में जो भक्ति का वातावरण देख रहे हैं, क्या इसमें आत्मज्ञान है? क्यों न हम ईमानदार बनें! हम सत्य को स्वीकार करें, सत्य पर चलें।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥

जितनी भी तपस्याएँ हैं, उनमें सत्य के बराबर कोई भी नहीं है। क्यों? जैसे ही हम सत्य का अनुकरण करते जाते हैं, आत्मा के नज़दीक

पहुँचते जाते हैं। तब सब काम झूठ लगेंगे। जब हम सत्य की पराकाष्ठा पर पहुँचते हैं तो आखिर में परमात्मा ही खड़ा हो जाता है। पर दूसरी ओर यदि हम झूठे, नाशवान् पदार्थों की तरफ चलेंगे तो आखिर में विरोधी ताकतें ही खड़ी होंगी।

तो आत्मा के अनुकूल कुछ भी नहीं है। ये चीजें आत्मा का उत्थान करने वाली नहीं हैं। पर सबने इसी को भक्ति माना। किसी ने मुझसे कहा—महाराज, आज चारों तरफ भक्ति का वातावरण लग रहा है; लगता है कि इंसान ने शरीर की नाशवानता को महसूस कर लिया है।

पर यदि हम पूरा भक्ति-क्षेत्र देखें तो व्यवसायिक नज़र आयेगा। निष्पक्ष होकर चिंतन करें तो साकारवाद से लेकर गुरुवाद तक पूरा भक्ति-क्षेत्र व्यवसायिकता से ग्रसित मिलता है। तमाम उदाहरण मिलते हैं। उदाहरण के लिए आज इस समय भक्ति के प्रचार के सूत्र क्या हैं? किन माध्यमों से हो रहा है? वर्तमान में देखते हैं कि कौन-से सूत्र हैं, जिनके द्वारा भक्ति प्रचारित हो रही है। पहला है—मीडिया। वो कैसे कर रहा है प्रचार? चैनलों द्वारा कर रहा है। अब चैनल तो व्यवसायिक हैं; पैसा न मिले तो बंद कर देते हैं। यदि रावण को खड़ा कर दें तो उसका भी दे देंगे। यानी भक्ति का प्रचार करने वाली मीडिया शातिर है; वो व्यवसायिक है; उसका कहीं दूर से भी भक्ति से नाता नहीं है। लोग क्यों आए मीडिया में? क्योंकि बड़ा पैसा देखा। मत सोचना कि श्रद्धा में बड़े भक्त बैठे हैं। 70 महात्मा एक दिन में प्रोग्राम दे रहे हैं। 20 मिनट का एपीसोड है। एक मिनट का एक हजार रुपये के करीब लिया जाता है। उसके साथ मशहूरियाँ भी देते हैं और मात्र गर्दन ही दिखाते हैं। इस तरह एक महीने का हिसाब लगाएँ तो साढ़े 4 करोड़ रुपया कमा रहे हैं। फिर मशहूरियाँ बगैरह और केबल-क्वैक्शन वालों से भी देश-भर से पैसा लेते हैं। इस तरह बहुत हो गया।

अगर चैनलों के डायरेक्टरों को देखें तो सब संसारी हैं, हिंसक हैं। दुनिया बाहरी आडंबर देखकर कह रही है—वाह! वो ग्राहकों को

बुला रहे हैं। भक्ति के 10 चैनल चल रहे हैं, जिनमें प्रतियोगिता है। यह मीडिया, जो भक्ति का प्रचार कर रही है, उसका लक्ष्य क्या है? पैसा। किसी पंथ की बहुत-2 किताबें हैं, जो सौ-दो सौ रुपये से भी अधिक कीमत पर बेच रहे हैं। कई पंथ प्रिंट मीडिया के सहारे उठे हैं। उनके पास ज्ञानतत्व नहीं है। हम जो कुछ भी दे रहे हैं, घाटे में दे रहे हैं। क्योंकि हम व्यवसायिक नहीं हैं।

पल्ली मोड़ में किसी ने ज़मीन दी। फर्द कटानी थी। वो 5 हजार माँग रहा था। मैंने नहीं दिये। क्यों? क्योंकि घूस नहीं देता हूँ। सिद्धांत का पक्का हूँ। हम आध्यात्मिक हैं, व्यवसायिक नहीं हैं। वो तो गाय का मूत्र भी बेच रहे हैं। वो व्यवसायिक हैं; वो राजनीतिज्ञ हैं।

तो इस तरह फिर आबे-बाबे हैं प्रचार के स्रोत।

मेरे एक नामी का दोस्त टीचर था। दोनों साथ में पढ़े। 4-5 साल बाद उसके दोस्त ने नौकरी छोड़ दी और सतवा करने लगा। वो शास्त्री बन गया। मेरे नामी ने कहा कि तुमने नौकरी छोड़कर ठीक नहीं किया। सरकारी नौकरी थी; बड़ा बेवकूफी का काम किया। वो बोला-कौन-सी बेवकूफी की 7-8 हजार रुपए तनखाह थी। अब सतवा करता हूँ तो एक बार में 50-55 हजार मिलता है। नामी ने पूछा कि यह ख़याल कैसे आया? वो बोला कि हमारे ही गाँव का एक आठवीं फेल लड़का था। वो रेहड़ी लगाता था। बाद में उसने शास्त्री का काम शुरू किया और देखते-ही-देखते उसके पास कोठियाँ, कारें बगैरह सब कुछ हो गया। मैंने सोचा कि मैं तो बेवकूफ़ हूँ। मैंने भी यही काम शुरू कर दिया। मैंने इस काम से जो प्रॉपर्टी बनाई, वो सरकारी नौकरी से कई सालों में भी नहीं बना सकता था।

कहने का भाव है कि उनका एक मुद्दा है, उनका एक लक्ष्य है और वो है-धन। इसके लिए वो अपनी स्टेज पर नेता लोगों को भी बोलने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे उन्हें बड़ा लाभ होता है। आपस में वोट-नोट की साँठ-गाँठ होती है और लोग भी प्रभावित होते हैं कि

नेता आया है। फिर मीडिया भी लिखती है कि महात्मा के पास फ़लाना नेता पहुँचा। मैं किसी को भी बोलने का अवसर प्रदान नहीं करता हूँ। मैंने कई साल महात्माओं को टटोला। सबके पास गया; गोष्ठी की। जाते ही कहा कि मैं कुछ माँगने नहीं आया हूँ। जो पाना था, अपने गुरु से पा चुका हूँ। मैं केवल आपके ज्ञान की गहराई नापने आया हूँ। जब टटोला तो किसी के पास सच्चा ज्ञान नहीं था, किसी के पास आत्मज्ञान नहीं था। बड़े-2 महात्मा मेरे नामी से भी टक्कर नहीं ले सकते हैं। इसलिए मेरी निंदा तो होगी ही। मैं तैयार हूँ।

तो धर्म-स्थानों में बैठे हुए प्रचारक लोग कौन हैं? साहिब कह रहे हैं—

दसों दिशा में लागी आग। कहैं कबीर कहाँ जड़यो भाग ॥

जब उनपर नज़र डालते हैं तो कैसे मिलते हैं? वो क्या कर रहे हैं आखिर? परमात्मा के कितने नज़दीक हैं? उनके अन्दर परमात्म-तत्त्व कितना दिख रहा है? बुल्लेशाह तभी तो कह रहे हैं—

ठाकुर द्वारे ठग हैं बसदे, बिच तीर्था धावड़ी।

विच मसीता पोसती बसदे आशिक रहन अलग ॥

महापुरुषों ने तो जान की कीमत चुकाकर भी सच बोला है। वो कितने खूँखार हैं! वो कितने अपराधी हैं!

जब साहिब पहली बार धरती पर आए तो 100 साल रहकर गये। परम-पुरुष ने पूछा कि एक भी जीव को नहीं लाए क्या? साहिब ने कहा कि जिसे सुबह समझाता हूँ, वो शाम को भूल जाता है; जिसे शाम को समझाता हूँ, वो अगले दिन सुबह भूल जाता है। बीच में साहिब तंग पड़े; सोचा कि इसे मिटाकर, सबको ले चलता हूँ।

काल मेटि सकल ले जाऊँ ॥

परम-पुरुष से कहा—आपका हुकुम नहीं था, नहीं तो सबको ले आना था। विचार आया कि यदि ताक़त लगाऊँगा तो आपका शब्द कट जायेगा।

जोर करूँ तो शब्द नशाई ॥

जीवन में एक बार सबको साहिब के पास आने का मौका मिलता है। यह कोई एक बार की बात नहीं होती है।

युगन युग हम यहाँ चले आए। जो चीह्ना सो लोक पठाए ॥

असंख्यों जीवों को पार किया गया है।

अब कैसे होता है? यह अवसर ऐसे मिलता है कि मेरा कोई-न-कोई नामी उसके संपर्क में आयेगा; यह बात उठायेगा। यह परम-पुरुष ने मौका दिया है।

जयपुर का एक 'राजा' नाम का लड़का था। उसने मुझसे बड़े सवाल किये। वो शादी भी नहीं करना चाहता था। वो माया में नहीं जाना चाह रहा था। उसने कहा कि मेरी शंकाओं को दूर करो। उसने कहा कि यदि परम-पुरुष त्रिकालदर्शी थे तो वो यह भी जानते थे कि क्या होगा। उन्हें पता था कि आगे चलकर ऐसा होगा। फिर क्यों बनाया निरंजन को? क्यों आत्माओं को दुखों में फेंका? हम तो आनन्द में थे। सूरदास भी कह रहे हैं—

प्रभु तुमको तो है खेल विनोदा, पर हमें दुख भारी है ॥

कहा कि तुम तो आनन्द में हो, पर हम दुखी हैं।

तो उसका सवाल था कि हमें संकट में क्यों डाला? उसने कहा कि जो हो रहा है, फिर उसी की मरजी से है न! उसके सवाल बड़े तीखे थे। उसने कहा कि जो वर्तमान में हो रहा है, उसी की मरजी से है। फिर वो दयाल कैसे हुआ?

उसका सवाल था कि त्रिकालदर्शी परम-पुरुष को, मालूम था कि निरंजन ऐसा होगा..... क्यों बनाया? अगर नहीं मालूम था तो सर्वज्ञी कैसे हुआ? अगर मालूम था तो जो कुछ हो रहा है, इसमें कसूरवार परम-पुरुष थे, निरंजन नहीं।

सवाल तीखा था। मैंने उसे संतुष्ट किया। पर यह बड़ा मुश्किल है।

यदि उस परम-पुरुष में पहले से ही मन था तो पहले पाप भी था, गंदगी भी थी और शब्द द्वारा फेंका। फिर निष्कपट कैसे हुआ?

क्या सिगरेट जीवन के लिए जरूरी है? नहीं। यह आदत कहाँ से आई? मैंने कहा कि देखो, अतीत की ओर चलो।

कारण करन नहीं निरमाए। सत्य पुरुष तब गुप्त रहाए॥

उनमें ये चीजें नहीं थीं।

अब ठंड क्यों लग रही है? कहाँ से आई ठंड? यदि मौसम के कारण आई तो मौसम कहाँ से आया? धरती गोलाकार घूम रही है। जब सूर्य से दूर होती है तो ठंड हो जाती है, क्योंकि तब सीधी किरणें नहीं आतीं। फिर बर्फीली हवाएँ ठंडक को समेटे हुए आती हैं, इसलिए भी ठंड लगती है। समुद्र के किनारे रहने वाले साँवले क्यों हैं? बंगाली, गुजराती, मद्रासी बगैरह। वहाँ समुद्र की सतह पर 20-25 मीटर तक गर्म है। इसलिए जो हवा वहाँ से चल रही है, गर्म है। पर आस्ट्रेलिया के पास के लोग साँवले नहीं हैं। क्योंकि वहाँ जल का तापमान बहुत डाउन है। वो वाष्प वहाँ नहीं बन रही है। उस हवा के प्रभाव से यहाँ असर पड़ रहा है। ठंड एक कारण से आई।

परम-पुरुष गुप्त था। कुछ भी नहीं था तब। इच्छा की। इच्छा क्यों की? सवाल उठे।

गुप्त हते प्रगट होय आय॥

अव्यक्त था। अपने को व्यक्त करना चाहा। यह एक स्वाभाविक चीज़ इंसान में भी है। जो पहलवान है, कुश्ती द्वारा अपनी कला दिखाना चाहता है; जो संगीतकार है, वो भी गाकर सुनाना चाहता है। हम सब उसी के हैं न! तो वो व्यक्त हुआ। कैसे हुआ? उसने अपने को व्यक्त किया।

प्रथम पुरुष शब्द परकासा। दीप लोक रचि कीन्ह निवासा॥

परम-पुरुष ने पहले शब्द पुकारा, अद्भुत प्रकाश हुआ, जो श्वेत था। वो एक तत्व हुआ। फिर परम-पुरुष उसमें समा गये। यही काम तो

निरंजन ने भी किया। वो शून्य में समा गया। मन भी इच्छा कर रहा है। पर मन जो भी इच्छा कर रहा है, वो कारण-करण से संबंध है। पर परम-पुरुष की यह इच्छा सात्विक थी, मलिन नहीं थी। क्योंकि चेतन में स्फुरणा तो होगी ही।

सिगरेट की आदत लगाई जाती है। तो भी प्रिय लगती है।

हते गुप्त प्रगट होय आय ॥

अब व्यक्त हो गये, एक्टिव हो गये। आपने सुना कि आत्मा हिलता-डुलता नहीं। तो क्या जड़ है? नहीं। निरंजन ने खेल किया; वैसा ही करना चाहा, पर बना नहीं पाया। क्या शरीर चल सकता था? नहीं। क्या आत्मा कुछ उठा सकती थी? नहीं। इसी तरह बड़ी बारीक बात है। परम-पुरुष उस तत्व में समा गया। वो एक्टिव हो गया। पर वो निःतत्व है, पाँच तत्व का नहीं है। वो उसमें समा गया। अब पूरा सत्पुरुष बन गया। पहले अकह था, गुप्त था, अनामी था। यह प्रगट हुआ। इतना आनन्द था कि पूछो मत। यानी अपने को व्यक्त किया। जैसे बीज अंकुरित होकर पेड़ बन गया। ऐसा ही हुआ। अंकुरित होने के लिए बेल चाहिए थी, इसलिए शब्द से वो तत्व बनाया। तभी तो कहा-

शब्दै धरती शब्द आकाश। शब्दै शब्द भया प्रकाश ॥

जैसे पानी का मुट्ठा भरकर ऊपर फेंका तो वापिस आकर फिर पानी हो गया। ऐसे उस तत्व को उछाला तो वहीं अनन्त आत्माएँ हो गयीं।

हमारे शरीर में कितने शिक्राणु हैं? अगर आदमी के पूरे शुक्राणु गिनें तो इतने हैं कि यदि सभी प्रत्यक्ष होकर आ जाएँ तो धरती पर इतनी जनसंख्या हो जायेगी कि अनन्त। आपकी जिंदगी में अनेक जीवन हैं। मोहनलाल के बाप के शुक्राणु में अनन्त मोहनलाल थे। जैसे आपके घर में जितनी भी चींटियाँ हैं, सबमें आत्मा है। ऐसे ही उन सबमें आत्मा है। यह शरीर बड़ा विराट है। तभी तो कहा-

यह काया है समरथ केरी। काया की गति काहू न हेरी ॥

वो सब आपमें कारण रूप में हैं। जब कारण द्वारा गर्भवती किया तो बाहर प्रकट हो जाता है। ढाई से तीन करोड़ के करीब शुक्राणु एक बार संभोग में बाहर आते हैं। वाह! क्या करते हैं? जो पानी बहता है तो किधर जाता है? ढलान में। वो शुक्राणु नारी के रज से निकलने वाले डिम्ब को पकड़ते हैं। वो इंसान बनना चाहते हैं। वो सब दौड़ते हैं। बड़ी स्पीड में गर्भाशय की तरफ दौड़ते हैं। दौड़ते-2 आधे तो रास्ते में दम तोड़ देते हैं, आधे थक जाते हैं। यह कम्पीटीशन गर्भ से ही शुरू होता है। बड़े बुद्धिमान शुक्राणु हैं। अब वो स्थान इतना संकीर्ण है कि एक ही प्रवेश ले पाता है। बाकी को मरना-ही-मरना है। इसलिए संभोग को महापाप कहा गया। हरेक मजे में सजा है।

तो बाकी वहाँ मर जाते हैं। बेबी ट्यूब सुरक्षित स्थान है। भीड़ में तो स्वाँस रुक जायेगा। वो इतना सूक्ष्म स्थान है कि एक का ही स्थान है। दो भी हो सकते हैं। पर शर्त है कि एक साथ पहुँचना पड़ेगा। तीन भी ऐसे ही हो सकते हैं। जो वीर्य है, ऐसा तत्व है कि अपने बिंदू से हटने के बाद जमता है। इतनी स्पीड में जमता है कि सब उसमें खत्म हो जायेंगे। जैसे शहद में मक्खी गिरी तो मर जायेगी। बस, उन्होंने मरना ही है। इस तरह यह कम्पीटीशन पैदाइशी है इंसान में। बाकी मर जाते हैं।

तो वहाँ अमर-लोक में अनन्त बूँदें हुईं। वो सब वहाँ घूमने लगीं। परम-पुरुष ने इच्छा की कि वो सीज़ न हों। परम-पुरुष उन्हें देख बड़े खुश हुए। जैसे आप अपने बच्चों को देखकर खुश हो जाते हैं, ऐसे ही वो परम-पुरुष खुश हुआ। अब क्या करना चाहते थे? वे अमर-लोक को सँवारना चाह रहे थे, और अच्छा बनाना चाह रहे थे।

इस तरह शब्द पुकारते गये और कूर्म, ज्ञान, विवेक आदि को उत्पन्न किया। ताकि सबमें ज्ञान भी हो। इतने में उन्हें ख़याल आया कि जो बोल रहा हूँ, वो हो रहा है, तो क्या एक और परम-पुरुष भी बना सकता हूँ। तो कहा-परम-पुरुष। परम-पुरुष हो गया। अभी एक और मधु बन जाए तो मैं देखूँगा कि नाक वैसी है कि नहीं, कान वैसे हैं कि नहीं। बाद

में क्या देखूँगा कि अभिव्यक्ति वैसी है कि नहीं! विचार कैसे हैं कि नहीं! सोच वैसी है कि नहीं! परम-पुरुष जिस बिंदू पर थे, उसे छोड़ा और जो बनाया, उसमें यह चेक करने के लिए आ गये। वो चेतन हुआ। पर परम-पुरुष को अनुभव हुआ कि मैं तो वहाँ हूँ, यह नहीं हूँ। यह शंका एक मिनट के लिए आई। थी नहीं। यहीं से गड़बड़ हुई। तब जोर लगाकर वहाँ से अपने बिंदू पर आए। तो वो जो शंका आई, सोचा कि इसे अपने में से निकालना है। पाँचवाँ शब्द पुकारा। तो संशय निकली। शब्द तो था ही। यह निरंजन हो गया। पर अभी भी कुछ बच गया था।

संशय थी नहीं, पर यह कारण बन गया। जब देखा कि दो परम-पुरुष हो गये हैं तो संशय आ गयी। यह जानकर नहीं था। वो ऐसा नहीं करना चाह रहे थे। कहीं से भी नहीं। ऐसे विचार नहीं था परम-पुरुष का। यह कारण से हो गया।

तेज अंग से काल होई आया ॥

इसलिए मन में संशय होगी-ही-होगी। यह एक पल वाला मामला है। आप शांत हैं। बेटे का फूटा सिर देख गुस्सा आ गया। यानी कारणवश आया। इस तरह कारण से हुआ।

तो इस तरह 16 पुत्र उत्पन्न हो गये। अमर-लोक में बहुत आनन्द था। परम-पुरुष निरंजन को अमर-लोक में नहीं रहने देना चाह रहे थे। पर उसने तपस्या की; स्थान माँगा। परम-पुरुष ने कहा-जाओ, मानसरोवर में रहो। वो अमर-लोक में ही था।

आपकी कई बातों का संतान पर असर पड़ता है। उस समय नारी भयभीत है तो बालक पर भी असर पड़ता है। जैसे भोजन खाते हैं तो उसका असर पड़ता है। रति-विज्ञान में इसके बारे में विस्तार से है।

तो ऐसा हुआ कि उसने दुबारा तप किया। परम-पुरुष ने पूछा-क्या चाहते हो? कहा-ऐसा ब्रह्माण्ड दो, जिसका मैं राजा होऊँ। परम-पुरुष ने कहा-ठीक है। तुम एक रचना करो, तीन-लोक बनाओ। कहा कि कूर्म जी के पेट में उस रचना का बीज है। यानी आकाश-तत्त्व। यह

कहाँ से आया? जब भी कोई चीज़ विस्तृत होती है तो स्पेस बन जाती है। इस तरह हुआ। कहा-कूर्म के पास है, ले लो। जो भी शंकाएँ हैं, मन है। अज्ञान मन है।

वहाँ उसने कूर्म जी से कुछ नहीं पूछा। परम-पुरुष ने कहा था कि माँग लेना; वो दयालु है, दे देगा। पर उसने जबरन उनके अंदर से ये चीज़ें निकाल लीं। कूर्म जी ने परम-पुरुष से पुकार की, कहा कि आपने भेजा था, मैंने कुछ नहीं कहा, पर इसने जबरन लिया। परम-पुरुष ने कहा कि तुम बड़े हो, क्षमा कर दो। तो वो तत्व लेकर निरंजन ने पूरा ब्रह्माण्ड बनाया। शून्य से हवा बनाई। स्पेस में दो हाथों को प्रेशर देकर दूर से समीप (नजदीक) लाएँ तो हवा चलती है। फिर हवा से आग बनाई। आप दौड़ते हैं तो पेट में अग्नि उत्पन्न होती है। फिर आग से जल बनाया। दौड़ने पर जब आग उत्पन्न होती है तो पसीना आता है। यानी आग से पानी हो गया। फिर पसीने से बदबू आती है, जमकर मैल बनती है। जो जमने के बाद मैल बनी वो ही पृथ्वी है। तो जल से पृथ्वी बनाई। इस तरह पाँचों तत्व हुए। ये पूरा काल का संसार है। पर धातु या तत्व इसने नहीं बनाया। पर रचयिता, निर्माता निरंजन हुआ इनका। सूर्य, चंद्रमा आदि तो बनाए, पर जीव नहीं था, आत्मा नहीं थी। फिर इसने 64 युग तक तपस्या की; सोचा कि गलती हो गयी। परम-पुरुष ने कहा कि अब क्या चाहते हो? कहा-

दीजै खेत बीज निज सारा ॥

कहा कि आत्माएँ भी दो, जिनपर राज्य कर सकूँ; जैसे अमर लोक में हैं। तब परम-पुरुष ने मैल मथकर पुत्री उत्पन्न की। अब मैल कहाँ से आई? जैसे गंदगी पड़ी तो उठाकर साफ़ कर दी; पर फिर भी कुछ बच जाता है। उसे निकाला। इसलिए नारी शंका है। स्त्री में शंका है।

तामें भ्रम भ्रम रहे कबीरा ॥

परम-पुरुष ने निरंजन को आत्माएँ दीं। क्यों दीं? यही वो लड़का पूछ रहा था। इसलिए दीं क्योंकि जानते थे कि निरंजन और माया इसका

कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगे। उसने तपस्या की थी। वो जानते थे। सच भी है कि आत्मा का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। मन ही दुखी होता है। आत्मा केवल अनुभव कर रही है। यह है खेल। शरीर का कोई अंग खराब हो जाए या कट जाए तो इंसान दुखी हो जाता है, कहता है कि मार डाला। यह शरीर तो माया और निरंजन है। परम-पुरुष ने जो दिया, बड़ी ही सेफ चीज़ है। इसका निरंजन कुछ नहीं कर सकता है।

तो जब आद्य-शक्ति पहुँची तो निरंजन उसे देखकर मोहित हुआ। उसने आद्य-शक्ति को निगल लिया। अब इंसान प्रेम क्यों करता है? यह प्रेम कहाँ देखता है? यह प्रेम आत्मा का स्वभाव है। परम-पुरुष ने आद्य-शक्ति से प्रेम किया, इसलिए वो प्रिय हो गयी। इसलिए नारी का आकर्षण है। स्त्री क्यों आकर्षित करती है पुरुष को? क्या नहीं मालूम है कि मल-मूत्र ही भरा पड़ा है। फिर क्यों करती है आकर्षित? क्योंकि परम-पुरुष ने प्रेम किया इससे। इसलिए प्रिय हो गयी।

मैं जानता हूँ कि यहाँ बैठे-2 किसी से नफ़रत करूँगा तो पूरी दुनिया उससे नफ़रत करने लग जायेगी। यह बड़ी अटपटी बात है। पर सावधान हूँ। कहीं से भी हिंसक नहीं बनना है। एक जगह बैठकर पूरे ब्रह्माण्ड की हुकूमत हो सकती है। पर यह नहीं करना है। हुकूमत निरंजन की है। राजा पर हुकुम चलाया जाए तो वो राजा नहीं रह जाता है, मंत्री हो जाता है। इसलिए वो चाहे मारे-काटे, कुछ भी करे। हमारा काम यह है कि जो हमारे संरक्षण में आए, उसे सुरक्षित करना है। अब 17 चौकड़ी असंख्य युगों का राज्य दे दिया है तो परम-पुरुष कोई दखलंदाजी नहीं दे रहा है। अभी 4 असंख्य चौकड़ी युग ही बीते हैं। जब यह सारा समय बीत जायेगा तो परम-पुरुष दुबारा ऐसा नहीं होने देगा। अनन्त बार मोहनलाल ब्रह्मा बन चुका है; अनन्त बार गुप्ता जी विष्णु बन चुके हैं। यह हिसाब भी अनगिनत है।

परम-पुरुष ने एक समय विचार किया कि इसे मिटा देता हूँ। पर सोचा कि पूरा सृजन खत्म करना होगा।

बचन करूँ प्रतिपाल, मोरि देश न आवही॥

मैंने लड़के को समझाया कि निरंजन कुछ नहीं कर सकता है इसका। परम-पुरुष यह बात जानते हैं।

अब आद्य-शक्ति क्यों मिल गयी निरंजन से? जब निगल लिया तो पुकार की। यहीं परम-पुरुष ने सोचा कि मिटा देता हूँ। पर विचार किया कि नहीं। तब क्या किया? साहिब कह रहे हैं—

तबहि पुरुष मोहिं पुकारा। ज्ञानी बेगि जाओ संसारा॥

साहिब कह रहे हैं कि तब परम-पुरुष ने मुझे पुकारा। तब साहिब कहाँ थे? परम-पुरुष ने अपनी उग्र शक्ति निकाली, बाहर की। क्योंकि जानते थे कि बाकी किसी से काबू में नहीं आयेगा। इसी सिद्धांत पर कबीर साहिब को परम-पुरुष का रूप माना जाता है। पर कबीर पंथियों ने खिचड़ी कर दी है। इसलिए मैं अपने को कबीर पंथी नहीं मानता हूँ।

परम-पुरुष ने अपनी मुख्य उर्जा निकाली। उनके नाम युग-युग में संसार में अलग-अलग थे। उन्हें कोई बनाया नहीं; खुद ही साहिब हुए।

जब 17 चौकड़ी असंख्य युग हो जायेंगे, तब परम-पुरुष निरंजन को मिटा देगा और सभी हंसों को अपने में समा देगा। यदि नहीं समाया तो भी निरंजन को मिटा देगा।

कोई कहता है कि क्या गारंटी कि वो फिर ऐसी दुनिया बनाए या नहीं! जिस चीज़ से आपकी एक आँख फूटी हो तो दुबारा उसी से फोड़ेंगे क्या? परम-पुरुष खुद ही तो परेशान हुआ न!

तो जब पहले साहिब आए तो बड़ी स्पीड में जीवों को उठा रहे थे। निरंजन आया; कहा कि मुझे शाप मिला है; ऐसे सबको ले जाओगे तो शाप का क्या होगा?

अब परम-पुरुष ने शाप क्यों दिया? यह सज़ा भी मन को है, आत्मा को नहीं।

तो कहा कि उठा-उठाकर ले जा रहे हो तो ख़त्म हो जायेंगे।

लाख जीव रोज़ खाने हैं तो कैसे होगा! फिर क्या करूँगा? एक बार साहिब ने निरंजन को मिटा भी दिया। पर फिर जिंदा कर दिया। इसलिए निरंजन की देही बिना शरीर के है। सुरति से शीश जोड़ दिया।

अमी देह से ताहि जुड़ाई ॥

यह काम भी हो सकता है। पर किसी एक को भी जिंदा किया तो बड़ी मुसीबत हो जायेगी। इसलिए पदों में ही ठीक रहता है। दूसरा कहेगा कि हमारे सामने करो। तो

देव निरंजन सकल शरीरा ॥

अगर देह से देखना चाहते हो तो जितने भी पुरुष हैं, निरंजन का रूप हैं। और आद्य-शक्ति को देखना चाहते हो तो स्त्री को देख लो। यह स्थूल रूप है।

तो निरंजन ने कहा कि क्या कर रहे हो! फिर तो संसार खाली हो जायेगा। फिर मुझे भी ले चलो, सज़ा कैसी है!

जब आद्य-शक्ति को निगला तो साहिब ने कहा कि परम-पुरुष की सुरति कर। यहीं युद्ध हुआ। परम-पुरुष ने कहा कि आद्य-शक्ति नहीं लेना; दे चुका हूँ। तो कहा कि परम-पुरुष का ध्यान कर।

हमारे नामी के पास प्रेतात्मा क्यों नहीं आती है? हम प्रेतात्मा को मारना नहीं चाह रहे हैं। प्रेतात्मा कारणवश आती है। किसी ने सताया हो या प्रेम कर रहा है तो आयेगी। दोनों तरह से आयेगी। एक बार प्रेतात्मा ने गुज़ारिश की; कहा कि मैं सामने आना चाहती हूँ, आज्ञा दो। मैंने कहा कि आ जाओ। नहीं तो सामने नहीं आ सकती है; बहुत तेज़ करेंट पड़ेगा। वो बोली कि आप इतनी-2 ताक़त गंदे-2 लोगों में मत छोड़ो। मैंने पूछा-क्या हुआ? कहा कि फ़लाने को नचाती थी, पर अब सामने नहीं जा पा रही हूँ। मैंने पूछा कि क्यों नचाती थी? वो बोली कि मैं उनकी बहू थी। मैं बीमार पड़ गयी तो खटिया पर पड़ गयी। तब इन्होंने गला दबा-दबाकर मुझे मार डाला। पर मेरी इच्छा जीने की थी। जब मर रही थी तो सोचा कि कैसे बदला लूँ!

प्रेतात्मा तलवार से किसी को नहीं मार सकती है। वो केवल दिमाग को गड़बड़ कर सकती है। वो पहले प्रवेश लेती है। उसका शरीर नहीं है; केवल डरा सकती है, रूप बदल सकती है। वो बोली कि इनका खानदान नहीं चलने देना था। मैं इनको धीरे-धीरे मार रही थी, निःसंतान करना था। क्योंकि मैं भी निःसंतान ही मरी हूँ। मैंने कहा-नहीं, अब तू जायेगी तो बहुत सज़ा मिलेगी। फिर उसने शर्त रखी; कहा कि मुझे मुक्त करो फिर। मेरा क्या कसूर है? आप न्याय करो। मेरे पास और कोई काम ही नहीं है; यही है कि इन्हें मिटाना है।

तो कहने का भाव है कि प्रेतात्मा आपके पास नहीं आ सकती है। सुरति करने पर भागेगी। ग़फ़लत में हैं तो आ सकती है। अगर मुझमें भरोसा नहीं है तो आ सकती है।

तो आद्य-शक्ति की तरफ चलते हैं। उसमें निरंजन से भी अधिक ताक़त है। देवता भी परास्त होते हैं तो इसी की शरण में जाते हैं। पर वो भी निरंजन वाली बात करती है; उलझाती है यह भी।

माया महाठगिनी हम जानी ॥

पर परम-पुरुष इससे अधिक नाराज़ नहीं है। निरंजन से है। त्रिदेव पर जब संकट आता है तो पहले खुद निपट लेती है; पर जब बस नहीं चलता तो परम-पुरुष का ध्यान करती है। तब परम-पुरुष की शक्ति आती है। अब यह निरंजन के अधीन कैसे आई? साहिब ने मानसरोवर से निकाल दिया।

अब शक्ति बाहर आई तो डरने लगी। निरंजन ने कहा कि डरो नहीं; मैं पुरुष हूँ, तुम नारी हो। तुम्हारे पास आत्माएँ हैं; दोनों मिलकर सृष्टि करते हैं। इन्हें शरीर में डालो। कहा कि जीव को भ्रमित करना है। नहीं तो सब भाग जायेंगे। कहा कि मैं ही तेरा रचयिता हूँ; मेरे कारण से ही तेरी उत्पत्ति हुई है; तुम मेरी हो चुकी हो।

भग नहीं कन्या को हतो, यह चरित्र कीन निरंजना ॥

आद्य-शक्ति को गर्भ-द्वार नहीं था। मूत्रद्वार था, पर गर्भद्वार नहीं था। अब किसी ने सवाल किया कि परम-पुरुष का यह पहले से प्लैन था, क्योंकि निरंजन को शिश्न इंद्रि थी। अगर उसे गर्भद्वार नहीं था, ठीक है कि नख छिद्र करके गर्भद्वार बनाया।

यह पूरी रचना करने के बाद निरंजन ने इसमें वीर्य आदि दिया। परम-पुरुष ने सत्य-सृष्टि करने को कहा था।

जो हरेक अपने को शरीर मान रहा है, यह माया की ताकत है। दोनों ने मिलकर जकड़ा हुआ है। पक्की बात है कि नाम-दान देकर शरीर और मन दोनों के बंधन से निकाला। अब आप ऐसा फील नहीं करेंगे जैसा दुनिया के लोग कर रहे हैं।

तो निरंजन ने कहा कि भ्रमित करना है। इसलिए त्रिदेव को शक्ति ने भ्रमित किया। सभी जीव भ्रमित हो गये। अब आद्य-शक्ति ने ऐसा क्यों किया? साहिब कह रहे हैं-

**धर्म सुनहु जन नारि सुभाऊ। अब तुहि प्रगट बरनि समझाऊ ॥
होय पुत्री जेहि घर माहीं। अनेक यतन परितोसे ताहीं ॥
गयी सुता जब स्वामी गेहा। रात्यो तासु संग गुन नेहा ॥
माता पिता सबै बिसरावा। धर्मदास अस नारि स्वभावा ॥
ताते अद्या भई बिगानी। काल अंग ह्वै रही भवानी ॥**

कहा कि स्त्री का यह स्वभाव है। माता-पिता उसे पालते हैं, पर जब पति के घर जाती है तो उसी के प्रेम में रँग जाती है। तब माता-पिता को भूल जाती है। इसलिए आद्य-शक्ति बेगानी हो गयी।

तो जब निरंजन ने देखा कि साहिब सब जीवों को ले जा रहे हैं तो परम-पुरुष से पुकार की; कहा कि इस कबीर को धरती पर मत भेजो।

इन भवसागर मोर उजारो ॥

आपके घर को कोई उजाड़े तो परेशान हो जाते हैं। तो निरंजन परेशान हुआ। तो परम-पुरुष ने कहा कि युक्ति-युक्ति से उबारो, सम्मोहन से नहीं। निरंजन ने कहा कि मैंने भी ताक़त नहीं लगाना है, आप भी नहीं लगाना है; सहज में जो आ जाए, उसे ले जाना।

इसलिए अधिक छेड़छाड़ नहीं कर रहा हूँ। आपको तो एक मिनट में बैरागी बनाया जा सकता है। किसी की तरफ न देखोगे। एक मिनट का काम है। निरंजन की बात में वज़न है। एक दिन निरंजन ने कहा कि मुझे भी नाम दे दो। साहिब ने कहा कि यह नहीं करूँगा। वो बोला कि मेरा ज़ोर नहीं चल रहा है। साहिब ने कहा कि यदि तुझे दे दूँगा तो पूरी दुनिया ख़त्म हो जायेगी। क्योंकि तब सब निर्मल हो जायेंगे। जिस छल, कपट से तुमने दुनिया बनाई हुई है, वो सब समाप्त हो जायेगा। तू निर्मल हो जायेगा। इसलिए नहीं देना है।

इसलिए आपको नाम से निर्मल कर दिया। मन की हरकत होगी। वो खेल खेलेगा। दुनिया के काम दिखायेगा। पर जीवन का भार साहिब पर छोड़ देना। आपमें ही बैठकर साहिब अपना काम करेगा; निरंजन का कोई ज़ोर नहीं चल पायेगा।



<p>बेदों भी जानत नहीं। सत्य पुरुष कहानियां ॥</p>
--

कबीर साहिब जी ने धर्मदास को फरमाया

मैं हर युग में आकर हंसों को अपने धाम ले जाता हूँ। सतयुग का वर्णन करते हुए साहिब कह रहे हैं—

सतयुग चार हंस समझाये। प्रथम राय मित्र से नहीं आये ॥

चित्ररेखा रानी कर नाऊ। तिन सुनि शब्द श्रवण चितलाऊ ॥

राजा रानी पूछत मोही। सो हकीकत कहौं मैं तोही ॥

अष्टचौका को शब्द सुनावा। राजा रानी लोक पठावा ॥

दुसरे राय वटक्षेत्र के आवा। सतसुकृति तहँ नाभ धरावा ॥

तिन राजा पूछा चित लायी। तब तेहि भेद कह्यो समझायी ॥

पान परवाना राजहिं दीन्हा। राजा वास लोक में कीन्हा ॥

तिसरे राय हरचन्द कहँ आये। बन्ध काटि के लोक पठाये ॥

चौथे पुरी मथुरा में आयी। विकसी ग्वालिन के समझायी ॥

चारि हंस सतयुग समझाये। ते चारों गुरुवंश कहाये ॥

चारिहंस नौ लाख बचाये। शब्द भरोसे घरहिं पठाये ॥

साहिब कह रहे हैं कि इस तरह सतयुग में आकर मैंने चार हंसों को तारा और आगे उन चारों ने नौ लाख जीवों का कल्याण किया। आगे कह रहे हैं—

पुनि त्रेता युग कहौं विचारी। सात हंस त्रेतायुग तारी ॥

प्रथम ऋषि श्रृंगी समझाये। दुसरे अयोध्या मधुकर आये ॥

तीसरे शब्द कह्यो टकसारा। चौथे बोधे लछन कुमारा ॥

पचवें चलि रावण लगि गयऊ। तहाँ भेंट मंदोदरि से भयऊ ॥

गवीं रावण शब्द न माना । मंदोदरी शब्द पहचाना ॥
 छठें चलि वसिष्ठ लगि आये । ब्रह्म निरूपन उनहिं सुनाये ॥
 सतये जंगल में कियो वासा । जहाँ मिले ऋषि दुर्वासा ॥
 सात हंस सातौ गुरु कीन्हा । परम तत्व उनही भल चीन्हा ॥
 सातौ गुरु त्रेता में भयऊ । देइ उपदेश सो हंस पठयऊ ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि त्रेता में मैंने सात हंसों को तारा, जिनमें वशिष्ठ मुनि, शृंगी ऋषि आदि भी थे । अब द्वापर युग का वर्णन करते हुए साहिब कह रहे हैं—

त्रेता गत द्वापर युग आया । सत्रह जीव परवाना पाया ॥
 प्रथमें राय चंद विजय कहँ गयऊ । ताकी रानी इन्दुमति रहेऊ ॥
 दुसरे राय युधिष्ठिर कहँ आये । द्रौपदी सहित परवाना पाये ॥
 तिसरे पाराशर पहुँ आये । निर्णय ज्ञान ताहि समझाये ॥
 चौथे राय धुधुल लहि भेदा । बहुत ज्ञान को कीन्ह निखेदा ॥
 पचयें पारसदास समझावा । स्त्री सहित परवाना पावा ॥
 छठये गरुड़बोध हम कीन्हा । विहंग शब्द गरुड़ को दीन्हा ॥
 सातें हरिदास सुपच समझावा । नीमषार महँ उसको पावा ॥
 अठयें शुकदेव पहुँ ज्ञान पसारा । सकल सरब भेद निरवारा ॥
 नवमें राजा विदुर समझाया । भक्तिरूप उन दर्शन पाया ॥
 दशमें राजा भोज बुझाया । सत्य शब्द पुनि उसे चिह्नाया ॥
 ग्यारहें राजा मुचकुन्दहि तारे । बारहें राजा चन्द्रहास उबारे ॥
 तेरहे चलि वृन्दावन आये । चारि ग्वाल गोपी समझाये ॥
 गुरु रूप पुनि पन्थ चलाये । भौसे हंसा आनि छुड़ाये ॥
 बावन लाख जो जीव उबारा । कलियुग चौथे यहाँ पर धारा ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि 17 जीव मैंने द्वापर में तारे। अब कलयुग का वर्णन करते हुए कह रहे हैं—

प्रथमें गोरखदत्त समझाये। तारक भेद हम तुमहिं बताये ॥
 दुसरे शाह बलख को बोधा। पढ़ै आरबी बहुविधि सोधा ॥
 तिसरे रामानन्द पहुँ आये। गुप्त भेद हम उन्हें सुनाये ॥
 चौथे पीर¹ को परचे दीन्हा। पचये शरण सिकन्दर लीन्हा ॥
 छठे बीरसिंह राजा भयऊ। ताको हम शब्द सुनयऊ ॥
 सतयें कनकसिंघ समझाये। सोलह रानी लोक पठाये ॥
 अठएँ राव भूपाले आये। ग्यारह रानी लोक पठाये ॥
 नौमें रतना बनिन समझाई। जाति अग्रवालिन करत मिठाई ॥
 दशाँ अलिदास धोबी गयऊ। सात जीव परवाना पयऊ ॥
 ग्यारहें राजा भोज समझायी। तिन बहु भक्ति करी चितलायी ॥
 बारहें मुहम्मद कह्यो कुराना। हद्द हुकुम जीव कर माना ॥
 तेरहें नानक से कह्यो उपदेशा। गुप्त भेद का कहा संदेशा ॥
 चौदहें साहु दमोदर समझावा। करामात दै जीव मुक्तावा ॥
 चौदह हंस कलयुग में कीन्हा। गुरु स्वरूप परवाना दीन्हा।
 पाँच लाख हम पहिले तारे। पीछे धर्मनि तुम पगुधारे ॥
 वंशान थाप्यों कियो कडिहारा। लाख ब्यालिस जीव उबारा ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि मैंने कलयुग में गोरखदत्त, मुहम्मद साहिब, नानक देव, रामानन्द, राजा भोज सहित चौदह हंसों को तारा। कहा कि पाँच लाख मैंने पहले तारे, फिर तुम आए। तब मैंने 42 लाख और जीवों को उबारा।

1. पीर—राज गुरु शेख तकी जी।

साहिब ने धर्मदास को कहा कि हर युग में आता हूँ और जीवों को चिताकर अमर लोक ले जाता हूँ। इस तीन लोक में काल जीवों को सता रहा है। यह देख साहिब ने मुझे भेजा।

तीन लोक जिव काल सतावै। ब्रह्मा विष्णु पार न पावै ॥
 सत्य पुरुष तब मोहिं पठावा। जीव उबारन मैं जग आया ॥
 यहि कारण आयो संसारा। जग के जीव मैं करौं उबारा ॥
 जग जीवन को नाम लखावैं। पकड़ हंस सतलोक पठावैं ॥
 हम हैं सत्तलोक के बासी। दास कहाय प्रगट भये कासी ॥
 ना कोई वर्ण नहिं कोई भेषा। सत्य पुरुष के थे हम देशा ॥
 तहँकी रचना अब्दुत भाई। सो मैंने तोहि पहिले सुनाई।
 और तोहि मैं कहूँ समझाई। धर्मदास सुन चित्त लगाई ॥
 धरी देह भावसागर आये। धर्मदास तोहि नाम सुनाये ॥
 कलियुग में काशी चलि आये। जब हमरे तुम दरशन पाये ॥
 तब हम नाम कबीर धराये। काल देख तब रह मुरझाये ॥
 जो कोई हमको चीन्हा भाई। तिनका काल जाल मिट जाई ॥
 देह नहीं अरु दरसै देही। जग ना चीन्हे पुरुष विदेही ॥
 नहीं बाप ना माता जाये। अबगति से हम चल आये ॥
 हेत विदेह देह धर आये। जग जीवों के बन्द छुड़ाये ॥
 नाम गहे तेहि लोक पठाये। बिना नाम जिव कालहि खाये ॥
 गुप्त रहे नाहीं लख पावा। सो मैं जगमें आन चितावा ॥
 चारों युग भवसागर आये। आदि नाम जग टेर सुनाये ॥
 नाम सुने शरणागत आवें। तिनही के हम बंद छुड़ावें ॥

वो कह रहे हैं कि मेरा कोई माता-पिता नहीं है, मैं अविगत से चला आया हूँ। जो मेरे नाम को पकड़ लेता है, वो काल से मुक्त हो जाता है।

कबीर साहिब खुद साहिब थे। हम उनकी वाणी को लेकर चल रहे हैं। अन्य कोई भी उनकी वाणी को पूर्ण रूप से लेने से हिचकेगा। इसके कई कारण हैं। हालांकि हमारा पंथ कबीर-पंथ नहीं है, क्योंकि साहिब ने कभी नहीं कहा कि मुझे मानना, उन्होंने सतगुरु की भक्ति करने को कहा, सतगुरु को ऊँचा स्थान दिया। पर मैं उनकी वाणी को एक सहारे के रूप में ले रहा हूँ। वो भी लेने की ज़रूरत नहीं है, पर इससे मेरी बात को गवाही मिल जाती है। बाकी महात्मा वाणी को पूर्ण रूप में लेने से इसलिए हिचक रहे हैं, क्योंकि साहिब जी पाखण्ड के खिलाफ़ थे और पाखण्ड के हरेक रूप पर उन्होंने चोट की है। ऐसे में बाकीओं को अपनी पोल खुलने का भय है। वे तो बस उतना ही ले रहे हैं, जितने से उनका स्वार्थ सिद्ध हो सके। उनकी वाणी को लेकर कहीं वो तीन लोक को स्थापित कर रहे हैं, कहीं उनकी वाणी को लेकर सगुण-भक्ति को स्थापित कर रहे हैं। बस इनका हाल तो उस भिखारी की तरह है जो दान माँगने के लिए उनका नाम लेकर अक्सर गाता फिरता है—

दान दिये धन न घटे, नदी न घटे नीर।

अपनी आँखों देख ले, यों कथि कहहिं कबीर॥

पर वो कभी भी यह दोहा क्यों बोलेगा—

माँगण मरण समान है, मत माँगो कोई भीख।

माँगण ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥

वो तो बस साहिब के नाम की मोहर लगाकर अपना मतलब निकाल रहा है, लोगों को बुद्ध बना रहा है। वो तो साहिब ने दूसरे अर्थ से कहा है यानी दान देने वाले की इच्छा पर है, माँगने के लिए तो कहा ही नहीं। ऐसे ही सगुण भक्ति के बारे में समझाया, पर यह तो कहा ही नहीं कि सगुण-भक्ति से कल्याण होगा। उन्होंने तो आत्मा के कल्याण के लिए सगुण और निर्गुण दोनों से परे परा-भक्ति का रहस्य दिया।

भक्ति को कबीर साहिब जी ने तीन भागों में बाँटा

सगुण भक्ति निर्गुण भक्ति परा भक्ति
(वर्णनात्मिक शब्द) (धुनात्मिक शब्द) (मुकात्मिक शब्द)

सुन्न गगन में सबद उठत है , सो सब बोल में आवै ।
निः सबदी वह बोलै नाहीं सो सत सबद कहावै ।

—पलटू साहिब जी

सगुण भक्ति करे संसारा । निर्गुण योगेश्वर अनुसार ।
तुम दोनों के पार बताया । मेरो चित्त एको नहीं आया ।
आपने इन दोनों के पार बताया । दादू दयाल जी ने कहा—

कोई सगुण में रीझ रहा , कोई निर्गुण ठहराय ।
अटपट चाल कबीर की , मौसे कही न जाय ॥

जाप मरे अजपा मरे , अनहद भी मर जाय ।
सुरति समानी शब्द में , उसको काल न खाय ॥

अंदर धुनें हैं । कुछ इसे सुरति शब्द अभ्यास भी कह रहे हैं और उनमें खो जाते हैं । कुछ धुनों को ही परमात्मा कह रहे हैं । पर इससे तुरीयातीत की अवस्था से पार नहीं जा सकते हैं । सबका अपना वजूद है । धुनें खत्म हो जाती हैं । फिर यह कौन-सा शब्द हुआ ! यानी धुनात्मिक शब्द भी नहीं है , वर्णनात्मिक शब्द भी नहीं है । साहिब कह रहे हैं—
'सो तो शब्द विदेह ॥' आवाज़ रहित धुन (**Sound less sound**) है वो , क्योंकि — 'दो बिन होय न अधर अवाज़ा ॥'
आवाज़ दो के बिना नहीं होती और जहाँ आवाज़ है , वहाँ माया है ।

हद टप्पे सो औलिया , बे-हद टप्पे सो पीर ।
हद-बेहद दोनों टप्पे , तिसका नाम कबीर ॥

है दयाल द्रोह न वाके

आदमी न बंधन जान पा रहा है, न जिसने बाँधा है, उसे जान पा रहा है। साहिब कह रहे हैं—

काया गढ़ खोजो मोरे भाई। तेरो काल अवधि टर जाई॥

लगता है कि शरीर में शैतानी ताकतें काम कर रही हैं। इंसान ने एक बात ठीक से समझ ली है कि संसार-सागर से पार होने के लिए भक्ति की ज़रूरत है। यह भक्ति को ठीक से नहीं समझ पा रहा है। भक्ति के रहस्य को समझने का प्रयास करें। एक बात समझ में आती है कि बँधे ज़रूर हैं। आत्मा ज़रूर कहीं-न-कहीं बँधी है। अगर साहिब कह रहे हैं—

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

तो इसका मतलब है कि सही में बंधन में हैं। काल के देश में आत्मा का कोई जोर नहीं चल रहा है। उसका कोई बस नहीं चल रहा है। वो व्यथित है। यहाँ आत्मा बंधन में है, कष्ट में है। मुक्ति क्या? मुक्ति का सीधा मतलब है—छुटकारा। जब हम सब मुक्ति की बात करते हैं तो बंधन की तरफ ध्यान देना होगा। कैसा बंधन है? हम सब बंधनों को देख सकते हैं? किसने आत्मा को बाँधा है, क्या यह जाना जा सकता है? हमारी आत्मा कैसी है? अगर ईमानदारी से एक बात देखें तो कुछ-न-कुछ भ्रमांक, कुछ-न-कुछ झूठ दुनिया में रहेगा। भाइयो, देखते हैं कि पंच भौतिक तत्वों में आत्मदेव क्या काम कर रहा है। जिन विषयों पर हम बात कर रहे हैं, आज इन विषयों पर कोई बात नहीं कर रहा है।

किसी को नीचा दिखाना मेरा लक्ष्य नहीं है। मेरा एक मुद्दा है और वो यह कि आदमी को भक्ति-क्षेत्र में समझाकर लाना। अगर गुरु लोगों की जीवनी को देखें तो अखबार, टी.वी. बगैरह में देखने को मिलता है। कोई 2 नम्बर के कार्यों में उलझा है, कोई मजनू बना घूम रहा है, कोई तांत्रित-विद्या से दूसरों को कष्ट पहुँचा रहा है, मार रहा है। हम ये सब सुन रहे हैं। पूरी ईमानदारी से देखें कि वर्तमान में धर्म-गुरु लोग, जो मुक्ति के लिए बात कर रहे हैं, वो कैसे हैं। हमें इन बातों पर गौर करना होगा। आजकल भक्ति का एक चैनल नहीं है। साधना, आस्था आदि कई चैनल हैं, जो 24 घण्टे चलते रहते हैं। 20-20 मिनट की बात का 5-5 लाख रुपये महीने का लेते हैं। मैं खुद साढ़े तीन लाख दे रहा हूँ। हमारा प्रोग्राम रविवार को नहीं आता है। इस तरह एक घण्टे में 4 महात्माओं का दर्शन होता है टी.वी. पर। और 24 घण्टे में 72 महात्मा लोग एक चैनल पर से गुज़रते हैं। इस तरह से करीब-करीब 800 महात्माओं का रोज़ टी.वी. में प्रोग्राम आता है। वे अपना संदेश टी.वी. के माध्यम से दे रहे हैं। नाना मत-मतान्तर बात कर रहे हैं। पहली बात है कि क्या बोल रहे हैं? आप उन्हें देखना कि उनका तौर-तरीका एक-जैसा है। एक-दो किस्से सुनाते हैं। फिर एक-दो दवा के फार्मूले बता देते हैं। दो-तीन व्यायाम बता देते हैं। हालांकि खुद की तोंद बड़ी है, खुद नहीं कर रहा है, पर बताते इसलिए हैं क्योंकि जान रहा है कि ज़रूरी हैं। फिर डाँस भी करना है। हालांकि नहीं हो रहा है। पेट बड़ा होने से नहीं कर पा रहा है; पतला पेट चाहिए, स्टेमिना चाहिए। यह सब नहीं है, पर फिर भी करना है और संगत को भी नचाना है। अब गुरु जी को खुश करना है तो संगत को भी नाचना है। अब गाना भी गाना है। चाहे नहीं आता, क्योंकि होना चाहिए एक-दो। सबका यही स्टाइल है। अगर खामोशी से हरेक का विश्लेषण करेंगे तो सभी ऐसे ही हैं। मैं अलग लग रहा हूँ। जैसे विरोधी जगह-जगह परेशान करते हैं, ऐसे ही वे सब भी परेशान करने की कोशिश करते हैं। वहाँ टी.वी. में प्रोग्राम ही बंद करवा देते हैं। ताकि कोई न सुन पाए। मैं

कोई गालियाँ नहीं बक रहा हूँ, किसी धर्म के खिलाफ़ नहीं बोल रहा हूँ। बात यह है कि मैं उनपर भारी पड़ रहा हूँ। इसलिए बंद करवाते हैं। अब उनके पास धन अधिक है, इसलिए इसमें कामयाब भी हो जाते हैं। धन अधिक क्यों है? क्योंकि पैसे के पीछे ही लगे हुए हैं। मैं पैसे के पीछे नहीं लगा हूँ, इसलिए पैसा नहीं है। मैं अमीर-गरीब सबको समान रूप से लेकर चलता हूँ।

तो अपने गिर्द जो भक्ति का माहौल देख रहे हैं, वो ठीक नहीं लग रहा है। एक दो किस्सा बता देते हैं। फ़लाने ने गदा उठाई और फ़लाने को मार दिया। हमने धारणा बना ली है कि जो सबको एक बार में मार दे, वही हमारा परमात्मा है। आज कोई अपने बेटे को मार दे तो कहेंगे कि ज़ालिम है। और कोई हज़ारों, लाखों को मार दे तो उसके लिए कहते हैं कि परमात्मा है। साहिब कह रहे हैं—

है दयाल द्रोह नहिं वाके, कहहु कौन को मारा ॥

परमात्मा की परिभाषा भी हमने अपने तरीके से बनाई है। पर साहिब कह रहे हैं कि वो दयालु है, किसी को नहीं मारता।

संतो आवै जाय सो माया ॥

है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहूँ गया न आया ॥

का मकसूदन मच्छ कच्छ न होई, शंखासुर न संहारा ॥

है दयाल द्रोह न वाके, कहहु कौन को मारा ॥

अवतार आदि हुए। साहिब कह रहे हैं कि वो कुल मालिक कहीं इनसे परे है। वो इस संसार के जन्म-मरण में नहीं आता है।

वै कर्त्ता नहिं बराह कहाये, धरणि धर्यो नहिं भारा ॥

ई सब काम साहिब के नाहीं, झूठ कहै संसारा ॥

तीसरा अवतार, बराह अवतार। बराह कूर्म को कहते हैं। पृथ्वी का भार उठाया था। ये सब काम साहिब के नहीं हैं, दुनिया झूठ बोलती है।

खंभ फोड़ि जो बाहर होई, ताहि पतीजे सब कोई ॥

हरणाकुश नख वोद्र बिदारा, सो कर्त्ता नहिं होई ॥

साहिब कह रहे हैं कि यह सब निरंजन का खेल था।

बावन रूप न बलि को जाँचे, जो जाँचे सो माया ॥

बिना विवेक सकल जग भरमे, माया जग भरमाया ॥

बावन अवतार में बलि से धोखा हुआ। वो परमात्मा तो दाता है। छह चक्रवर्ती राजाओं में बलि का नाम भी आता है। पर आधा पाँव ज़मीन न दे पाने के कारण पाताल में जाना पड़ा।

हमारा भगवान सब कुछ कर लेता है। यह सब निरंजन का खेल है। हमने अपना परमात्मा ऐसा बनाया हुआ है जो छल भी कर लेता है, मार-काट भी कर लेता है। दुनिया गुरु भी तो ऐसा ही चाहती है जो कुछ न कहे, पाप भी करने दे, झूठ भी बोलने दे, छल भी करने दे, हिंसा भी करने दे और भक्ति भी। पर भक्ति में इन चीज़ों की जगह नहीं है, क्योंकि कुल मालिक इन कार्यों को बुरा मानता है।

परशुराम क्षत्री नहिं मारे, ई छल माया कीन्हा ॥

सतगुरु भेद भक्ति नहिं जाने, जीवहि मिथ्या दीन्हा ॥

परशुराम जी ने क्षत्रियों का नाश कर दिया। क्षत्रियों को मारना शुरू किया तो क्षत्रियों ने धर्म ही बदलना शुरू कर दिया। कुछ लुहार बन गये, कुछ मल्लाह बन गये, कुछ तरखान बन गये। वो सब परशुराम जी के डर से क्षत्रिय चोला छोड़कर बाकी में चले गये। एक पूरी बिरादरी को खत्म करना चाहा था। यह था भगवान! नहीं, यह माया है। चलो, एक की गलती थी, पर पूरी बिरादरी को सज़ा क्यों? किसी धर्म या जाति का कोई एक आदमी गलती करे और पूरे धर्म को, पूरी जाति को मिटाना कैसा रहेगा! यह तो पाप है। तो कह रहे हैं—

सिरजनहार न व्याही सीता, जल पषाण नहिं बन्धा ॥

वै रघुनाथ एक कै सुमिरै, जो सुमिरै सो अँधा ॥

वो प्रभु यह काम नहीं किया। इसका मतलब है कि धरती पर रहने वाले लोग एक शैतानी ताक़त के हाथ में हैं।

गोपी ग्वाल न गोकुल आया, कर्ते कंस न मारा ॥

है मेहरबान सबहिन को साहिब, नहीं जीता नहीं हारा ॥

वो तो सबपर मेहरबान है, किसी को नहीं मारता। न किसी से जीतता है, न हारता है। पर कलयुग के जीव की मान्यताएँ अलग हैं।

एक बार मैं मैस में था। 4 जवान मेरे पास आने थे। 2 ही पहुँचे। 2 रामायण सीरियल देखने गये हुए थे। उन्होंने लेट आना था। जो दो आए थे, वे आपस में बात कर रहे थे कि आज रामायण में मज़ा नहीं आया। दूसरे ने कहा—हाँ, आज ज्ञान की बात थी, मार-काट नहीं थी।

यानी हमारी मान्यता ही ऐसी हो गयी है कि मार-काट न हो तो मज़ा नहीं आता है।

बाद में उस सीरियल में जो राम बना था, लोग उसकी पूजा करने लगे, उसकी आरती उतारने लगे। जो सीता बनी थी, उसकी भी माइयाँ पूजा करने लगीं। जो हनुमान बना था, उसकी भी पूजा होने लगी। हालांकि वे असली जीवन में हनुमान जैसा नहीं है। बाद में सीता और लक्ष्मण का प्रेम शुरू हो गया। यह बात अख़बार में आई। यानी जो सीता का रोल कर रही थी और जो लक्ष्मण का रोल कर रहा था, उनका प्रेम शुरू हो गया था।

इस तरह हमारी भक्ति मार-काट, नाचने-गाने आदि तक ही सीमित होकर रह गयी है। आत्मज्ञान की बात रही ही नहीं है। अज्ञानवश इंसान ने मार-काट को भक्ति मान लिया है। साहिब कह रहे हैं—

आत्मज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी ॥

भक्ति का लक्ष्य है—मुक्ति। कुछ तो थोड़ा यत्न कर रहे हैं। जहाँ भी मुक्ति की बात आती है तो बंधन को देखना होगा। अगर चिंतन करते हैं तो सही में हम बँधे हुए हैं।

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

हम देखते हैं कि कैसे बँधे हैं! क्या बँधे भी हैं या नहीं? इस विषय पर कोई बात नहीं कर रहा है। कभी-कभी मैं भी चैनल पर देख लेता हूँ। मेरा प्रोग्राम आने वाला होता है तो देख रहा होता हूँ। कभी नहीं भी आता है और दूसरों का आने लग जाता है। तो मौका मिल जाता है देखने का। तो जब देखता हूँ तो हैरानी होती है; भक्ति वाला कोई मामला नज़र ही नहीं आता है।

महात्मा लोग श्रृंगार किये रहते हैं। महात्मा तो अपना हुलिया बिगाड़ लेता है ताकि कोई आकर्षित न हो। क्योंकि वो माया को त्याग चुका है। आत्मज्ञान की बात नहीं हो रही है। भक्ति का लक्ष्य है—आत्मज्ञान। भक्ति का लक्ष्य है—मुक्ति। यथार्थ भक्ति कोई नहीं बता रहा है। पूरा समाज भटका हुआ है। कोई भूत-प्रेतों में, कोई आडंबरो में। जो भक्ति बता रहे हैं, वो कौन हैं? मैं निंदा नहीं कर रहा हूँ।

निंदा निंदा सब कहें, निंदा न जाने कोय।

जैसे को तैसा कहे, सो तो निंदा न होय॥

चुपके से उनकी जीवनी देखना तो पता चलेगा कि सच में उनके पास आत्मज्ञान नहीं है। वो पैसे के लिए काम कर रहे हैं। मैं पेट पालने वाला काम 40 साल पहले फौज में करके आया हूँ। मैं यह पैसे के लिए नहीं कर रहा हूँ। वो यह पेशा बनाए हुए हैं। उन्हें धन कमाना है। एक मास्टर था। उन्होंने एक शास्त्री जी से पूछा कि आप मास्टर की नौकरी छोड़कर शास्त्री जी क्यों बन गये? उसने कहा कि मेरे चाचे का लड़का अनपढ़ है। वो शास्त्री का काम करता है और महीने में दो-ढाई लाख रुपये कमाता है। तो मैंने सोचा कि मास्टर की नौकरी क्या करनी है; यह पेशा ठीक है।

यानी लोग धर्म का उपयोग पैसा कमाने के लिए कर रहे हैं। पता चलता है कि धन के लिए ही लोग यह काम कर रहे हैं। यह धर्म में बहुत

बड़ी समस्या आ गयी है। एक धर्म की समस्या नहीं है। यह सब धर्मों की समस्या है। कोई तलवार चलाने की ट्रेनिंग दे रहा है, कोई बंदूक चलाने की ट्रेनिंग दे रहा है, कोई बम बनाने की ट्रेनिंग दे रहा है। सच मानना, उग्रवाद का जन्म ही धर्म से होता है। चाहे किसी भी धर्म में हो, बीज धर्म स्थान ही है। तभी तो बुल्लेशाह कह रहे हैं—

ठाकुर द्वारे ठग हैं बसदे, तीर्था बिच धावड़ी।

बिच मसीदां पोस्ती बसदे, आशिक रहन अलग॥

अखबारों में पढ़ रहे हैं कि देश के विभिन्न स्थानों पर बम विस्फोट हो रहे हैं और तहक्रीकात में धर्म-स्थानों का नाम आ रहा है। यानी धर्म स्थानों में खूँखार लोग बस रहे हैं। यह एक धर्म की समस्या नहीं है। एक धर्म को दोषी नहीं ठहरा सकते हैं। यह सभी धर्मों की समस्या है। यह कट्टरवाद हरेक धर्म में आ गया है। आज कोई बेइमान हुआ है तो हिंदू या मुसलमान नहीं हुआ है। यह दोष सभी में आ गया है। जहाँ हिंसा है, वहाँ ज्ञान नहीं हो सकता है।

मुझपर जो हमला किया गया, 5 हजार लोग इकट्ठा होकर आए, वो भी तो धर्म का ही हमला था। मैं फौज से रिटायर होकर आया। जो हमला किया, बड़ी ही प्लैनिंग से किया था। तीनों तरफ से घेरा था। यानी कोई बचकर न जा पाए। मुझे डर नहीं था। मैं चाहता तो पाँच मिनट में उन्हें निचौड़कर फेंक देना था। क्योंकि वो पाँच हजार थे। संगत को पहले ही पता चल गया था, इसलिए संगत बहुत हो गयी थी। पर बाद में समाज ने पूछना था कि धर्म की बात करने आए थे, क्या किया! पर वो जो 3 कि.मी. चलकर आए थे, वो कैसे आए थे? उनके पीछे ताकत थी। ताकत राजनीति की थी। सब शामिल थे। इसलिए कोई नहीं पकड़ा गया आज तक।

आप सोचें कि किस धर्म के लोग थे! पर कोई एक धर्म खराब नहीं है। हरेक धर्म की यही हालत हो गयी है। भ्रष्ट लोगों ने राजनीति में कब्जा कर लिया है। बूथकेपचरिंग वाले आ गये हैं। अच्छे पंडितों को

भगाकर अषिष्ट लोग आ गये हैं; अच्छे डाक्टरों को भगा दिया गया है और लालची आ गये हैं। पहले लीडरों के साथ नेक इंसान चलते थे, पर अब ऐसा, नहीं हैं।

तो इंसान ने मार-काट, छल-कपट, आडंबर आदि को ही भक्ति मान लिया है। उसे क्या दोष देना! उसे बताया गया है कि भक्ति यही है। सिनक निकल आए तो कहते हैं कि यही पीर है। पीर बाबा बहुत हो गये जम्मू-कश्मीर में। यह कहाँ से आया पीर बाबा? कहीं कोई सड़क किनारे पीपल के पेड़ के पास झण्डा गाड़ देता है और लिख देता है-पीर बाबा। थोड़े दिन बाद वो वहाँ कमरा बना देता है; ढोल पीटता है। भोली-भाली पब्लिक आती है, पैसा चढ़ाती है; कोई कहता है कि पुत्र दिया, कोई कहता है कि फ़लानी बीमारी ठीक हुई। जब सड़क विभाग वाले आते हैं तो वो आवारा गुण्डा एम.एल.ए. को फ़ोन करता है। एम.एल.ए. आकर कहता है कि यह धर्म का काम है, रहने दो। उसे वोट चाहिए।

अब भोली जनता मन्त्रों माँगती है। मेरा किसी से राग-द्वेष (विरोध) नहीं है। हमारे धर्म में भक्ति-पथ विचलित हो गया है। कभी कोई नेशनल हाइवे के साथ ज़मीन मलकर वहाँ सरोवर बना देता है। मीडिया को पैसा देते हैं; वो प्रचार करती है कि चमत्कारी सरोवर। बस, फिर क्या है, देश के कोने-कोने से लोग आने लगते हैं। क्या कारण? अज्ञान।

नौग्राम की बात है। वहाँ नाग देवता निकला। 4-5 सफ़ेद नाग थे और एक मेंढक था। दुनिया के अन्दर 8 हज़ार किस्म के साँप हैं और अकेले भारत में 5 हज़ार 200 किस्म के साँप हैं। 80-90 प्रतिशत साँपों में ज़हर नहीं होता है। कभी काले साँप में भी ज़हर नहीं होता है। सबमें ज़हर नहीं है। वो झाड़-फूँक वाला कहता है कि उसने ठीक कर दिया है। इंसान अधिकांशता मरता नहीं है। यदि काटे तो हास्पिटल लेकर जाओ, झाड़-फूँक वाले के पास नहीं।

तो हमारी सोच ही ऐसी बनी हुई है। अब बाबा सुरगल। सवाल उठा कि पीर बाबा का जन्म कहाँ हुआ? पर कई ढोल पीटने वाले

शराबियों को मैं जानता हूँ। वे चरित्र साइड से भी ठीक नहीं हैं। आने-जाने वाले लोग पैसा देते हैं। भ्रमित लोग हर वीरवार को प्रसाद चढ़ाते हैं। एक बार मैंने हेडमास्टर राम लाल को ड्यूटी दी; कहा कि पीर बाबा के स्थान पर जाओ, पूरा दिन वहाँ रहना। आप केवल यह देखना कि हिंदू कितने आते हैं और मुसलमान कितने आते हैं। आप मानेंगे, 5 प्रतिशत मुसलमान थे और 95 प्रतिशत हिंदू लोग थे। यानी हम कहीं अधिक भटके हुए हैं।

तो नौग्राम की तरफ चलते हैं। वहाँ मेंढक भी था और साँप भी। साँप सफ़ेद थे। कोई पैसा तो कोई नारियल चढ़ा रहा था। अब बात क्या थी? साँप का अच्छा भोजन तो मेंढक और चूहा है। क्योंकि वो निगलकर खाता है और ये दोनों आसानी से निगल लिए जाते हैं; हड्डियाँ कम हैं, साफ़ हैं। साँप छिपकली की तरह निगलकर खाता है। अब मेंढक जो था, वो बड़ा था; साँप उसे निगल नहीं सकता था और मेंढक भी साँप का कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए दोनों बैठे रहे। इसमें कौन-सा जादू था! टेक्निकल बात थी कि साँप मेंढक का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था और मेंढक भी साँप का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। कभी आप देखना कि कुत्ता और बिल्ली भी एक-दूसरे से डरते हैं; कुत्ता और बंदर भी एक-दूसरे से डरते हैं। कुत्ता बिल्ली के लिए सोचता है कि ऐसे ही काटेगी। हाथों को पकड़ा तो मुँह से काटेगी, मुँह से पकड़ा तो हाथों से काटेगी।

तो लोग जुट जाते हैं। मैटाडोर वाले भी कहते हैं कि पहुँचो, सब काम हो जायेंगे। उनका अपना स्वार्थ है। उनकी गाड़ियाँ भरी रहेंगी। जो वहाँ रेहड़ी लगाए हुए थे, वो ऐसे ही कहने लगे कि आँखें ठीक हो गयीं, टाँगें ठीक हो गयीं, पुत्र मिल गया बगैरह-बगैरह। यह नाटक इस तरह दो महीने चला। जब बाद में पता चला तो उठाकर भाग गये। नौग्राम के कुछ ठकुरे थे। वो उनके पाले हुए साँप थे।

तो कहने का भाव है कि पाखण्डियों ने समाज के भोले-भाले लोगों को भटका दिया, अन्तर्मुखी न करके बहिर्मुखी कर दिया। शास्त्र

तो कह रहे हैं कि वो परमात्मा अन्दर में है। साहिब कह रहे हैं—

मौको कहाँ ढूँढ़े रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में॥

तो वर्तमान में जो देख रहे हैं, कहीं दूर से भी उसमें भक्ति नज़र नहीं आ रही है। दो तरह की भक्तियाँ सबको नज़र आ रही हैं—सगुण और निर्गुण। निर्गुण में अन्दर ही परमात्मा है, यह कहा जा रहा है। पर जब हम निर्गुण भक्ति के प्रचारकों की तरफ देखते हैं तो वे छल कर रहे हैं, पाप कर रहे हैं। पर निर्गुण-भक्ति भी निरंजन तक की बात ही कर रही है। फिर क्या देख रहे हैं कि वे बाद में अपने बच्चों को ही गद्दियाँ देकर जा रहे हैं। संतों ने यह काम नहीं किया। निर्गुण-भक्ति पाँच मुद्राओं के गिर्द घूम रही है। पर इन चीज़ों से मुक्ति नहीं मिलेगी। हमें देखना होगा कि बंधन क्या है; जानना होगा कि कौन-सी चीज़ें बंधन में डाले हुए हैं।

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

पर हम बंधन को नहीं जान रहे हैं। हम भक्ति को ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं। हमने भक्ति को मेला समझ लिया है, जहाँ नाच-गाना भी होता है, चुटकुले भी होते हैं और हमें भी नाचने का मौका मिल जाता है। इस तरह भक्ति का स्तर बड़ा नीचे आ गया है। जब भी मुक्ति की बात करते हैं तो आत्मा का मोक्ष चाहिए। आपका शरीर तो बंधन में नहीं है। वो तो जहाँ भी चाहे, आ-जा सकता है। हम किसी धर्म के खिलाफ़ नहीं हैं। हम एक जगह पर अलग हैं कि वे निरंजन तक की बात बोल रहे हैं। वैष्णव वाले भी कह रहे हैं कि माँस नहीं खाओ, शराब नहीं पीओ। हम केवल इस बिंदू पर अलग हैं कि कह रहे हैं कि परमात्मा कहीं आगे है।

आत्मा अविनाशी तत्व है। यह शरीर तो एक धोखा है।

यह पिंजड़ा नहीं तेरा हंसा, यह पिंजड़ा नहीं तेरा॥

शरीर का कोई भी गुण आत्मा से मेल नहीं खा रहा है। वासुदेव ने कहा—हे अर्जुन! तेरे और मेरे अनेक जन्म हो चुके हैं; अन्तर केवल इतना है कि तुझे वे सब याद नहीं हैं जबकि मुझे वे सब याद हैं। जैसे पुराने

वस्त्रों को त्यागकर नवीन वस्त्र धारण करते हैं, ऐसे ही आत्मा एक शरीर को त्यागकर दूसरे नवीन शरीर को धारण करती है।

यह आत्मा तो स्वावलंबी है, पर शरीर में यह गुण मैच नहीं हो रहे हैं। भोजन न मिले तो शरीर खत्म हो जायेगा। पर आत्मा पंच-तत्त्वों से परे है। यह बंधन में है। बंधन दिखाता हूँ। इस धरती पर कोई भी आदमी यह नहीं जानता है कि उसकी आत्मा पहले किस शरीर में थी; उसे कहाँ जाना है। किसी को नहीं पता है कि मैं क्या हूँ। यह नहीं पता है कि बंधन क्या है। यह भी नहीं जान पा रहा है कि इस आत्मा को मन-माया नाना शरीरों में भेज रहे हैं। आत्मा नाना योनियों को धारण कर रही है। गंदी-गंदी योनियों में आत्मा जा रही है। यह कष्ट है। बार-बार जन्म लेना कष्टकारी है। आत्मा का कभी जन्म नहीं होता। फिर यह कौन जन्म ले रहा है? आत्मा कहीं गुम है शरीर में। हम व्यवहार में भी देखते हैं तो सब शरीर के लिए ही जी रहे हैं।

जीवन पाँच पच्चीसी लागी। काम क्रोध मद लोभ में पागी ॥

कौन-सी ताकत है, जो आत्मा का पता नहीं चलने दे रही है? इंसान में आत्मा का गुण नहीं मिल रहा है। काम, क्रोध आदि सबमें मिल रहा है। मन, इच्छा आदि क्या है? इस आत्मा का जन्म नहीं होता, मृत्यु नहीं होती। आत्मा का कोई रिश्ता-नाता भी नहीं है। पर जब मानव-बिरादरी की तरफ देखते हैं तो कोई भी आत्म-जीवन नहीं जी रहा है। आत्मा में काम, क्रोध नहीं हैं तो काया में काम, क्रोध आदि कहाँ से आ गये? आत्मा आनन्दमयी है तो जीव दुखी क्यों है? आत्मा का कोई चिह्न नहीं मिल रहा है। यह बंधन में है। कहाँ गयी है आत्मा? जो अपने को महसूस कर रहे हैं कि फ़लाना हूँ, यह धोखा है। यह आप नहीं हैं। क्योंकि जो व्यक्तित्व महसूस कर रहे हैं, यह आत्मा नहीं है, मन है। आत्मा तो निर्मल है। पर इससे सभी काम करवाए जा रहे हैं। इसका मतलब है कि कोई शातिर ताकत अन्दर बैठी है। उसकी हुकूमत चल रही है। वो नचाए जा रही है। तभी कह रहे हैं—

मनहिं निरंजन सबै नचाए ॥

इच्छाएँ आत्मा की वृत्ति नहीं हैं। हरेक शारीरिक जीवन जिए जा रहा है।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे।
दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए।
इस दिल का हुजरा साफ कर, जाना के आने के लिए।
एक दिल लाखों तमन्ना, उस पर भी ज्यादा हवस।
फिर ठिकाना है कहाँ, उसको बिठाने के लिए ॥

जहाँ सफ़ाई की ज़रूरत है, वहाँ आदमी सफ़ाई नहीं कर रहा है। कौन है, जो हमें कुंद किये हुए है। इसमें काम, क्रोध, लोभ भी हैं। आत्मा कहाँ फँसी है? आत्मा चोरी में, गंदे कामों में शामिल है। आत्मा उलझी है। वो ताक़त पता नहीं चलने दे रही है।

काया गढ़ खोजो मेरे भाई। तेरी काल अवध टर जाई ॥

साहिब ने आकर आत्मज्ञान की बात कही।

आत्म ज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी ॥

आत्मा गुम है। हरेक काम में शामिल हो रही है।

नाम-दान इसी क्रिया का नाम है। क्योंकि कोई भी अपनी ताक़त से मन को जीत नहीं सकता है। जब गुरु नाम दे देता है तो आत्मा को एकाग्र कर देता है। जितने भी काम कर रहे हैं, ध्यान चाहिए। मन इसी को नचा रहा है। कोई भी अपनी ताक़त से इसे जीत नहीं सकता है। नाम के बाद आत्मा एकाग्र हो गयी तो फिर मन के आदेश को नहीं मानती है। इसलिए मैंने अपने लोगों को दुनिया से निराला कर दिया।

काग पलट हंसा कर दीना, करत न लागी बार ॥

नाम-प्राप्ति के बाद एक सत्ता आ जाती है, जो मदद करती चलती है। जहाँ भूल होने लगती है, वो सतर्क करती है। फिर आप संभल जाते हैं; मन की तरंगों में बहकर पाप-कर्मों की ओर नहीं जा पाते हैं। तभी तो मैं कहता हूँ कि जो वस्तु मेरे पास है, वो ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं

है। यह कोई घमण्ड से नहीं बोल रहा हूँ; यह भरोसे से बोल रहा हूँ। नाम-प्राप्ति के बाद परमात्म-सत्ता आपमें रहने लगती है। यह कोई मेहरबानी नहीं है। वो प्रभु है ही आपमें।

प्रीतम को पतिया लिखूँ, जो कहूँ बसे विदेश।

तन में मन में नयन में, वाको कौन अँदेश॥

पहले भी कहीं एक्टिव थी, पर नाम के समय हाज़िर कर देता है गुरु। मेरे हरेक नामी को लगता होगा कि उसके साथ में कोई ताक़त काम कर रही है। परछाई तो अँधेरे में साथ छोड़ सकती है, पर साहिब की ताक़त साथ नहीं छोड़ सकती है। वो 24 घण्टे सुरक्षा करती है।



चल हंसा सतलोक, छोड़ो यह संसारा।

यह संसार काल है राजा, कर्म का जाल पसारा॥

जाके हृदय साँच है ताके हृदय आप

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥

क्या यह सत्य सच में बहुत बड़ा तप है? इसी को गोस्वामी जी कह रहे हैं—

सत्य समान धर्म नहीं आना। आगम निगम पुराण बखाना॥

सत्य के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है। इसमें कुछ वज्रन है। वेद-शास्त्र भी कह रहे हैं। वेदों को उद्घोष भी है—**सत्यमेव जयते॥** परमात्मा को भी सत्य कहा गया। सत्य ही परमात्मा है। साहिब भी कह रहे हैं —

जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥

क्या स्वरूप है सत्य का? कैसा है सत्य? अगर सत्य ही सबसे बड़ी तपस्या है तो क्यों न इसे अपनाएँ! जब सत्य की ओर गहराई में चलते जायेंगे तो सीधा परमात्मा में प्रवेश कर लेंगे, क्योंकि यही सत्य की पराकाष्ठा है। इसकी जैसी व्याख्या है, उसके अनुसार इसमें केवल सत्य बोलना ही नहीं है, बल्कि सत्य समाधि, सत्य आहार, सत्य आचरण, सत्य संभाषणम् आदि भी आते हैं। ये सत्य के प्रमुख अंग हैं। कभी नकारात्मक सोच आती है तो यह सत्य नहीं है। जो कल्पनाएँ करते हैं, यह भी सत्य नहीं है। जो वर्तमान है, वो सत्य है। इसी को गीता में

वासुदेव ने कहा—हे अर्जुन! जो व्यतीत हो चुका, वो निरर्थक है; उसमें सार नहीं। भविष्य अनिश्चित है, इसलिए वो भी सत्य नहीं; पर वर्तमान सत्य है। इसलिए वर्तमान में जिओ। इस शब्द के अन्दर कितना बड़ा रहस्य, कितना बड़ा ज्ञान समाहित है! जब सत्य वर्तमान में जी लेंगे तो आत्मा के नजदीक पहुँच जायेंगे।

यदि अतीत का चिंतन कर रहे हैं तो अतीत में चले गये, यदि भविष्य की कल्पना की तो भविष्य में चले गये और वर्तमान में रहना है तो समझो—न पीछे की बात सोचनी, न आगे की। वर्तमान में जीने का भाव है कि संकल्प-विकल्प से दूर हो जाना। जो चिंतन है, वो मन है। अतीत के परिपेक्ष्य में भ्रमण हो जायेगा तो उन्हीं स्थानों में पहुँच जायेंगे, जहाँ की कल्पना करेंगे। यदि भविष्य की कल्पना की तो वहीं पहुँच जायेंगे। वर्तमान में जीने का मतलब है कि पूर्ण एकाग्र.....महज वर्तमान। कोई भी कल्पना नहीं। तब आत्म-साक्षात्कार हो जायेगा। बहुत बड़ा आश्चर्य है दुनिया में कि इतना बुद्धिजीवी जीव अध्यात्म समझने में पीछे रह गया है। आश्चर्य है कि इतना समय क्यों लगा दिया है! धर्म-शास्त्र इंगित कर रहे हैं कि परमात्मा तुझमें है। इस मनुष्य ने इस तथ्य को जानने में इतना समय क्यों लगा दिया!

प्रीतम को पतिया लिखूँ, जो कहूँ बसे विदेश ॥

फिर इंसान ने यह जानने में बहुत समय लगा दिया परमात्मा हमसे दूर क्यों है। घोर आश्चर्य है कि सभी जानते हैं कि बंधन में हैं; फिर भी बंधन को जानने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। कैसा बंधन है? क्यों बँधे हैं? इन प्रश्नों की तरफ कोई गहराई में नहीं जा रहा है। वर्तमान में नहीं जी रहा है। वर्तमान में रहने से हम आत्म-साक्षात्कार कैसे कर लेंगे? जैसे समुद्र में लहरें उठ रही हैं। समुद्र की वृत्ति नहीं है, पर वायु के प्रवेग से उसमें लहरें उठ रही हैं। वो तो अपनी जगह स्थित है। इस तरह आत्मा स्थिर है। संकल्प-विकल्प रूपी लहरें उठ रही हैं। यह मन की वृत्ति है, आत्मा की नहीं।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

यह संसार केवल हमारा चिंतन है। रामजी ने जब वशिष्ठ मुनि से कहा कि यह संसार दुखों का सागर है तो वशिष्ठ मुनि ने कहा—हे राम! किस संसार की बात कर रहे हो? संसार तो कभी हुआ ही नहीं है। राम जी ने कहा—कैसी आश्चर्य की बात कर रहे हैं! ये माता-पिता, ये भाई-बंधु, ये आकाश, ये धरती आदि फिर क्या हैं? वशिष्ठ जी ने कहा—हे राम! यह तुम्हारे मन का चिंतन है। वस्तुतः यह संसार हुआ ही नहीं है। इसका सृजन तुम्हारे चिंतन से शुरू होता है। तुम मन में चिंतन कर रहे हो तो संसार का अस्तित्व है, संसार से नाता है। साहिब ने कहा—

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

हम वर्तमान में क्यों नहीं जी रहे हैं? यदि जिएँ तो आत्मा के नज़दीक पहुँच जायेंगे। हम आत्मा से दूर क्यों हैं? यदि उसके पास नहीं पहुँच पा रहे हैं तो कोई है जो हमें पहुँचने नहीं दे रहा है। मनुष्य चिंतन नहीं कर रहा है। हम आत्म-कल्याण के लिए जिन सूत्रों को अपना रहे हैं, क्या उनसे प्राप्त कर सकते हैं? क्या सूत्र हैं? जिस वर्तमान की बात गीता में कह रहे हैं, उसी को साहिब इस तरह कह रहे हैं—

सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय ॥

मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहू न जाय ॥

सबसे पहले आत्मा के स्वरूप को समझने की कोशिश करते हैं। सबमें एक समान है आत्मा। कैसी है आत्मा? किसने बाँधा हुआ है? क्यों बाँध गयी यह? आत्मा का बंधनों से क्या नाता है? क्या यह बाँधी जा सकती है? इन बातों पर चिंतन करते हैं।

एक बात अच्छी है कि सब मुक्ति चाहते हैं। यानी किसी-न-किसी भाव से सब मान चुके हैं कि बंधन में हैं। इतना मान लेना बहुत बड़ी बात है? क्या यथार्थ में बंधन में हैं? बंधन किस तरह के हैं? हमें बाँधने वाला कौन है? सबसे बड़ा आश्चर्य है कि आत्मा बंधन में है।

पराधीन सुख सपनेहु नाहीं ॥

जो भी पराधीन है, सुखी नहीं हो सकता है। किसी भी प्राणी को बंधन में नहीं रखना चाहिए। यह अत्याचार है। कुछ पक्षी को पिंजड़े में रखकर अच्छी खुराक देते हैं; सोचते हैं कि यह बड़ा खुश है। नहीं, आप ही कल्पना करें कि किसी कमरे में आपको बंद करके खूब दूध, मलाई, मिठाइयाँ, हलवा, पूड़ी बगैरह दें तो कैसा रहेगा! आप इतना कुछ मिलने पर भी संतुष्ट नहीं हो सकते हो। निकलना चाहोगे।

इस तरह आत्मा भी बाँधी गयी है। संसार में कितनी भी सुविधाएँ मिल जाएँ, पर संतुष्टि नहीं मिल सकती है। अच्छा, कौन है, जिसने बंधन में रखा? क्या कारण है कि उसने बंधन में रखा आत्मा को? पहले देखते हैं कि यथार्थ में कैसी है आत्मा? जब भी छुटकारे की बात करते हैं तो पहले देखना होगा कि बंधी कैसे है। जैसा शास्त्राचारों ने वर्णन किया है कि आत्मा अविनाशी है, आनन्दमयी है, पंच भौतिक तत्वों से परे है। यानी पंच भौतिक तत्व इसके नज़दीक नहीं पहुँच सकते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि आदि तत्वों से यह नहीं बनी है। संसार में जितनी भी चीज़ें हैं, पंच भौतिक तत्वों से बनी हैं। सभी तत्वों का विनाश हो जाता है। हमारी आत्मा इनसे नहीं बनी है। ये आत्मा को प्रभावित नहीं कर सकते हैं। इसका मतलब है कि यह सुरक्षित चीज़ है; इसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है; किसी देश, काल, अवस्था में इसका नाश नहीं हो सकता है। यह कभी न मिटने वाली चीज़ है। हम इतनी लाजवाब चीज़ हैं कि कभी न मिटेंगे। हमारी आत्मा बेहद मजबूत है। हमारी आत्मा सुरक्षित है। ऐसी क्यों है आत्मा? क्योंकि यह परमात्मा का अंश है। जो भी किसी का अंश है, अंशी के वजूद से निकलता है। इसलिए आप अंश हैं। गोस्वामी जी कह रहे हैं—

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखरासी ॥

आत्मा परमात्मा का अंश है। इसलिए यह चीज़ इसमें आ गयी है। जैसे बकरी का बच्चा बकरी की तरह ही है, मनुष्य का बच्चा मनुष्य

की तरह ही है। क्योंकि उसी का अंश है। इसी तरह आत्मा परमात्मा का अंश होने से ये चीज़ें इसमें प्रविष्ट हैं। फिर यह आनन्दमयी है। हमेशा आनन्द। यह है ही आनन्दमयी। आनन्द से परिपूर्ण है। यह क्या है आनन्द? आनन्द आया कहाँ से? परमात्मा को आनन्द का सागर भी कहा गया है। आनन्द और सत्य एक दूसरे के पूरक हैं। फिर परमानन्द कहा। आनन्द का भाव है कि जहाँ फ़िक्र न हो, जहाँ विकार न हों, जहाँ लोभ न हो, काम न हो, क्रोध न हो, जिसमें भय न हो—ऐसी अवस्था। और उस अवस्था को आनन्दमयी कहा गया है, जिसमें हमेशा आनन्द रहे। पर कुछ खाकर कहते हैं कि मज़ा आ गया। पर मज़ा आया और चला भी गया। कभी खुशबू लेकर भी कहते हैं कि मज़ा आ गया। मज़ा आया और चला भी गया। फिर थोड़ी देर बाद मज़े वाली चीज़ से ऊब भी होने लगती है। इसका मतलब कि यह स्थायी नहीं हुआ। आत्मा आनन्दमयी है, क्योंकि परमात्मा का अंश होने से यह गुण भी समाविष्ट है। पर वर्तमान में यह आनन्द कहाँ चला गया है? दुनिया की तरफ देखते हैं तो लोग व्यथित लगते हैं, परेशान लगते हैं। यदि आनन्दमयी है तो कहाँ चला गया है? यह कभी ख़त्म नहीं होने वाला है। पर आंतरिक विकारों के कारण अनुभूति नहीं हो रही है। पर कभी होती भी है।

एक फूलों की टोकरी रखें। उसकी महक होगी। अब साथ में एक विष्ठा की भी रख दें तो खुशबू भी घुटनमय लगेगी। हालांकि फूल तो हैं, पर विष्ठा के संग से दूषित लगती है। इस तरह आत्मा में आनन्द तो है ही, पर मन के संग से नहीं मिल रहा है। जो भी मिल रहा है। जगत के पदार्थों में मिल रहा है। पर वास्तव में यह आनन्द वहाँ नहीं है; यह आत्मा का है। इस आत्मा के आनन्द का ग़लत इस्तेमाल हो रहा है। कभी बच्चों को देख आनन्द मिलता है। जिस भी चीज़ में पूरा ध्यान रहेगा, उसी से आनन्द मिलने लगेगा। इसका मतलब है कि ध्यान आनन्दमय है। जिससे प्रेम रखते हैं, उसमें आनन्द मिलता है। जैसे ही ध्यान उसमें से हटेगा तो आनन्द भी ख़त्म हो जायेगा। यदि कोई गुस्सा कर रहा है तो उसे

गुस्से में आनन्द मिल रहा है, यदि कोई अपराध कर रहा है तो उसे अपराध में आनन्द मिल रहा है, यदि कोई झूठ बोल रहा है तो उसे झूठ में आनन्द आ रहा है।

कबीर मन तो एक है, भावे जहाँ लगाय।

भावे गुरु की भक्ति कर, भावे विषय कमाय॥

पर यह स्थिर नहीं है। कभी देखते हैं कि किसी से मित्रता होती है और कहते हैं कि तेरे बिना जी नहीं सकता हूँ। पर अगले ही पल नफ़रत हो जाती है। कभी ग्रहण करने योग्य चीज़ें त्याज्य हो जाती हैं। ध्यान हट गया। यह ध्यान समरूप नहीं रहता है। इसलिए कल्पनाएँ अलग हैं। सबकी वृत्तियाँ भी एक नहीं मिल रही हैं। इसके दो कारण हैं—

1. संकल्प अलग-2 हैं
2. परिपेक्ष्य अलग हैं

हमारे संकल्प अलग क्यों हैं? हमारा व्यक्तित्व दो चीज़ों से बना है। हमारे संपर्क से बना और वातावरण से बना। इसलिए हमारा व्यक्तित्व अलग है। उदाहरण के लिए गाँव में रहने वाला गाँव की गलियों में घूम रहा है; खेतों में ध्यान है। इस तरह उसका किसानमय व्यक्तित्व बना। यह आत्मा नहीं थी। एक फौजी का व्यक्तित्व अलग होता है। उसे शरीर को स्वस्थ रखना है; लड़ाई करनी पड़ सकती है। उसकी सोच ही अलग तरह की होगी। आत्मा एक होने के बाद भी व्यक्तित्व अलग है। इसलिए न तो शरीर आत्मा है और न व्यक्तित्व। व्यक्तित्व में दोष हैं। हरेक का अलग व्यक्तित्व है। कोई उतावला है, कोई शांत है, कोई गंभीर है। तो व्यक्तित्व आत्मा नहीं हो सकता है। इसमें काम भी है, क्रोध भी है, ईर्ष्या भी है। यह व्यक्तित्व आत्मा नहीं हो सकता, क्योंकि आत्मा निर्मल है। ये दोष सबके अंदर दिख रहे हैं। यानी आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो रहा है। हमें वहाँ तक चलना है। साहिब कह रहे हैं—

चिंता तो सतनाम की, और न चितवे दास।

जो कछु चितवे नाम बिनु, सोई काल की फाँस॥

चिंता केवल सच्चे नाम की हो। यह क्या है परमात्मा का नाम सुमिरन? यह क्या है गुरु का ध्यान करना? इसका क्या महत्व है? क्यों सुमिरन करते रहें? क्यों ध्यान करते रहें? आखिर क्या लाभ है? गुरु का ध्यान करना मन पर काबू पाना है। मन पर काबू पाने के लिए यह ध्यान करना है। हमारा मन कोई-न-कोई चिंतन करेगा। जिसका चिंतन करेगा, उसकी तस्वीर आगे घुमायेगा। यानी हमारा ध्यान भी वहीं घूमेगा। जब एक ही चीज़ में ध्यान रख रहे हैं और पूरी एकाग्रता से कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि मन के चारों रूप-मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रुक गये। क्या ज़रूरत है इन्हें रोकने की? इन्हें रोकना ज़रूरी है। साहिब कह रहे हैं-

तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय।

कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावे कोय ॥

यानी तन स्थिर; मन भी स्थिर; सुरति भी स्थिर; निरति भी स्थिर। अगर एक पल जीवन में ऐसा आ जायेगा तो आत्म-साक्षात्कार हो जायेगा।

सभी मत-मतान्तरों में एक सिद्धांत है, पर कोई समझ नहीं पा रहा है। वो है-ध्यान। सभी कह रहे हैं कि ध्यान एकाग्र करो। सब बोल रहे हैं। यह मूल सिद्धांत है। क्या ज़रूरत पड़ी ध्यान एकाग्र करने की?

ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं, ध्यान ही संत बखाना ॥

क्या है ध्यान में? क्यों करें ध्यान? इसलिए कि ध्यान ही हमारी आत्मा है। शरीर में आत्मा की कोई पहचान है तो ध्यान। ध्यान उर्जा है; इसमें चेतना है; इसमें ताकत है। यह चेतन है। इसे पूरी तरह से स्थिर करना है। यह आत्मा का तीसरा गुण है। इसे व्यस्त कर लिया गया है। इसी के लिए साहिब कह रहे हैं-

सुरति निरति थिर होय... ॥

यह कैसे लाएँ पूर्ण एकाग्रता? यानी कोई हरकत नहीं। यदि कुछ क्रिया हुई तो पहले चिंतन बना होगा। इससे एकाग्रता भंग हो गयी।

इसलिए पहले शरीर को स्थिर करना है। बड़ा रहस्य है। अब मन को स्थिर कैसे करें? यह अवस्था कैसे बने?

मन ही आहे काल कराला। जीव नचाए करे बेहाला॥

हमारे मन के चार रूप हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। जैसे जल के तीन रूप हैं—ठोस, तरल और वाष्प। इस तरह मन के चार रूप हैं। यह मन कभी स्थिर बैठने वाली चीज़ नहीं है। यह प्रयत्नशील है। इसका स्वभाव ही यही है। जैसे आत्मा का एक स्वभाव है—चेतना। जैसे अग्नि का स्वभाव है—तपश और रोशनी। चाहे चंदन की लकड़ी से आग जलाओ, वो शीतलता नहीं देगी, तपश ही देगी। जैसे वायु का स्वभाव है—स्पन्दन। जैसे जल का स्वभाव है—शीतलता। ऐसे ही मन का स्वभाव है—संकल्प। हमेशा कुछ-न-कुछ इच्छा करता ही रहता है। फिर इसका स्वभाव है—विकल्प यानी निर्णय लेता रहता है। यह इसका स्वभाव है। और स्फुरण करना यानी याद करना। यह स्वभाव है। मन चार तरह की क्रियाएँ कर रहा है। जब यह इच्छा करता है तो इसे मन कहते हैं, जब निर्णय लेता है तो इसे बुद्धि कहते हैं, जब याद करता है तो चित्त कहते हैं और जब क्रिया करता है तो अहंकार कहते हैं। इसलिए इसे वश में करना बहुत कठिन है। तभी तो यह पूरी दुनिया को नचा रहा है।

एक और अच्छी बात है कि सब समझ चुके हैं कि मन-माया ने फँसा रखा है। जैसे समझ चुके हैं कि बंधन में हैं, ऐसे ही मान चुके हैं कि मन-माया के बंधन में हैं। अलग बात है कि गहराई से चिंतन नहीं कर रहे हैं, पर दिल से मान चुके हैं कि बँधे हैं। ये मन-माया मनुष्य को समझने का समय नहीं दे रहे हैं। संकल्प उठ रहे हैं। ये मन की वृत्ति है। आत्मा की वृत्ति आज़ाद है। वो चेतन है तो चेतन है। उसे किसी के सहारे की ज़रूरत नहीं है। उसकी चेतनता किसी पर आधारित नहीं है। और आनन्द है तो आनन्द है ही है। इसलिए कितना भी अटपटा मनुष्य मिल जाए, उसमें भी आनन्द मिलेगा। किसी-न-किसी हद तक निर्मलता भी मिल जायेगी। महापागल भी पैर चला लेता है यानी चेतन है। संकल्प,

विकल्प आदि मन की वृत्तियाँ हैं, पर ये जीवित आत्मा के कारण हैं। यह वो अपनी स्वयं-शक्ति से नहीं कर रहा। उसे इन्हें क्रियान्वित करने के लिए आत्मा की उर्जा चाहिए। उसने इच्छा की कि आम खाना है। पर वो नहीं खा सकता है। जब शरीर उठेगा, आम तक पहुँचेगा, फिर कहीं जाकर यह इच्छा पूरी हो सकती है। पर आत्मा की उर्जा के बिना शरीर हिल ही नहीं सकता है। मन की चारों वृत्तियाँ उसकी अपनी ताकत पर निर्भर नहीं हैं। जब तक आत्मा की ताकत नहीं मिलेगी, तब तक संकल्प-विकल्प भी नहीं कर सकता है। पर आत्मा की वृत्ति मूल है। उसे कोई सहारा नहीं चाहिए। इसलिए उसे अनाश्रित कहा। संकल्प मन की वृत्ति है। यदि ध्यान न दिया जाए तो नहीं होगा। मन ने संकल्प किया कि दो कमरे बनाने हैं। आत्मा उर्जा देती है। आत्मा उर्जा देगी तो बुद्धि सोचेगी। आत्मा बल नहीं देगी तो बुद्धि कुछ नहीं कर पायेगी। यानी मन को जीवित रहने के लिए कोई ताकत चाहिए। वो आत्मा को मूर्ख बनाकर उसकी ताकत ले रहा है।

संतो अचरज एक भौ भारी। मूस बिलाई खाई ॥

ध्यान में बैठो तो मन संकल्प देगा। आप चिंतन न करें। जब याद दिलाए कि फ़लाने ने यह कहा था तो वहीं रोक दें, कहें कि अभी यह सोचने का समय नहीं है। उसपर चिंतन न करें। जब कहे कि टाँगें सीधी कर लो तो कहो कि मैं शरीर ही नहीं हूँ। फिर मन बेबस हो जायेगा। पर आत्मा बेबस नहीं है। आत्मा सहयोग न दे तो मन का काम नहीं होगा। पर आत्मा को किसी सहारे की ज़रूरत नहीं है।

कुछ कहते हैं कि प्रभु ने जुल्म किया, हमें दुनिया में भेज दिया। सच यह है कि आप दुनिया में हो ही नहीं। पूरी आत्म-ज्ञान की बात करूँगा तो समझ नहीं पाओगे। इसलिए उतनी ही करनी है, जितनी समझ सको।

तो जितना आसानी से मन को कण्ट्रोल करना कहा, उतना है नहीं। जब भी ध्यान में बैठो तो यह नहीं सोचना कि अब उड़ूँ, अब

प्रकाश देखूँ, अब चाँद देखूँ। साहिब कह रहे हैं—

न कहूँ गया न काहूँ आया ॥

कहाँ उड़ना है फिर? सुरति को कहाँ चढ़ाना है? कुछ लोग भ्रमित करने के लिए ये बातें बोल रहे हैं। ये मन की खाइयाँ हैं, रुकावटें हैं। मैं अध्यात्म को मूल रूप से रख रहा हूँ। मुझे फ़िक्र है कि अध्यात्म दूषित हो गया है। कहीं निरंजन वाली बात न हो, इसलिए पुस्तकों को पहले खुद देखता हूँ। नहीं तो कई बार तो लाखों रुपये की किताबें आग में फेंकनी पड़ी हैं। इसलिए आज तक किसी को बोलने के लिए नियुक्त नहीं किया है। क्योंकि जानता हूँ कि गड़बड़ कर देगा। मेरी किसी से दुश्मनी नहीं है, पर संगत को संदेश ग़लत जाता है। वो भ्रमित हो सकती है।

एक बार एक ने पूछा कि यह मन आत्मा को कभी नहीं छोड़ता होगा! कभी कुछ बिंदुओं तक पहुँच जाता है तो फिर बदल जाता है। यह आदमी की ग़लती नहीं, मन का खेल होता है।

कोई कोई पहुँचा ब्रह्म लोक में, धर माया ले आई ॥

यह बहुत ताक़तवर है। इससे बड़ा तपस्वी कोई नहीं है। यही आपका सबसे बड़ा बैरी भी है। यह शून्य, महाशून्य तक भी साथ में चलता है। यह महाशून्य साधारण नहीं है। इसमें सात लोक हैं। जिस ब्रह्माण्ड में रह रहे हो, ऐसे अरबों-खरबों ब्रह्माण्ड उसमें समा जायेंगे। मन वहाँ भी होता है। जहाँ यह है, आप ख़तरे में हैं। जहाँ तक यह साथ में है, आप ख़तरे में हैं। कभी अत्यंत शांत और चुप होता है तो कभी उग्र रूप धारण कर लेता है। मन जहाँ भी चाहे, जो भी चाहे, करवा लेता है। स्वर्ग में भी यह है। ब्रह्म-लोक में भी यह मन है। पितरादि लोकों में भी यह मन है। चारों तरह की मोक्ष स्थितियों में भी यह है। यह साथ नहीं छोड़ता है। इतनी बारीकी से रहता है। तभी तो साहिब कह रहे हैं—

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्णत पंडित काजी ॥

पर कभी यह मन काँमा में हो जाता है। मरता नहीं है, पर अत्यंत

गौण हो जाता है। मात्र जीवित रह जाता है। पर वहाँ से भी उठ सकता है। पाताल से उठकर सातवें आकाश तक जा सकता है। सबको नचा देता है। केवल एक स्थान पर छोड़ देता है। वो भी इसलिए कि वहाँ प्रवेश नहीं ले सकता है। जब मानसरोवर में आत्मा चली जाती है तो कुछ नहीं कर पाता है। सप्त लोकों को लाँघने के बाद में आत्मा उस सुरति के सागर में पहुँचती है तो वहाँ नहीं जा पाता है। सद्गुरु जब उसे वहाँ समाता है तो मन शांत हो जाता है। वहाँ इसलिए शांत हो जाता है कि वहाँ नहीं जा पाता है। नहीं तो वहाँ भी जाना था। उसे शाप है कि वहाँ नहीं जा सकता है। इसलिए वहाँ यह आत्मा को छोड़ देता है। महाशून्य की स्थिति तक लगता है कि गुरु और शिष्य साथ-साथ हैं, पर उस स्थिति में दोनों एक हो जाते हैं।

गुरु शिष्य एक होई, ताई लोक समाइया ॥

इसलिए कितना भी मत्था मारो, मन छोड़ने वाला नहीं है।

सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे ॥

इसलिए मैं एक पुस्तक खुद लिखूँगा और उसमें त्रिकुटी, मानसरोवर आदि सबका वर्णन करूँगा। क्या-क्या मुश्किलें आती हैं, यह भी लिखूँगा। तो—

तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय ॥

यह मन स्थिर होना कोई साधारण बात नहीं है। आपको अपने स्वरूप से दूर रखने वाला मन ही तो है। वैज्ञानिक तथ्यों से भी पता चलेगा कि आपका बैरी मन है। साहिब कह रहे हैं—

मनहिं निरंजन सबै नचाए...।

जो-जो कह रहा है, आत्मा करती जा रही है।

मन जागे मन सोवे, मन हँसे मन रोवे ॥

मन सय्याद है। सय्याद कसाई को कहते हैं। क्या बात है? क्या इस मन के दायरे से जाना साधारण बात नहीं है। लोग मन की सीमा के अन्दर की बात कर रहे हैं। मेरा लक्ष्य है कि अध्यात्म को शुद्ध रूप से

रखूँ। तो मन को स्थिर करने के बाद सुरति और निरति को भी स्थिर करना है।

सुरति निरति थिर होय... ॥

इसमें सब वायुएँ इकट्ठा होकर सुषुम्ना में प्रवेश करने लगती हैं और वहाँ जमा हुआ कफ पिघलने लगता है। निरंजन ने बड़े पर्दे में रखा हुआ है। दुनिया सुषुम्ना-2 बोल रही है पर पता नहीं है।

मरते मरते जग मुआ मरन न जाना कोय।

ऐसी मरनी न मरा, बहुरि न मरना होय ॥

किरकिल वायु नासिका में रहती है। तब यह भी निकलकर चल पड़ेगी। देवदत्त पलकों में रहती है; वो भी निकलकर चल पड़ेगी सुषुम्ना की ओर। तब शरीर का कोई भी हिस्सा काम नहीं करेगा। दसों वायुएँ निकल पड़ती हैं। शरीर का कोई भी अंग हिल नहीं सकेगा। जब बोरी उठाते हैं तो कैसे उठती है? दो उँगलियों की ताकत नहीं लगती है। टाँगों की भी ताकत लगती है, पीठ की भी ताकत लगती है। इस तरह सुषुम्ना को खोलने के लिए दसों वायुओं की ताकत लगती है; ऐसे नहीं खुलती है। वहाँ कफ ने कब्जा कर रखा है। ऊपर मन रह रहा है।

पवन ने धूका दिया ॥

पवन के धक्के से कफ गल जाती है। तब लगेगा कि पक्के मर चुके हैं। इस तरह सुरति स्थिर हो गयी, निरति भी स्थिर हो गयी।

कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावे कोय ॥

उसके बाद जो बचता है, वो आत्मदेव होता है। आज रूहानियत कोई नहीं बोल रहा है। नाचना-गाना आदि तक सीमित रह गये हैं सब। इसका नाम आध्यात्मिकता नहीं है। लोग आध्यात्मिकता से दूर होते जा रहे हैं।

तो अब मन कॉमा में पहुँच गया। जब आप सुषुप्ति अवस्था में थे तो मन बहुत चेतन था; आपकी चेतना कम थी। जाग्रत में बराबर की चेतना रहती है। तुरीया में यह चेतना बढ़ जाती है; मन का प्रभाव कम

हो जाता है। तुरीयातीत में मन कॉमा में पहुँच जाता है और आत्मा बहुत चेतन हो जाती है। पर यहाँ तक भी महायोगेश्वर लोग ही पहुँच पाए। और इसके आगे तो वे भी नहीं। पर साहिब कह रहे हैं—

तुरीयातीत ताहि के पारा। विनती करै तहँ दास तुम्हारा ॥

तभी तो कहा—

केवल ज्ञान कबीर का, कोई बिरले जन जाना ॥

इस प्रकार से आत्मा आनन्दमयी है। आत्मा का आनन्द मन विच्छेद कर रहा है। जहाँ यह लगा है तो 24 घण्टे वही चीजें दिखेंगी। खेलने में लग गये तो फिर दिन-रात शॉट ही लगाते रहोगे।

जाकी सुरति लाग रही जहँवा, कहैं कबीर पहुँचाऊँ तहँवा ॥

मन की जितनी भी स्फुरणा है, सत्य नहीं है। जब सत्य के पास पहुँच जाते हैं तो परमात्मा के पास पहुँच जाते हैं। इसमें मन ही बाधक है। कितनी बड़ी बाधा है? जब आप आत्मा के नज़दीक पहुँचेंगे तो सब वहम लगेगा; पूरी दुनिया झूठी लगेगी। उस समय दुनिया के लोग कहेंगे कि पागल हो गया है। ऐसे में ध्यान रहे।

हीरा रत्न की पोटली, बार बार मत खोल।

कुँ जड़न की हाट में, हीरे का क्या मोल ॥

जब आत्म-ज्ञान की तरफ चलेंगे तो संसार स्वप्न लगने लगेगा। जब आत्मा का आचरण करने लगोगे तो दुनिया पागल कहने लगेगी। क्योंकि यहाँ सब पागल बैठे हुए हैं।

साधो यह जग पागलखाना ॥

क्या मनुष्य अपनी ताकत से इस अवस्था को पा सकता है? या फिर हमें सहारे की ज़रूरत पड़ेगी! धर्मदास जी ने भी साहिब से यही पूछा।

करनी योग कि रहनी वासा। कैसे पाऊँ लोक निवासा ॥

कहा—आत्म-तत्त्व की प्राप्ति के लिए निर्णय करके बताओ कि कृपा से होगा या मुझे कुछ करना है? नाना मत-मतान्तरों के सिद्धांत

अलग-2 हैं। कुछ कह रहे हैं कि कमाई कर, पार हो जायेगा। पर यहाँ विरोधाभास लग रहा है। इसका मतलब है कि बंदा कमाई करके पार हो सकता है, यह सीख है उनकी। पर यहाँ तो गोस्वामी कह रहे हैं—

यह सब साधन से न होई। तुम्हरी कृपा पाय कोई कोई ॥

इसका मतलब है कि यहाँ कृपा विशिष्ट हो गयी। यानी मन से निकलना है तो अपनी ताकत से नहीं होगा। पर संतों की बातें भी कभी भ्रम में डालने वाली लगती हैं।

साधो यह जग पागलखाना ॥

बड़े-2 बुद्धिमान घूम रहे हैं। वो सहमत नहीं होंगे। जब साहिब की बातें समझ नहीं आई तो कहा कि उलटवासियाँ बोलता था। असल बात यह है कि वे गहराई में नहीं पहुँच पाए। वो ठीक-ठीक कह रहे हैं। जब तक शरीर के धर्म का पालन कर रहे हैं तो अज्ञानी हैं। ठीक ही कहा—

इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबै भुलाना पेट के धंधा ॥

साहिब कह रहे हैं—

एक न भूला दो न भूले, जो है सनातन सोई भूला ॥

तो हम अन्दर की दुनिया में गुरु के बिना जा ही नहीं सकते हैं। कभी कहा जा रहा है कि ध्यान करो, अन्दर में झाँको तो कभी कहा जा रहा है कि झाँक ही नहीं सकते हो। अपनी ताकत से कहाँ तक जा सकते हैं? पूरी-पूरी गुरु की भूमिका होती है। उदाहरण देता हूँ। माँ बच्चे को गर्भावस्था में पोषित करती है। वहाँ भी पालती है। कभी-2 देहाती माताओं से पूछता हूँ कि कितने बच्चे हैं? कहती हैं कि चार। पूछता हूँ कि जब पेट में थे तो उन्हें खुराक कौन दे रहा था? कहती हैं—मालिक। फिर तो प्रभु को यह बहुत बड़ा काम दे दिया। सबको खिला रहा है। मैं पूछता हूँ कि पेशाब कहाँ कर रहा था? कहती हैं कि आप जानो।

माँ पौषण कर रही थी। नाड़ी जुड़ी थी। उसी से विकास हो रहा था। आजकल सिस्टम अच्छे हैं। मेडिकल साइंस तरक्की पर है। बच्चे की

हालत भी बता देते हैं। पुराना ज़माना ख़तरनाक था। बच्चा मर गया तो पता भी नहीं चलता था। माँ की भी जान जाती थी। आज पता चल जाता है।

तो माँ ने बच्चे को वहाँ पाला। जो-2 भोजन खाया, उसका रक्त बना और उस नाड़ी द्वारा वो वहाँ तक पहुँचा। आजकल कोई कॉमा में चला जाए को इंजेक्शन द्वारा डाइट देते हैं। पहले नहीं मिल पाती थी ऐसे मरीज़ को डाइट और वो मर जाता था। अब 2-2 साल से कुछ कॉमा में हैं। इस तरह माँ ने बच्चों को पोषित किया। पर जब बाहर आया तो दूध पीने लगा। जब पेट में था तो रेडीमेड ख़ुराक मिल रही थी, इसलिए रो नहीं रहा था। फिर माँ पयोधर से चिपकाकर दूध पिलाती है। माँ इतना सहयोग दे सकती है कि गोद में बिठा लेती है, पयोधर भी मुँह में डाल देती है, पर दूध पीने की क्रिया तो बच्चे को ही करनी है न! पर वो ताक़त भी माँ ने पेट में ही दे दी थी। इसका मतलब है कि पूरा रोल माँ का ही रहा।

प्रभु की कुछ चेतना तो है ही। अगर कमी है तो गुरु काबिल कर देगा। हमें क्या करना होगा? एक महात्मा ने कहा कि मुझे तत्व-ज्ञान की ज़रूरत है। इतने पर एक नामी ने कहा कि पूरी तरह से समर्पित हो जाओ। यह तो बड़ी तानाशाही लग रही है गुरु की। साहिब भी कह रहे हैं—

खाक हो गुरु के चरण में, तो तुझ मंजिल मिले ॥

यहाँ मन तर्क कर सकता है। क्यों करें गुलामी? यह क्या मतलब है? इसी पर तो पूरा अध्यात्म घूम रहा है। क्योंकि जो भी काम कर रहे हैं, पूरा मन है; जो भी सोच रहे हैं, पूरा मन है; जो भी ध्यान कर रहे हैं, मन से संबंधित है। इसलिए कहा—

मिटा दे अपनी हस्ती को, जो कुछ मरतबा चाहे।

कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है ॥

क्योंकि जो कुछ भी सोचा, मन की प्लैनिंग है। गुरु मन की सीमा

से बाहर है। वो बतायेगा कि कैसे पार होना है। तैरने वाला सिखाता है कि कैसे तैरना है। क्योंकि सीख चुका है। पढ़ने वाला पढ़ना सिखाता है, क्योंकि सीख चुका है। दुनिया में भी देखते हैं कि कुछ सीखना हो तो शिष्यत्व लेकर जाते हैं। जब कम्प्यूटर सीखना होगा तो वो जो कहेगा वो मानना होगा। नहीं मानें तो ग़लती होगी। इस तरह—

बिन गुरु बांचे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय ॥

बालक को दूध पीने की ताक़त देकर ही माँ ने बाहर किया है; उसे सक्षम किया है। माँ को अपना रक्त देना पड़ा है। बच्चा पूरा सक्षम होकर वहाँ से निकला है। उसने जो बाहर आकर चेष्टा करनी है, उसमें भी माँ का ही सहयोग हुआ। नानक देव तो कह रहे हैं—

**आपही कण्डा तौल तराजू, आप ही तौलन हारा ॥
आपही लेवे आप ही देवे, आपही है बनजारा ॥
आपही गुरु शिष्य पुनि आपही, आप ही आप का खेल है सारा ॥
आपही समुद्र बिंद पुनि आपही, आप का खेल कहो कौन जाने ॥**

वास्तव में नाम दान के समय गुरु अद्भुत चीज़ देता है। इसके बिना कोई मन से लड़ाई नहीं कर सकता है। अँधकार में थे तो ठोकरें खा रहे थे। ऊँचे-नीचे खड़के थे। किसी ने छोटी-सी बत्ती भी दे दी तो कितना बड़ा सहारा मिल गया! एक लाइट मिली तो आँखें भी काम करने लगीं, पाँव भी ठीक काम करने लगे। पहले नहीं कर रहे थे। अब लाइट बंद करके रख दोगे तो फिर खड़ु में गिर जाओगे। घोड़े में बड़ी ताक़त है। अगर लगाम लगा दो तो कण्ट्रोल में आ जाता है। इस तरह सद्गुरु की ताक़त साथ में आयेगी तो लगाम लग जायेगी।

मन ही निरंजन सबै नचाई। नाम होय तो माथ नमाई ॥

फिर काबू आ जायेगा। यह रोशनी देने का मतलब है कि जो आत्मा मन में समाई हुई है, उसे उठाकर मन से ऊपर कर दिया। आप अपनी ताक़त से कितना भी प्रयास करें, नहीं होगा। यह अपनी परछाई से लड़ने वाली बात होगी। पर—

नाम होय तो माथ नमावे ॥

यह काम गुरु पल में कर देता है। क्या किया?

जैसे दूध दूध दधी माखन, बिन मथे भेद न घी दा।

ऐसे तत्व मत्व सब साधन, तब टुक नशा पीयदा ॥

जिस दिन से नाम देता हूँ, आत्मा को मन से अलग कर देता हूँ। आप चाहें कि मन बन जाएँ तो भी नहीं बन पायेंगे। उस बिंदू पर नहीं पहुँच पायेंगे।

तो तब मन की हर हरकत समझ आने लगती है। नाम-प्राप्ति के बाद आत्मा चेतन हो जाती है। कभी-2 मन हावी भी हो सकता है। अगर हुआ तो आपकी ग़लती रहेगी। यदि गुरु की उर्जा पूरी मिल रही है तो हावी नहीं हो सकेगा। कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। अगर हुआ भी तो पीछे ताक़त खड़ी है, वो बचा लेगी। कहीं पराजित होने वाले होंगे तो ऊपर करके चली जायेगी। कहीं आप भयंकर भूल करने चले जाते हैं तो वो ताक़त बचा लेती है। कहीं बड़ी मुसीबत में फँस जाते हैं तो अचानक लगता है कि किसी ताक़त ने बाहर निकाल दिया है। यह अनुभूति साहिब इसलिए करवाता है कि विश्वास दिलाता है कि साथ में हूँ।

जब आप असहाय हो जाते हैं तो एक ताक़त मदद देती है।

गुरु समरथ जिहि सर खड़े, कमी काह को दास।

रिद्धि सिद्धि सेवा करें, मुक्ति न छोड़े साथ ॥

आपमें नकारात्मक विचार आते रहते हैं। गुरु का मार्ग-दर्शन ज़रूरी है। आपके जीवन में बड़ी-2 समस्याएँ भी आयेंगी; मन-माया विवश करेंगे, पर चिंता नहीं करना।

मुझे है काम सद्गुरु से, दुनिया रूठे तो रूठन दे ॥

गोरखपुर के पास 'रामनारायण' मेरा नामी है। उसकी पत्नी को दिमागी नुक्स हो गया। वो भक्त है। उसकी बेटी का विवाह था। सामान इकट्ठा किया था। वो उसी की निगरानी में रहने लगी। क्योंकि वहाँ चोरी बहुत होती है। तो दिमाग पर असर पड़ गया। कोई बड़ी बात नहीं थी। टाँग में दर्द हो जाता है; बड़ी बात नहीं है। दाँतों में भी दर्द हो जाता है; बड़ी बात नहीं है। कभी आँखों में भी दर्द हो जाता है। कभी पेट में भी

गड़बड़ हो जाती है। इस तरह दिमाग भी तो शरीर का ही हिस्सा है। तो वो नाचने लगी। वो वहाँ पाखण्डी तपके से लड़ाई कर रहा था। अब सब मज़ाक उड़ाने लगे। दुनिया जालिम है न! सब कहने लगे कि देवते छोड़ दिये; साहिब-बंदगी में चला गया, इसलिए यह हाल हो गया। क्यों बोलने लगे? बाकी को प्रमाणित करने लगे कि वहाँ जाने से ऐसा हाल हो जाता है, इसलिए आप भी नहीं जाना। हमारे नामी को पेट में भी दर्द हो जाए तो कहते हैं कि देवते छोड़ दिये, इसलिए हुआ। यह तो संयोगवश भी हो जाता है। मैंने कहा कि घर ले जा, डॉ० को दिखा। उसने ध्यान नहीं दिया। अब नुक्स अधिक हो गया। विरोधी खुश हो गये कि हम सही उतरे, साहिब-बंदगी वाले ग़लत थे, देखो, क्या हाल हो गया!

एक पागल को कुछ लोग मेरे यहाँ छोड़ गये। मैंने कहा कि इलाज़ करना था। वो चुपके से छोड़ गये। वो कहीं आश्रम से निकला और पैदल चल पड़ा। एक गाड़ी जा रही थी, टक्कर लगी और पीछे वाले पहिए के नीचे आकर मर गया। मैंने गाड़ी भेजी और पाँच हजार रुपये भेजे; कहा कि संस्कार कर देना। पाखण्डी इतने खुश हुए कि पूछो नहीं। उन्होंने कहा कि देवी-देवते छोड़ दिये थे, इसलिए हुआ। दूसरों से कहा कि तुम भी छोड़ दो, नहीं तो यही हाल हो जायेगा। क्योंकि उन्हें लग रहा था कि इस पंथ के कारण हमारी हानि हो रही है। दुर्भाग्यवश वहाँ एक गाड़ी गिरी और 14 लोग मर गये। 250 फीट ऊपर से गिरी। कई घायल भी हुए। जो घायल हुए, वो भयंकर रूप से घायल हुए। उसमें एक हमारा नामी भी था, जो ठीक-ठाक रहा। उसे कुछ नहीं हुआ। वो बच गया। अब मेरा वहाँ सत्संग था। मैंने कहा कि मेरा एक नामी मर गया तो लोगों ने ऐसा-ऐसा कहा। अब करो बात! हमें तो दुख था कि इतने लोग मरे। हम कोई देवतों की निंदा थोड़ा कर रहे हैं। हम तो कह रहे हैं कि 14 देवताओं की भी सही भक्ति तो हम जानते हैं, हम कर रहे हैं। पाँव के देवता उपेन्द्र जी हैं; हम कह रहे हैं कि उन्हें ग़लत दिशा की तरफ मत ले जाओ। पेट के देवता विष्णु जी हैं; हम कह रहे हैं कि वहाँ कुछ भी ग़लत न डालो। यही तो है सही भक्ति।

तो यह तो घटना है। इस तरह उसका दिमाग खराब हुआ। वो उछल-कूद करने लगी। उसने फ़ोन किया तो मैंने कहा कि हॉस्पिटल ले

जा। पाखण्डी दुनिया तो इतनी खुश थी मानो लाटरी लग गयी हो।

वो मरने से पहले बोली कि मैं सत्लोक जा रही हूँ; मेरी बात गंभीरता से लेना। मैं ठीक हो गयी हूँ। उसका शरीर छूट गया। वो हैरान रह गया। मुझे आकर कहा। मैंने कहा कि चिंता मत करना और दूसरी शादी नहीं करना। एक आदमी ने बाद में उससे कहा कि तू अब भी वहाँ साहिब-बंदगी में क्यों जा रहा है? अपनी बीबी का हाल देखा क्या! वो बोला कि मेरी बीबी तो अपना कल्याण करके चली गयी, अब मैं भी अपना कल्याण करने वहाँ जा रहा हूँ।

हमसे दुनिया नाराज़ है कि हम दुनिया वाली बात नहीं कह रहे हैं। हम तो अपने वाली कह रहे हैं। सच है, हमने दुनिया वाला रंग अपने पर चढ़ाया ही नहीं; हम तो अपने रंग में दुनिया को रँगना चाहते हैं। दुनिया ने तो मुझे कभी का छैलाबाबू बना देना था। एक माई आई और उसने आकर मुझे बाँसुरी दी। अब मैं बाँसुरी बजाऊँ क्या? एक ने आकर मुकुट दिया। अब कर लो बात! मैं दुलहा तो बनना नहीं है। एक ने शेरवानी दी। एक राणाप्रताप की तरह जूती लेकर आई। मैं तो अपनी धुन में रहता हूँ। एक ने आकर सोटी पकड़ा दी। मैंने कहा कि तू मुझे अभी से बूढ़ा मत बना। मैंने बूढ़ा होना नहीं है। मैंने एक बूढ़े को दे दी। मैं तो अपना रंग दुनिया पर चढ़ा रहा हूँ।

तो पूर्ण समर्पण की बात आई। तन, मन, धन तीनों लिए। सच में दे देना। गुरु समान जग में कोई हितकारी नहीं है। यह आत्मा अपने बलबूते पर संसार-सागर से किसी कीमत पर पार नहीं हो सकती है। मन का सुरति पर हमला है। गुरु जो चीज़ देगा, उससे मन को बाँध देगा। तब आत्मा ऊपर हो जायेगी, मन नीचे। अपनी लापरवाही से आप फिर नीचे आ सकते हैं। पर फिर-फिर साहिब आपको ऊपर कर देता है। इसलिए गुरु-दर्शन का महात्म है।

**गुरु का दर्शन कीजिए, दिन में सो सो बार।
आयूसा का मेह ज्यों, बहुत करे उपकार॥**



आखिर यह तन खाक मिलेगा

हम सब एक प्रतिस्पर्द्धा के युग में जी रहे हैं। जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष है, स्पर्द्धा है। जहाँ भी कॉम्पिटिशन है, वहाँ हिंसा स्वाभाविक है, प्रतिरोध स्वाभाविक है। जीवन के हर क्षेत्र में देखने को मिल रहा है कि हर विभाग में, हर क्षेत्र में, हरेक बिंदू पर प्रतिस्पर्द्धा है। चाहे आप शिक्षा में देखो, नौकरी में देखो, व्यापार में देखो, वैज्ञानिकों को देखो, सभी क्षेत्रों में एक स्पर्द्धा है। घर में दो बच्चे हैं तो उनमें भी कम्पटिशन हो रहा है। इससे भक्ति-क्षेत्र अछूता नहीं है। यह प्रतिस्पर्द्धा भक्ति-क्षेत्र में भी है। नाना मत-मतान्तर स्वपक्ष का मण्डन और परपक्ष का खण्डन कर रहे हैं। सभी स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं कि उनका मार्ग, उनकी भक्ति, उनका लक्ष्य उत्तम है। इस तरह से दूसरे पंथों की निंदा भी हो जाती है। जब भी कोई अपने को सर्वोच्च साबित करना चाहता है तब स्वाभाविक वो दूसरों का खण्डन और विरोध कर देता है। यह स्वाभाविक है। इसमें विचारशील का कर्तव्य है कि चिंतन करके देखे कि परमात्म-पद की प्राप्ति के लिए कौन-सी भक्ति ठीक है।

इस संसार में नाना मत-मतान्तर हैं। सभी अपने को ऊँचा स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। सभी भक्ति की बात कर रहे हैं। यह भक्ति क्या है?

भक्ति नसेनी मुक्ति की... ॥

भक्ति का लक्ष्य मुक्ति है। मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति चाहता है। अगर चिंतन करते हैं तो एक बात और सामने आती है कि नाना मत-मतान्तर, योगेश्वर, महात्मा आदि एक बात का प्रचार जोर-शोर से कर रहे हैं कि

जिस पथ पर वे चल रहे हैं, वो उत्तम कह रहे हैं उनसे उत्तम कुछ नहीं।

कोई कहे यज्ञ बस कीन्हा,
कोई कहे हम पढ़े पुराना,
कोई कहे विद्या आधीना,
कोई कहे तप कर वश राखा।,
तप है मूल और सब शाखा ॥

कोई शुभ कर्मों का रास्ता बता रहा है।

कोई कहे भाग्य आधीना ॥

कुछ कह रहे हैं कि भाग्य से ही प्राप्ति होगी; भाग्य सर्वश्रेष्ठ है।

कहँ लग कहों येही सब कहई। भेद हमार कोई न लहई ॥

सत्य का भेद कोई नहीं जान पा रहा है। जब मुक्ति की बात करते हैं तो मन के तत्व को जानना होगा। जब तक मन को नहीं जानते हैं तब तक मुक्ति का ठीक प्रयास नहीं हो सकता है। डॉ० पहले जानने की कोशिश करता है कि रोग क्या है, कारण क्या है। यदि यह नहीं जाने कि रोग किस कारण से हुआ है तो उपचार क्या करेगा! इसलिए डॉ० जानने की कोशिश करता है। जब तक ये बातें ठीक से नहीं जानी जायेंगी, रोग से लड़ाई नहीं की जा सकती है। पता ही नहीं है तो भला रोग का निदान कैसा! इसलिए सबसे पहले डॉ० एक हिस्ट्री रोगी के सिरहाने टाँग देता है कि फ़लानी-फ़लानी बीमारी है, यह-यह दवा दी है ताकि दूसरे आने वाले डॉ० भी जान सकें। वो रोगी को पहले पूछता है कि कहीं आपके घर में किसी को यह बीमारी तो नहीं थी? यह ज़रूरी है। मान लो, टी.बी. हो गयी हो तो जानना चाहता है कि कहीं बाप-दादे को तो नहीं है! यदि परम्परा से है तो फिर दूसरे किस्म की दवा देनी पड़ती है। कहीं लोकल कारण से हो जाती है, फैक्ट्रियों में काम करने वालों को हो जाती है। इसलिए पहले कारण जानना ज़रूरी है।

इस तरह पहले देखना होगा कि बंधन क्या है? बंधन का कारण

क्या है ? बाँधा किसने है? कैसे छूटे? बड़ी गहराई से हमें चिंतन करना होगा कि बँधे भी हैं या नहीं!

आमतौर पर सुनते हैं कि बंधन में है। क्या बंधन में है? सब घूम रहे हैं। जहाँ मरजी हो, वहीं चले जाते हैं। एक तरह से सब कह सकते हैं कि खुले तो हैं; कोई जेल में तो नहीं हैं। कुछ ऐसे लोग भी मिल जाते हैं। बड़ी गंभीर समस्या है। जानना होगा। अगर बँधे हैं तो मुक्ति चाहिए। क्योंकि—

पराधीन सुख सपनेहुँ नाहीं ॥

तो क्या बंधन है? शरीर से सब खुले नज़र आ रहे हैं। शायद अपनी शारीरिक आज़ादी देखकर कहते हैं कि क्या बंधन है! कुछ विचारवान् सोचते हैं कि बंधन में हैं। आत्मा बंधन में है। क्या सच में बंधन में हैं या ऐसे ही दौड़-धूप कर रहे हैं?

जैसे रेगिस्तान में मृगा दूर चमकती हुई रेत को पानी समझकर दौड़ता है। उसकी प्यास बढ़ती जाती है, पर पानी नहीं मिल पाता, क्योंकि पानी होता नहीं है। ऐसे में वो दौड़ते-दौड़ते जीवन गँवा बैठता है। कहीं हम कल्पना के आधार पर ईश्वर को जानने की कोशिश तो नहीं कर रहे! कहीं निरर्थक कोशिश तो नहीं कर रहे! कहीं ऐसे ही तो नहीं दौड़े जा रहे!

पृथ्वी पर रहने वाला हरेक इंसान स्वीकार कर रहा है कि शरीर के मिटने के बाद कुछ बाकी बचता है यानी आत्मा। इसे ही मुसलमान रूह कह रहे हैं। जितने भी पंथ हैं, धरती पर रहने वाले लोग हैं, सब मान रहे हैं कि आत्मा है। कुछ बचता है, जो मिटने के बाद लोक-लोकान्तरों में जाता है।

यानी बंधन में आत्मा है, शरीर नहीं। तभी तो मुसलमान कह रहे हैं कि खुदा के पास जाना है। कैसे जाना है?

धर्मराय जब लेखा माँगे क्या मुख लेकर जायेगा ॥

क्या है रूहानियत? क्या है अध्यात्मवाद? कहीं भ्रम तो नहीं है।

कुछ बुद्धिमान स्वीकार कर रहे हैं कि आत्मा अविनाशी तत्व है। धर्मशास्त्रों को देखें तो संदेश मिलता है।

आत्मवतन

सर्वभूतेशू ॥

वाणियाँ कह रही हैं कि इस आत्मा का नाश नहीं है। बड़ी अजीब बात है। इसे समझने का प्रयास करना होगा कि फिर कैसे बँधी है। गोस्वामी जी कह रहे हैं—

**ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो माया बस भयो गुसाई, बंध्यो कीर मरकट की नाई ॥**

यानी आत्मा परमात्मा का अंश है। इसका किसी देश, काल या अवस्था में नाश नहीं है। योगावशिष्ट में देखते हैं तो वशिष्ट मुनि ने राम जी को आत्मज्ञान की बात कही। उसमें आत्मा का सुंदर विश्लेषण किया। 14-18वीं शताब्दी तक जितने भी महापुरुष आए, उनकी वाणियों से भी पता चल रहा है कि आत्मा है, परमात्मा है।

सब स्वर्ग-नरक, दोजख-बिहिश्त, हेल-हेवन की बात कर रहे हैं। यानी कुछ बाकी रह रहा है, यह सब मान रहे हैं। बस, उसी की मुक्ति के लिए बात हो रही है। जो बचा, वो नित्य है। यही बात वासुदेव ने कही—हे अर्जुन! जिस तरह मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नवीन वस्त्रों को धारण करता है, ऐसे ही आत्मा कर्मानुसार एक शरीर का त्यागकर दूसरे शरीर को धारण करता है। हम शास्त्रों की कहीं निंदा नहीं कर रहे हैं। धर्मशास्त्र भी कह रहे हैं कि आत्मा है। आत्मा कैसी है? देखते हैं। क्या हम मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं? ये बातें धर्मशास्त्रों में हैं। चार मुक्तियों की बात है। संतों ने इन मुक्तियों से परे एक मुक्ति की बात कही, अनन्तनिर्वाण की बात कही। इन चार की तो एक सीमा है, दुबारा आ सकते हैं, पर अनन्त की प्राप्ति के बाद दुबारा जन्म-मरण में नहीं आना है।

हमें देखना होगा कि शरीर की ताकत क्या है, आध्यात्मिक-शक्ति क्या है? कैसी है यह आध्यात्मिक शक्ति? कहीं से प्राप्त करनी है

क्या? नहीं, यह हममें निहित है। हम अध्यात्म-जगत को भी देख सकते हैं। सभी सहमत हैं कि मरने के बाद कुछ बचता है जो स्वर्ग-नरक में जाता है। उस तत्व को आत्मा कहा, निःतत्व कहा। क्या उसका उल्लेख धर्मशास्त्रों में है? कभी आश्चर्य लगता है, जब लोग धर्मशास्त्रों की बात करते हैं। इस महाकलिकाल में धार्मिक सिद्धांतों का अनुकरण कोई नहीं कर रहा है। लोग सोचते हैं कि चोरी भी करें, छल भी करें और भक्ति भी करें। पर साहिब कह रहे हैं—

पाप कर्मों से रहता है जिसका मन मलीन।

उसको सपने में भी परमात्म नज़र आता नहीं॥

तो क्या वास्तव में हमें कोई बाँधे है? हमारी आत्मा निःतत्व है, पाँचों तत्वों से परे है। पहले पाँचों तत्वों को देखना होगा। ये पाँचों तत्व भौतिक हैं। भौतिक यानी साकार। पाँचों भौतिक तत्व दिख रहे हैं। आत्मा इनसे परे है। जैसे भोजन सभी कर रहे हैं, क्योंकि भोजन की आवश्यकता को जान रहे हैं। इसलिए उसकी प्राप्ति के लिए भागीरथी प्रयास किये जा रहे हैं। जानते हैं कि भोजन जीने का आधार है। जो जान रहा है कि इसी से बने खून के बिना नहीं रह सकता, वो भी खा रहा है और जो नहीं जानता है, वो भी स्वाभाविक खा रहा है। चाहे-अनचाहे, चाहे कोई पढ़ा-लिखा है या अनपढ़, भोजन के महत्व को समझता है।

क्या आत्मा इन तत्वों से अलग है या इनमें ही है। जब देखते हैं तो भौतिक तत्वों से ही हरेक पदार्थ बना है। पहले देखते हैं कि पंच-तत्व क्या हैं? जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश।

यानी पाँचों गोचर हैं। यानी पृथ्वी आँखों से देख सकते हैं, वायु को आँखों से देख सकते हैं, जल को आँखों से देख सकते हैं। सबसे पहले पृथ्वी तत्व दिख रहा है। हम चल रहे हैं। यह नज़र आ रहा है। दूसरा-अग्नि-तत्व। घरों में जला रहे हैं। सबको इसका ज्ञान है। जल-तत्व को ठीक से देख रहे हैं, स्नान कर रहे हैं, पी रहे हैं यानी ठीक से जानते हैं। वायु-तत्व भी दिखता है। यदि नहीं दिखती तो निराकार होनी

चाहिए। पर पाँचों तत्वों को गोचर कहा गया। सच यह है कि दिखती है। चारों तरफ दूर छतरीनुमा झुका हुआ जो दिख रहा है, वो आकाश नहीं है, वायु-तत्व है।

नीलो रंग है वायु को, खट्टो इसको स्वाद ॥

पीलो रंग है धरती को, मीठो इसको स्वाद ॥

श्वेत रंग है नीर को, खारो इसको स्वाद ॥

जल का रूप सफ़ेद है। थोड़ा ऊपर जाकर देखें तो सफ़ेद दिखेगा। हम कभी कहते भी हैं कि पानी की तरह सफ़ेद। और इसका स्वाद है खारा।

लाल रंग है अग्नि को, तीखो चटपटो स्वाद ॥

अग्नि दिख रही है। पर वायु के लिए कुछ सोचते हैं कि दिखती नहीं है, केवल अनुभव होती है। नहीं, दूर जो नीला दिख रहा है, वायु-तत्व है। यह हवा है। नज़दीक से नहीं दिखेगी। और

खट्टो

इसको

स्वाद ॥

इसका स्वाद खट्टा है। जब भी उलटी आती है तो गैस के कारण आती है। गैस बनती है। तब खट्टी डकारें आती हैं। यह वायु का स्वाद है।

तो पाँचवाँ तत्व आकाश है। यह साकार है। कहते हैं कि निराकार है। नहीं, यह साकार है। यह भी देखा जा सकता है। देखते हैं कि यह कैसा है। कुछ कहते हैं कि दो हाथों के बीच में जो है, वही है परमात्मा। नहीं, यह शून्य है। यह गोचर है।

कालो रंग है आकाश को, फीको इसको स्वाद ॥

जो डार्क मैटर देख रहे हैं, यह आकाश है। 90 प्रतिशत स्पेस में डार्क मैटर है। रात को जो अँधकार देखते हैं, वो आकाश का रंग है। यह भौतिक तत्व है, दिख रहा है। पर हमारी आत्मा नहीं दिख सकती है। कोई तत्व भी आत्मा को प्रभावित नहीं कर सकता है। ये तत्व एक दूसरे का विनाश कर देते हैं। पर आत्मा सुरक्षित है। जो कुछ भी हम आँखों

से देख रहे हैं, पंच भौतिक तत्वों से बना है। यह अध्यात्म परा-विज्ञान है। यह नहीं कि बाबा जी ने नशा किया और बात करने लगा। तो ये पाँचों बड़े घातक तत्व हैं। आत्मा इनसे परे है। किसी भी देश, काल और अवस्था में इसका नाश नहीं है। कैसा तत्व है? यह आत्म-तत्व कैसा है? कभी भी नाश नहीं है। आत्मा का जो विश्लेषण दिया, बड़ा ही अनूठा है। आत्मा अपने आप में पूर्ण है यानी किसी सहारे की ज़रूरत इसे नहीं है। शरीर को भोजन न मिला तो नष्ट हो जायेगा; ज़ोर से कोई चीज़ टकराई तो नष्ट हो जायेगा। पर आत्मा को कोई भी चीज़ ख़त्म नहीं कर सकती है। यह न्यूनाधिक नहीं होती है। न इसे ख़ुराक चाहिए, न मकान, न वस्त्र। न इसका आदि है न अन्त है। इन चीज़ों से आत्मा बहुत दूर है। बड़ी ही अनूठी, बड़ी ही निराली है आत्मा।

आत्म ज्ञान बिना नर भटके , क्या मथुरा क्या काशी ॥

यह बड़ा निराला तत्व है। इसके बारे में बहुत कुछ शास्त्रों में लिखा है। इसे भूख नहीं लगती; इसे प्यास नहीं लगती। कहाँ है? शरीर के अन्दर। क्या कर रही है? किसी को जानकारी नहीं है। तो शरीर आत्मा है क्या? कभी नहीं। शरीर क्यों नहीं है आत्मा? क्योंकि शरीर की सीमाएँ हैं। इसे भोजन चाहिए। यदि न मिले तो नष्ट हो जायेगा। यह अविनाशी नहीं है। हम अपने गिर्द देख रहे हैं कि बाप-दादे, पड़ोस के लोग वृद्ध होकर चले जाते हैं। हम उनका संस्कार करते हैं। इसकी कोई साक्षी नहीं देनी है। यह आत्मा नहीं हो सकता है। आत्मा से इसका स्वभाव मेल नहीं खा रहा है। यह जल गया तो ख़त्म। लेकिन हमारी आत्मा को आग नहीं जला सकती है। शरीर तो ख़त्म हो जायेगा। आत्मा को पृथ्वी-तत्व भी दम्य नहीं कर सकता है। पर किसी पर बहुत भारी पत्थर फेंक दें तो शरीर ख़त्म हो जायेगा। कुछ टकरा जाए तो ख़त्म है। इसलिए यह आत्मा नहीं हो सकता है। आत्मा से कहीं भी मेल नहीं खा रहा है। इसे आत्मा नहीं कहा जा सकता है। कई और चीज़ें हैं शरीर की; वो भी मेल नहीं खा रही हैं। आत्मा इंद्रियों से भी परे है। हम आत्मा हैं

या नहीं? संसार का अहम सवाल ही यही है कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? इसका जवाब नहीं मिल पाता है। आत्मा शरीर नहीं हो सकती है। फिर बुद्धि है क्या? मन है क्या? शरीर के बाद कुछ दिखता है तो एक मन भी दिखता है। बहुत कम लोग इस मन को समझते हैं। इस पर नज़र डालते हैं।

शरीर तो पंच-भौतिक है। सबका शरीर माँ के रज और पिता के वीर्य से बना है।

माँ का रज ना पिता का बिंदू। किसको कहता तुरक वा हिन्दू ॥

हरेक शरीर पंच-तत्वों से बना है और विषयों से इसका निर्माण हुआ।

काँचे कुम्भ न पानी ठहरे ॥

इसका नाश अवश्यंभावी है। भूख, प्यास आदि आत्मा को नहीं लगती है, पर शरीर को लगती है। सुकड़ना, पसरना आदि से आत्मा परे है, पर शरीर कर रहा है। शब्द, रस आदि का संबंध भी शरीर से है, आत्मा से नहीं।

थोड़ा चिंतन करने से पता चलता है कि यह आत्मा नहीं हो सकता है। फिर कैसी है आत्मा? इसी को छूटना है। इतना बुद्धिमान प्राणी आत्मा की बात कह भी रहा है, पर जान नहीं पा रहा है।

फिर इस शरीर में एक और है—मन। कैसा है यह मन? कहाँ है? क्या आत्मा है मन। नहीं, यह भी आत्मा नहीं हो सकता है। देखते हैं कि यह क्या है। देखते हैं कि कैसा है यह मन। चिंतन करते हैं तो पता चलता है कि हम मन नहीं हैं। थोड़ा चिंतन करते हैं कि कैसा है यह मन। इस मन के चार रूप हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। इस शरीर के बाद कुछ नज़र आता है तो मन, बुद्धि, चित्त आदि। ये आत्मा हैं क्या? शरीर के बाद कुछ दिख रहा है तो दिख रही है सोच, चिंतन और स्वभाव। क्या ये आत्मा हैं? भाइयो, हम मूल तत्व की ओर चलते हैं। क्या ये चीज़ें आत्मा हैं? क्योंकि आत्मज्ञान की ओर चलना है। शास्त्रों में जो विश्लेषण

किया गया है, उससे मेल नहीं खा रहा है। यह पंच भौतिक तत्व नहीं हो सकता है। ये तत्व नाशवान् हैं। शरीर नाशवान् लग रहा है। पर फिर भी सब शरीर के लिए जी रहे हैं। शरीर को खड़े में नहीं छोड़ना है। पर—
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में॥

हमें आत्म-तत्व की तरफ चलना होगा।

आत्मज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी॥

शरीर का कोई भी स्वभाव आत्मा से मेल नहीं खा रहा है। इसमें विषय-विकार भरे-पड़े हैं। आत्मा में विषय-विकार नहीं हैं। शरीर का कोई भी गुण आत्मा से मेल नहीं खा रहा है।

क्षिति जल पावक गगन समीरा। पाँच तत्व का अधम शरीरा॥

इसे अधम कहा। निःसंदेह यह नाश को प्राप्त होना है। गुरु नानक-देव जी भी बोल रहे हैं; सब बोल रहे हैं। प्रत्यक्ष देख रहे हैं, स्वभाव भी देख रहे हैं कि मेल नहीं खा रहा है। शरीर टूट-फूट जाता है, पर गीता में भी आता है कि आत्मा नष्ट नहीं होती। तो इन वृत्तियों का अध्ययन करने से पता चलता है कि शरीर आत्मा नहीं हो सकता है। इसमें विकार हैं, आत्मा में नहीं हैं। इसे भौतिक जीवन कहते हैं। इसी के लिए सब जी रहे हैं। अच्छा भोजन आत्मा को नहीं चाहिए। इतने गंभीर विषय पर कोई सोच नहीं रहा है। रोटी, कपड़ा, मकान के लिए सब जी रहे हैं। लाभ-हानि भी शरीर से है। आत्मा इनसे परे है। न इसके टुकड़े हो सकते हैं। यह नित्य है। तो बन्धुओ! शरीर के मिटने के बाद जो बच रहा है, उसके लिए सोचना है। सब कह रहे हैं कि स्वर्ग और नरक। सभी कह रहे हैं कि मालिक को लेखा देना है। यानी सब मान रहे हैं कि कुछ बच रहा है शरीर के मिटने के बाद। पर फिर भी कोई इसके लिए प्रयास नहीं कर रहा है।

दिवस गँवाया खाय के, रैन गँवाई सोय।

हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले खोय॥

सबकी एक ही कहानी है।

**कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा।
इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सभै भुलाना पेट के धंधा॥**

दो-चार लोग भटके हों तो कोई बात नहीं है, पर यहाँ तो पूरी दुनिया की ही यही रीत है। फिर इसके लिए पाप-पुण्य करते हैं। अपने कर्मों का फल पाने के लिए जीव 84 लाख योनियों में जाता है। यानी इसी के लिए पाप-पुण्य कर रहा है।

सभी इंद्रियाँ इन्हीं के लिए दौड़ रही हैं। अन्तकाल तक स्वादिष्ट चीजें खाती हैं। आँखें थकती नहीं हैं। आँखों के मजे के लिए इंद्रियाँ लगी हैं। ये थकती नहीं हैं, तृप्त नहीं होती हैं। राजा लोग विषय-विकारों में लगे रहे, कई-कई शादियाँ कीं, पर तृप्ति नहीं हुई। ये तृप्त होती नहीं हैं। यह मानव-तन आत्मा के कल्याण के लिए मिला है। पर मन इसे भटका रहा है।

मन के चार रूप बताए। जैसे पानी के तीन रूप हैं—वाष्प, तरल और ठोस। बर्फ में भी जल तत्व है। तीनों एक ही तत्व होकर अलग-अलग दिखते हैं। मन क्या करता है? संकल्प करता है। तब इसकी संज्ञा होती है—मन। बर्फ क्या है? है तो पानी ही। इस तरह मन इच्छा करता है। यह मन आत्मा हो ही नहीं सकता है। आत्मा को किसी चीज़ की इच्छा ही नहीं है। कभी इच्छा करते हैं कि दो कमरे हो जाएँ, दो बेटे मिल जाएँ। आत्मा का कोई बेटा ही नहीं है। फिर क्या इच्छा करेगी?

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए॥

फिर कभी मन के दूसरे रूप बुद्धि से फैसला करते हैं कि दूसरे को खत्म कर दें। आत्मा तो निर्मल है। कभी कहते हैं कि फ़लाना आदमी खराब है, फ़लाना आदमी अच्छा है। यानी यह मूल्यांकन कर्मों से है। अच्छे-बुरे का मूल्यांकन कर्म से किया। यदि किसी को मार रही है तो यह नहीं हो सकती है आत्मा। कौन बैठा है, जो हिंसा कर रहा है। जो कत्ल करने पहुँचा, वो कौन है?

इतने खतरनाक निर्णय कौन ले रहा है? इसका मतलब है कि आत्मा शैतानी ताकतों के हाथ में है। मैं राष्ट्रपति रीगन के पी.ए. का उदाहरण देता हूँ। उन्होंने कुछ समय पहले एक बात कही। वो वर्ष का महावाक्या माना गया। उसने कहा कि मुझे यँ लगता है कि हम सब धरती पर रहने वाले लोग किसी शैतानी ताकत के हाथ में काम कर रहे हैं। उसमें इतनी ताकत है कि हमसे, जो भी चाहे, करवा लेती है; हम सबको एक ही समय में एक ही दिशा में मोड़ सकती है। और मुझे यँ लगता है कि वर्तमान में वो ताकत हम सबको विनाश की ओर ले जा रही है।

साहिब बहुत पहले चेताकर गये हैं—

सय्याद के काबू में हैं सब जीव बेचारे ॥

यानी धरती के सभी जीव एक शैतानी ताकत के हाथ में हैं। क्योंकि मनुष्य पाप कर रहा है तो कौन प्रेरणा दे रहा है? आखिर आत्मा जिम्मेवार है या नहीं? वो क्या कर रही है? कहीं वो जड़ तत्व तो नहीं है! इसकी जिम्मेवारी किसकी है?

तो कभी बुद्धि बड़े ग़लत फैसले कर लेती है। कभी कहती है कि चोरी करके आते हैं। यह फैसला हो जाता है। मन फैसला कर लेता है। यह फैसला बुद्धि ने किया या आत्मा ने? यदि आत्मा ने किया तो बेहद खराब है। फिर कौन है, जो ये फैसले कर रहा है?

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे.... ॥

रूहानियत का मतलब है कि घर के भीतर के शत्रुओं को जानना। इस घट में बड़ी लूट हो रही है। साहिब कह रहे हैं—

पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै ॥

भाइयो, देखते हैं कि क्या बुद्धि के निर्णय आत्मा के हो सकते हैं? नहीं। यह बुद्धि भी धोखा है। क्योंकि इसकी क्रियाएँ आत्मा से मेल नहीं खा रही हैं। यह बुद्धि आत्मा नहीं हो सकती है। तीसरा रूप है—चित्त। बड़ा विशाल है। इसी से अनुभव हो रहा है कि यह माँ है, यह मित्र है, यह शत्रु है। यह आत्मा नहीं है। चित्त हमें भ्रमित कर रहा है। आत्मा

अडोल है, इन सबसे परे है। इसका मतलब है कि हमारी आत्मा मन, बुद्धि से भी परे है। इनको निकाल दो तो बाकी क्या रह रहा है? आत्मा क्रिया-अक्रिया से परे है तो कहाँ है आत्मा? आखिर क्या परिचय है उसका शरीर में? जिस आत्मा की मुक्ति की बात कर रहे हैं, उसे समझना है।

आत्म ज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी ॥

मन को भी समझ लिया, शरीर को भी समझ लिया। अब क्या है आत्मा? आत्मा को जाना जा सकता है या नहीं? या फिर हम अँधकार में हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह हमारा मानना ही है। यह प्रत्यक्ष देख सकते हैं। आत्मा का स्वरूप बताता हूँ। आत्मा है-चेतना; आत्मा है - एकाग्रता; आत्मा है-सुरति। यह आत्मा है। प्रमाण देता हूँ और प्रत्यक्ष अनुभूति करवाता हूँ। हमारी चेतना हमारी आत्मा है। गोस्वामी जी कह रहे हैं-

**ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो माया बस भयो गुसाईं। बंध्यो कीर मरकट की नाई ॥**

यानी आत्मा चेतन है; प्रमाण मिल रहा है। फिर अमल है। यानी इसमें कोई गंदगी भी नहीं है। फिर यह आनन्दमयी भी है।

तो यह चेतना हमारी आत्मा है। यही पूरे काम कर रही है। किसकी गाइडिंग में? मन की। मन ने इसे बाँधा है। क्या हम अनुभूतियाँ कर सकते हैं? ज़रूर। प्रत्यक्ष देख सकते हैं कि बँधी है। आत्मज्ञान का अर्थ ही यही है कि शरीर के रहस्यों को जानें। हमारी आत्मा कैसे बँधी है, जानें। जब तक बँधन को नहीं जानेंगे तब तक मुक्ति के लिए चेष्टा कैसे करेंगे! जो भी काम कर रहे हैं, ध्यान प्रमुख है। यदि ध्यान न हो तो कोई क्रिया नहीं कर सकते हैं। आप मुझे सुनते हैं, देखते हैं, पर ध्यान चला जाए तो देखना, सुनना, समझना आदि कुछ भी संभव नहीं रह जायेगा। खुली आँखें होंगी, पर नहीं कर पायेंगे। आप मुझे सुन नहीं पायेंगे। आप मुझे समझ नहीं पायेंगे। इसका मतलब है कि शरीर यहाँ रहेगा, पर फिर

भी कुछ नहीं हो पायेगा। इसका मतलब है कि हमारे देखने की प्रक्रिया में ध्यान विशेष है। यानी आत्मा के बिना देख भी नहीं सकते हैं, समझ भी नहीं सकते हैं। कभी किसी से बात करते हैं, पर यदि उसका ध्यान न हो तो कहते हैं कि ध्यान से सुनो। कभी कहते हैं कि बड़े ध्यान से सुनो, समझो। यानी यह सुनना, समझना आदि ध्यान से ही होता है। यह किसी के काबू में है या नहीं, यह देखें। यह बंधन में है या नहीं? यह मन के वश में है।

कभी आप ध्यान में बैठना चाहते हैं तो अचानक ध्यान कहीं चला जाता है। कभी मन इच्छा करता है कि दो कमरे बनाने हैं। वो इच्छा जगाता है। एक इच्छा उठती है। आप सोचने लग जाते हैं कि लकड़ी कहाँ से लेनी है? कितना पैसा लगेगा? मेरे पास तो इतना है, बाकी का उधार ले लूँगा। वो कहाँ से लूँगा? फिर मिस्त्री फ़लाना होगा। आप ध्यान में बैठे थे। मन एक घण्टा इन्हीं में उलझाए रखता है। फिर आप कहते हैं कि लड़के ने 10वीं पास कर ली है, 11वीं की किताबें लेकर देनी हैं। दो घण्टे बाद उठते हैं तो कहते हैं कि कुछ मिला नहीं। मिलना क्या था! ध्यान लगाया ही कहाँ था! वो तो आपके काबू में था ही नहीं। वो तो मन ले गया था अपने साथ में। आप कहते भी हैं कि मन-माया में फँसे हैं। पर कभी जानने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। तभी तो कह रहे हैं—

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए॥

चलो, मन ने इच्छा न की, पर अचानक याद आ जायेगा कि मोहनलाल ने गाली बकी थी। ध्यान हट गया और प्लैनिंग होने लगी कि बदला कैसे लें। कभी 4-4 घण्टे भी शेखचिल्ली की तरह लगे रहते हैं। कहीं हम शेखचिल्ली की तरह कल्पनाओं के सागर में तो नहीं डूब रहे हैं।

वो भोला था। पाण्डी का काम करता था; लोगों का सामान ढोता था। एक सेठ ने घी का घड़ा लिया और चिल्ली को कहा कि घर छोड़ दो। चिल्ली ने पूछा कि कितने पैसे दोगे? सेठ ने कहा—एक आना। चिल्ली ने

कहा-दो आने लूँगा; एक आना कम है। सेठ ने कहा कि ठीक है, चलो। आगे-आगे चिल्ली, पीछे-पीछे सेठ। अब चिल्ली प्लैनिंग करने लगा कि दो आने की मुर्गी खरीदूँगा; फिर मुर्गी के बच्चे होंगे। बच्चे बड़े हो जायेंगे तो पोलटरी फार्म खरीदूँगा। फिर उसे बेचकर भैंस लूँगा। भैंस के बच्चे होंगे। वो बड़े होंगे तो डेयरी फार्म खोल लूँगा। फिर उसे बेचकर होलसेल की दुकान खोलूँगा। बड़े ग्राहक आयेंगे।

हम सभी ये प्लैनिंग करते हैं।

फिर शादी करूँगा। फिर पुत्र होगा। मैं दुकान पर बैठकर हुक्का पी रहा हूँगा। वो आयेगा; कहेगा-बापू! घर चलो; माँ ने बुलाया है; रोटी खा लो। मैं कहूँगा कि तू चल; मैं आ जाऊँगा। वो फिर आयेगा; मेरी गोद में बैठ जायेगा। मैं कहूँगा-चल हट।

ऐसे सोचते हुए उसने सही में गर्दन हिला दी और घी का घड़ा नीचे गिरा दिया। सेठ ने कहा कि तेरा भला हो; मेरा सारा घी चला गया। चिल्ली ने कहा-सेठ, तुम्हारो क्या गयो? मेरो तो कुटुम्ब कबीलो सब गयो।

सेठ ने कहा कि तुम्हारा कैसे गया? उसने कहा कि ऐसे-ऐसे आपने जो मुझे दो आने देने थे तो मैंने उससे एक मुर्गी लेनी थी। मुर्गी ने बहुत अण्डे देने थे। फिर उसमें से बच्चे होने थे। बच्चे बड़े होने थे। तब मैंने पोलटरी फार्म खोलना था। फिर उसे बेचकर एक भैंस लेनी थी। भैंस के बच्चे होने थे। जब वे बड़े होते तो डेयरी फार्म खोलना था। फिर उसे बेचकर होलसेल की दुकान खोलनी थी। तब फिर शादी भी कर लेनी थी; पुत्र भी हो जाना था। तब मैं दुकान पर बैठकर हुक्का पीना था। इतने में मेरे लड़के ने मुझे घर बुलाने आना था। बस, यहीं तक पहुँचा था कि घड़ा गिर गया। सोच, तेरा तो घड़ा ही गया, पर मेरा कुटुम्ब, कबीला सब चला गया।

यह दुनिया भी शेखचिल्ली का सपना है। हम सब शेखचिल्ली की तरह कल्पनाएँ करते रहते हैं। हम उसी के नक्शेकदम पर चलते हुए

कल्पनाओं के सागर में गोते लगाए जा रहे हैं। फिर कहते हैं कि कुछ मिल नहीं रहा है।

मन माया में बँध रह्यो, बिसरेयो नाम गोविंद।

कह नानक रे सुन मना, अंत पड़ो यम फँद॥

आदमी शेखचिल्ली की तरह कल्पनाएँ किये जा रहा है। मन बड़ा शातिर है। वो इसे इसी में लगाए हुए है। जो क्रियाएँ कर रहे हैं, वो आत्मा है क्या? नहीं, यह आत्मा नहीं हो सकती है। हमारा मन किसी भी दृष्टिकोण से आत्मा नहीं हो सकता है। क्यों नहीं हो सकता है? क्योंकि जो भी क्रियाएँ कर रहे हैं, आत्मा से मेल नहीं खा रही हैं। मन इस ध्यान को कैसे भटका रहा है?

तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन॥

तथा—

जीव के संग मन काल रहाई। अज्ञानी नर जानत नाहीं॥

कितना बड़ा शत्रु बैठा है! कर क्या रहा है? 24 घण्टे घुमा रहा है। सबकी यही कहानी है।

ढाक के तीन पात॥

सभी की यही कहानी है। मेरा सवाल है कि दो-तीन डुबकियाँ लगाकर निर्मल हो जायेंगे? दो-चार मंत्र करके मन से बच जायेंगे? क्या इन चीजों से बंधन कट जायेंगे? शुभ कर्म करके बच जायेंगे क्या? क्या पंचांग योग करके, योग साधना करके बच जायेंगे? क्या खेचरी, चाचरी आदि मुद्राएँ करके मुक्त हो जायेंगे? नहीं, इसमें संशय है। नहीं हो पायेंगे। यदि पुराने ऋषियों को देखते हैं तो कपिल, शाण्डिल्य, पराशर आदि हमारे पूर्वज हुए। उन्होंने घोर साधनाएँ कीं, घोर तपस्याएँ कीं, पर शास्त्रों में मिलता है कि मन ने इन्हें भटका दिया। हम शास्त्रों में यह पढ़ रहे हैं। कथाओं में आ रहा है कि मन बहुत तगड़ा है। फिर आ रहा है कि फ़लाने ऋषि ने तपस्या की और मन ने फिर भटका दिया। हठयोग करके श्रृंगी ऋषि ने अपने को लकड़ बनाया। क्या तर्क था कि ब्लड न होगा तो वीर्य

नहीं बनेगा और वीर्य न होगा तो संभोग की इच्छा न होगी। पर फिर वेश्या के अधीन हो गया। ये चीजें मिल रही हैं। यानी अपनी ताकत से नहीं कर पायेगा।

क्या कलयुग का आदमी व्यास जी जैसा तप कर पायेगा? क्या पराशर जैसी घोर तपस्या कर सकेगा? जब वो इतनी कठिन तपस्या करके नहीं छूट पाए तो यह कलयुग का, यूरिया की खुराक खाने वाला बंदा खाक कर पायेगा। हमारे पूर्वज गंभीर थे; डाइट बहुत अच्छी थी; उनसे यह काम नहीं बन पाया तो कलयुग का आदमी अपने बूते से नहीं निकल पायेगा इनसे। इसके काम, क्रोध आदि हाथ भी बड़े मजबूत हैं। इन्हीं से नचाए जा रहा है। हमें इसका आभास होता है, ज्ञान मिलता है।

काम प्रबल अति भयंकर, महादारुण काल।

गण गंधर्व यक्ष किन्नर, सबै कीन बेहाल॥

दुनिया का एक आदमी भूला नहीं है। यही तो साहिब कह रहे हैं—

इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबै भुलाना पेट के धंधा॥

सभी भूले हुए हैं। अच्छे-अच्छों को नचा दिया। जिसके हाथ में दुनिया है, मामूली नहीं है।

काम से अधिक क्रोध प्रचण्डा॥

इसका जलवा देखो। ब्रह्माजी सृष्टिकर्ता माने जाते हैं। उन्हें क्रोध आया तो छः पुत्रों को शाप देकर भस्म कर दिया। शिवजी महाराज को क्रोध आए तो पूरी दुनिया को नष्ट कर देते हैं। यह क्रोध कृष्ण जी के गुरु दुर्वासा जी को आया तो 56 कोटि यादवों को शाप देकर खत्म कर दिया। सनकादि को क्रोध आया तो स्वर्ग के दो द्वारपालों—जय और विजय को राक्षस हो जाने का शाप दे दिया। देखो, सनकादि को क्रोध आ गया। फिर आम आदमी की क्या बात करें!

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

सही में लगता है कि आत्मा खतरनाक ताकतों के हाथ में बँधी है। घर में भी देखते हैं कि क्रोध आता है तो आँखें लाल हो जाती हैं। कितने शत्रुओं के बीच में घूम रही है आत्मा !

बुरा लोभ ते और न कोई ॥

साहिब कह रहे हैं—

कामी नर बहुते तरे, क्रोधी तरे अनन्त।

लोभी बंदा न तरे, कहैं कबीर सिद्धंत ॥

क्षण-2 पाप करवायेगा। समस्त पाप लोभ से हैं। लोभ पाप का बाप है। पर लोभ नारद मुनि के पास भी आया। जीवन में देखते हैं तो यह मिलता है। ब्रह्मानन्द जी ने कहा—

कोई हमसे पूछे यों आकर, दुनिया में तुमने क्या देखा।

हम बतला देंगे यूँ उसको, सब मतलब का मेला देखा ॥

हम मतलब के तुम मतलब के, ये मतलब के वो मतलब के ॥

गुलिस्तान में फूल खिला था, हमने देखा मतलब का।

योगी देखे जंगम देखे, पीले कपड़े वाले देखे।

पर गले में उनके हार पड़ा, हमने देखा मतलब का ॥

वो दीप दिखा दे तू अपना, जो होवे खाली मतलब से।

ब्रह्मानन्द कहेगा यूँ, आज मैंने खुदा देखा ॥

वो कह रहे हैं कि योगी देखे; उनमें भी लोभ मिला। जंगम भी देखे, आचार्य लोग भी देखे, पर गले में हार पड़ा था, वो भी मतलब का था। यानी लोभ।

लोभ व्यापक है। यदि अपने पास 100 रुपये हैं तो भी दूसरे का धन लेना चाह रहा है। साहिब ने कहा—

साईं इतना दीजिए, जामेँ कुटुम्ब समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥

लोभ छोटी चीज़ नहीं है। यह लोभ पाप का बाप है। यह पाप

करवा देता है। मन बड़ा ज़हरीला है। साहिब कह रहे हैं—

**काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खानि।
क्या पंडित क्या मूरखा, दोनों एक समान॥**

फिर अहंकार। यह लोभ से भी बुरा है।

**सहज माया का त्यागना, सुत वित्त अरु नारि।
मान बढ़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना ऐह॥**

तथा—

**माया तजे ते क्या भया, मान तजा न जाई।
मान बड़े मुनिवर गले, मान सबन को खाई॥**

मन फूला हुआ रहता है कि इतने बेटे हैं, इतना धन है। यह है बंधन। इसपर किसी की नज़र ही नहीं है। कुछ कथा-पुराण को सुनकर सोचते हैं कि कल्याण होगा। उन्हीं की कथा तो सुन रहे हैं, जिन्हें मन ने नचाया।

सब मन के दायरे में तो हैं। मन सबको नचा रहा है।

मन को कोई चीह्न न पाए। नाना नाच नचाए॥

शरीर का एक-एक रोम इसकी आज्ञा का पालन कर रहा है।

मन हंसे मन रोए, मन जागे मन सोए।

मन का है व्यवहार कबीरा, मन का है व्यवहार॥

साहिब कह रहे हैं—

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीह्नत पंडित काजी॥

बड़े-बड़े विद्वान भी नहीं समझ पा रहे हैं। जैसे बाजीगर बंदर को नचा रहा है, ऐसे ही मन आत्मा को नचा रहा है। यह है बंधन। कुछ कह रहे हैं कि कर्म से छूट जायेंगे। कर्म का अधिष्ठा तो मन ही है। कभी लोगों से कहता हूँ कि महात्मा का मूल्यांकन उसके कपड़ों, परिवार, धन आदि से न करो। बादशाह सिकंदर क्या महात्मा था? यदि धन से महात्मा की पहचान कर रहे हो तो यह महात्मा की ठीक पहचान नहीं है। उसे एक सिद्धांत से जाना जाए कि मन पर नियंत्रण कितना है।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

कहैं कबीर गुरु पाइये, मन ही की परतीत॥

महात्मा में देखो कि आत्मा के कितना नज़दीक है, मन से कितना परे है। मन के स्थूल और सूक्ष्म दो रूप हैं। अगर इंद्रियों के मजे में है तो महात्मा नहीं मानना। सूक्ष्म रूप से यह देखना कि काम, क्रोध में तो नहीं घूम रहा है। यदि हाँ, तो महात्मा नहीं मानना।

गाँठी दाम न बाँधई, नारी से नहीं नेह।

तुलसी ऐसे संत की, मैं चरणों की खेह॥

मन पर नियंत्रण है या नहीं, यह कैसे देखना! पहला इंद्रियाँ हैं मन की ताकत। ये प्रवेग में बहती हैं। पहलवान लड़ता है तो दूसरे के पहले हाथ पकड़ता है, फिर टाँगें या अन्य चीज़ें। क्योंकि हाथों में ताकत अधिक है। मन के हाथ हैं—काम, क्रोध आदि। पहले इन्हें पकड़ता है महात्मा। इंद्रियाँ टाँगें हैं मन की।

कभी इंसान कुछ गलत करके सोचता है; पछताता है कि क्यों किया! यह नहीं सोचता है कि करने वाला भी मैं ही था। विद्या से नहीं होगा कुछ भी। शिक्षा के खिलाफ नहीं हूँ, पर इससे नहीं होगा। कुछ कहते हैं कि भाग्य में लिखा होगा, तभी होगा। साहिब कह रहे हैं कि मन रूपी बहुत बड़ा प्रपंची साथ में है, पर कोई मेरी बात मान नहीं रहा है।

योगी यती सन्यासवत्, कोई न पावत अंत॥

कोई भी इस मन का अंत नहीं पा रहा है।

तो फिर संसार-सागर से निकलने का सूत्र भी है या पड़े रहें? यहाँ पर आकर पूरे समीकरण बदल गये हैं। संतत्व की धारा बता रही है कि सद्गुरु पार कर देगा। क्या समाज मान चुका है इस मान्यता को। हम मान चुके हैं। पर कैसा गुरु हो, यहाँ समाज भटक गया। यहाँ भटक गया। इसलिए साहिब लक्षण बोल रहे हैं सद्गुरु के। वर्तमान में 60 लाख गुरु रजिस्टर्ड हैं। क्योंकि जब शास्त्रों ने इशारा किया कि गुरु के बिना नहीं होगा, तो सब गुरु बन गये।

किराने की दुकान घर की मूल जरूरतों को पूरा करती है, इसलिए गली-2 में है यह। इस तरह जब संसार-सागर से गुरु बिना पार नहीं होना है तो आदमी ढूँढ़ रहा है। अच्छी बात है कि लोग गुरु करना चाहते हैं; पर भटक गये कि कैसा हो।

बहुत गुरु हैं अस जग माहिं। हरे द्रव्य दुख कछु नाहीं॥

महत्वाकांक्षी लोग इसमें आ गये। गुरु काफ़ी हो गये। ठाठ-बाट उत्तम हो गये। साहिब कह रहे हैं-

गुरुवा बड़े लबार। ठाँव ठाँव बटमार॥

इसलिए तो कहा-

पानी पीजिए छानि के, गुरु कीजिए जानि के॥

आगे कह रहे हैं-

गुरु के लक्षण कहत हौं, सुनो धीर चित्त लाय।

बहुत गुरु ऐसे हैं जो अपने स्वार्थों के लिए घूम रहे हैं। वे कल्याण नहीं कर सकते हैं, इसलिए-

बिन जाने जो गुरु करई। सो नहीं भवसागर से तरई॥

इसलिए सावधान कर रहे हैं साहिब।

जाका गुरु है आँधरा, चेला कहाँ को जाय।

अँधे अँधा पेलिया, दोनों कूप पराय॥

यहाँ सतर्क कर रहे हैं। फिर बोल रहे हैं-

गुरु के लक्षण कहत हौं, सुनो धीर चित्त लाय।

प्रथम लक्षण कह रहे हैं-निर्वासना। अगर बालब्रह्मचारी नहीं हो तो सन्यासी हो।

जाका गुरु है गीरही, चेला गिरही होय।

कीच कीच के धोवते, दाग न छूटे कोय॥

जब दुनिया के झंझटों में खुद उलझा है तो तुम्हारा क्या कल्याण करेगा!

फिर दूसरा हो-निर्बन्धन। तीसरा हो-सारग्राही यानी अपनी ही कमाई से खाने वाला हो। फिर अयाचक यानी माँगे नहीं।

माँगन मरण समान है, मत कोई माँगो भीख।

माँगन ते मरना भला, सतगुरु देते सीख॥

रहीम जी कह रहे हैं-

रहिमन ते नर मर चुके, जो कहूँ माँगन जाय।

उनसे पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहिं॥

कभी लोग मुझे भी परेशान करते हैं। मैं कहता हूँ कि गुरुजनों से आशीर्वाद माँगना है या पैसा! अगर देता हूँ तो हिदायत देता हूँ कि ले जाओ; मैं माँगूँगा नहीं। क्योंकि गुरुदेव का शब्द है कि पैसे का लेन-देन शिष्यों के बीच कम करना। यदि किया तो माँगना नहीं; नहीं तो शर्म के मारे आयेगा नहीं। पर जीवन में फिर भी हो जाता है।

तो कह रहे हैं कि अयाचक हो; माँगे नहीं। यह भीख तीन तरह की है। एक माँगना है मन से। कहना नहीं है मुख से।

एक आदमी हमारे गाँव में था। वो दूसरों के घर में रोटी खाता था। वो घर से खाना खाए बिना ही आता था और खाए बिना जाता नहीं था। पर उसका एक सिद्धांत था कि रोटी एक के घर नहीं खाता था। कभी किसी के घर तो कभी किसी के घर। चाहे कोई कितना भी बेशर्म बन जाए, पर आखिर कहना पड़ता था कि खाना खा लो। चाहे वे 1 बजे के बजाय 4 बजे खाते थे, तो भी रुकता था। पर उसका सिद्धांत था कि माँगता नहीं था। यानी मुँह से नहीं कहता था। पूरा गाँव जानता था कि यह आया है तो चाहे रात के 12 बज जाएँ, जायेगा नहीं। यह है मानस भिक्षा। यह भी भीख है। दूसरा है-वाचक भिक्षा। यानी मुँह से बोलकर माँग लेना। तीसरा है-अड़ी करके बैठ जाना कि नहीं दोगे तो जाऊँगा नहीं। यह है तामस भिक्षा। एक गुरु यह तीनों न ले। फिर वो क्या ले? आकाशवृत्ति। स्वयं अपनी इच्छा से जो कोई चरण में रखा। फिर क्या ज़रूरत है गुरु जी को वो भी लेने की? यदि अपनी कमाई खानी है तो क्या ज़रूरत पड़ी?

मेरे पास लोग आते हैं। कोई पंजाब से, कोई गोण्डा से, कोई पटना से। फिर उनको भोजन खिलाकर भेजना है या नहीं! फिर रहने के लिए बिस्तर देना है या नहीं! फिर नहाने के लिए बाथरूम का इंतजाम करना है या नहीं! या फिर कहूँ कि अपने घर से सब लेकर आना। 39 साल दीक्षा देते हो गये, पर किसी से आज तक कुछ माँगा नहीं है। उत्तम कुल में जन्म हुआ, न शादी की, न भीख माँगी। तो क्या अब माँगूँगा?

मैंने कभी अपनी वेबसाइट पर नहीं कहा कि इस पते पर चंदा दो। यह भी भीख है। लोग चंदा करते हैं; फिर परमात्मा की बात करते हैं। हम इनका विरोध करते हैं। फिर कुण्ड पर बैठने की फ़ीस। यह व्यापार है। हम इन्हें कोई डाकू नहीं कह रहे हैं। पर सावधान होना होगा न! कल्याण के लिए सही दिशा ढूँढ़नी होगी न!

तो पाँचवाँ, समदर्शी हो। अमीर आए, गरीब आए, सबके लिए समान हो। फिर छठा, सर्वज्ञ हो। यथार्थ में आत्मज्ञान हो; आत्मा को जानने वाला हो, ताकि शंकाओं का निराकरण कर सके। सातवाँ, ईश्वर में मिल चुका हो। तब सुरति को चेतन कर देगा। जब ऐसा गुरु मिल जाए तो समर्पित हो जाना।

इस तरह से सद्गुरु पार कर देगा। न योग से पार होना है, न किसी विद्या से, न तीर्थ से, न पूजा से।

गुरु बिन भव निधि तरई न कोई। जो विरंच शंकर सम होई॥

वो कैसे काटता है बंधन? इसी में पूरी रूहानियत है।

गुरु पारस गुरु परस है, गुरु अमृत की खान।

शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

गुरु संसार-सागर से शर्तिया पार कर देता है। अंधकार है तो रोशनी का सृजन करके आगे जाया जा सकेगा। वो जीवित नाम देता है।

कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होय।

मूल नाम जो गुप्त हैं, जाने बिरला कोय॥

यहाँ साहिब सावधान कर रहे हैं। वो न बोला जा सकता है, न लिखा जा सकता है, न पढ़ा जा सकता है। जब वो देता है तो सुरति को चेतन कर देता है। मन के किसी हुक्म को तब आत्मा नहीं मानती है। मन पड़ा रह जाता है।

मन जाता है जाने दे, गहके राख शरीर।

उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर॥

ठीक मर्ज पर दवा दे दी गुरु ने। मन ने भटकाया था; उसी को बाँध दिया गुरु ने।

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।

अंतर हाथ सम्हार दे, बाहर मारे चोट॥



सार शब्द है अधर अटारी। असंख्य सूर्य पुरुष उजियारी॥
आदि शब्द सो नाम अपारा। ग्रन्थन से वह रहे नियारा॥

शब्द शब्द सब कोई कहे वह तो शब्द विदेह।
जिभया पर आवे नहीं निरख परख के लेह॥

अन्तर्वाहक शरीर का रहस्य

कुछ समय पहले लेख पढ़ा था अखबार में। प्रश्न था कि क्या हमारे पूर्वज सच में ब्रह्माण्ड में यात्रा करते थे? जब हम इन चीजों पर चिंतन करते हैं तो थोड़ा-2 अटपटा अनुभव मिलता है। कभी नाना मत-मतान्तरों के साधक आते हैं, अपनी-अपनी विचारधारा सामने रखते हैं। कभी कोई कहता है कि यह चीज़ मिली। दूसरा कहता है कि फ़लानी चीज़ मिली। विवाद होता है। कुछ कहते हैं कि साधना में पहले फ़लानी चीज़ मिलती है; कुछ कहते हैं कि साधना में पहले फ़लानी चीज़ मिलती है।

जितनी भी साधनाएँ हैं, पंच मुद्राओं के गिर्द घूम रही हैं। क्या पूर्वज ब्रह्माण्ड की यात्राएँ कर रहे थे? कैसा शरीर था? कैसे जा रहे थे? क्या भौतिक शरीर से जा रहे थे? अगर हाँ तो इसके जाने के लिए एक वाहन चाहिए। क्योंकि कम-से-कम इस शरीर में बिना किसी वाहन के जाने की क्षमता नहीं है। यह नहीं जा सकता है बिना वाहन के। जैसे अनेक यान अंतरिक्ष में जा रहे हैं। भारत स्पेस टेक्नालॉजी में चौथे नम्बर पर आ गया है। पहले नौवें नम्बर पर था। ब्रिटेन, रूस आदि इससे आगे हैं।

तो शरीर में साधन नहीं है। कोई सोचे कि उड़ूँ तो नहीं उड़ पायेगा। क्योंकि शरीर में साधन नहीं है। इस तरह शरीर से किसी साधन के बिना, किसी यान के बिना नहीं जा सकते हैं। तो पूर्वज सच में ब्रह्माण्डीय यात्राएँ कर रहे थे या नहीं?

मैं कहा कि अपनी आध्यात्मिक यात्राओं के बारे में लिखूँगा। पर जब बच्चे छोटे होते हैं तो माँ व्यस्त रहती है। इस तरह अभी संगत को मजबूत करना है; मेरे पास समय नहीं है। अभी सत्संग करने हैं। नहीं तो ऐसा होगा जैसे एक माई आई, कहा-सिर दर्द होता है। मैंने कहा-श्रद्धा रखो। उसने कहा कि सब करती हूँ, नाम-भजन भी करती हूँ, आरती भी करती हूँ, माता का नाम भी लेती हूँ, पर सिर का दर्द नहीं जाता है। यानी उसे बात समझ नहीं आई थी कि एक भक्ति करनी है। जब मैं कई दिन नहीं मिलता हूँ तो मन हावी हो जाता है।

मैं जब लिखूँगा तो काफ़ी कंसंट्रेट होकर लिखूँगा; इस अवस्था से हटकर लिखूँगा। तो हमारे पूर्वज आध्यात्मिक यात्राएँ करते थे। आप साहिब को पुकारते हैं तो वो पहुँच जाते हैं। वो शर्तिया आपके पास पहुँच जाते हैं। यानी कुछ ऐसा भी शरीर है, जो स्पीड में चलता है। वो प्रभु भी ऐसे ही पहुँच जाता है।

एक बार मीटिंग में मैंने पूछा कि मेरा नामी हो तो क्या उसके पास प्रेतात्मा आयेगी? एक रतनहिंस ने हाथ खड़ा किया; कहा-नहीं। मैंने कहा कि अनुभव है क्या? वो बोला कि रामगढ़ में किसी लड़की ने बहुत उत्पात मचाया हुआ था; सबको मार रही थी। किसी ने गारूराम से आकर कहा कि तुम साहिब के नामी हो; देखो कि क्या बात है। गारूराम हिचका। उसने मुझे कहा। मैंने मन-ही-मन आपसे प्रार्थना की, कहा कि लाज रख लेना; मुझे कुछ पता नहीं है। कहा-मैंने वहाँ जाकर लड़की का हाथ पकड़ा और पूछा कि क्या बात है बेटी? उसने कहा-ठीक हूँ; वो देखो, वो गेट के बाहर खड़ी है; आपको देखकर भाग गयी है; अन्दर नहीं आ पा रही है। वो लड़की कोई नाटक नहीं कर रही थी। सच में ऐसा था। फिर उस लड़की को विश्वास हो गया और उसने अगले ही दिन आकर रामगढ़ में नाम ले लिया।

यानी कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें हम समझ नहीं पा रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने यात्राएँ कीं तो कुछ शरीर हासिल किये होंगे। बिलकुल। हरेक

के पास छः शरीर हैं। वो इस शरीर से भी चेतन हैं। उनसे बड़े काम होते हैं। जैसे आप कपड़े पहनकर सत्संग में आते हैं। पर कुछ घर में भी होंगे। वो खास मौकों के लिए रखे होंगे। शादी-व्याह बगैरह में जाने के लिए। इस तरह इस शरीर में भी छः शरीर हैं। कभी आप मुझसे रू-ब-रू होते हैं। वो स्वपन नहीं होता है। वो सच होता है। मैंने एक सत्संग में पूछा कि क्या किसी ने अपने शरीर से निकलकर अपने शरीर को देखा है? एक लड़की ने हाथ खड़ा किया। उसने शादी नहीं की है। एक दिन घर वालों ने उसकी सगाई कर दी। ऐसे में वो एक दिन रौंजड़ी में आई; कहा कि मैं शादी नहीं करना चाहती हूँ। ये सब मेरी मरजी के खिलाफ़ कर रहे हैं। यदि आप कहेंगे तो मानेंगे। तब मैंने उसके घर वालों को बुलाकर कहा कि उन्हें ना कर दो।

तो बोली कि एक बार मैं ध्यान में थी। इतने में मेरी छोटी बहन ने आकर भजन का टेप लगा दिया। मेरी सुरति चढ़ रही थी। पर टेप बज रही थी तो मुझे परेशानी हो रही थी। मेरा भजन जम रहा था, पर टेप से अड़चन हो रही थी।

आप देखना कि सुबह धर्मस्थानों आदि में 4 बजे ज़ोर के साथ टेप लगा दी जाती है। इससे साउण्ड वायलेंस होता है। मुम्बई आदि बड़े शहरों में ऐसा करने वाले को थाने में ले जाते हैं। यदि आपको भजन लगाने हैं तो समय है सूर्य निकलने से 15 मिनट पहले। यदि हमारा संगीत पब्लिक को परेशान कर रहा है तो यह ठीक नहीं है। आप तो जबरन सुना रहे हो न!

तो लड़की ने कहा कि छोटी बहन ने भजन लगा दिया। हालांकि भजन आपके ही थे, पर डिस्टर्ब लग रहा था। मैं सोचूँ कि उठूँ और बंद करके आऊँ। पर सुरति जम रही थी तो मैं उठने के मूड में नहीं थी। इतने में मुझे लगा कि मैं उठी, डेक को बंद किया और वापिस अपने शरीर में आ गयी। जब वापिस खटिया पर आई तो देखा कि मैं तो सोई हुई हूँ। वो शरीर गुम हो गया। मैंने उठने पर सोचा कि किसी और ने बंद किया

होगा। मैंने अपनी बहन को बुलाकर पूछा कि तूने बंद किया क्या? वो बोली कि नहीं। जब मैंने देखा तो टेप भी आधी हुई थी। यह ख्वाब था या क्या था? फिर वो बोली कि डेक बंद करके वापिस आने पर मैंने अपना शरीर भी देख लिया था।

तो यह कैसा शरीर था? यह अन्तवाहक शरीर था। उसकी तीव्र इच्छा थी कि बंद करूँ। तीव्र इच्छा के कारण अन्दर की ताकत उठी और बंद करके आई।

आपके साथ में बड़ी ताकतें काम कर रही हैं। आप समझ नहीं पा रहे हैं। कभी कोई खतरा आता है और आपको कुछ समझ नहीं आती है। पर आप अनुभव करते हैं कि कोई ताकत आई और आपका काम करके चली गयी। वो खतरे को टाल देती है।

अवतारसिंह कभी ड्राइविंग करता है तो नींद आ जाती है। ऐसे में जहाँ स्कूटर के निकलने की जगह भी नहीं होती, वहाँ से निकल पड़ता है। दूसरे ट्रक बगैरह के ड्राइवर गालियाँ बकते रहते हैं। उन्हें खुद समझ नहीं आती कि बच कैसे गया।

शरीर में छः शरीर भी काम करते हैं और साहिब की ताकत भी काम करती है। इसलिए इसे नारायणी चोला कहा गया। छः शरीर हैं—स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, ज्ञान और विज्ञान। जो वो लड़की का शरीर उठा, वो ख्वाब नहीं था। वो चेतन है। वो कहीं इस स्थूल शरीर से भी चेतन है। उसमें साधक मानता है कि मैं हूँ। इन अन्तवाहक शरीरों द्वारा ही संत-महात्मा किसी के पास भी पहुँच जाते हैं; बात भी कर लेते हैं। इंसान का मस्तिष्क नहीं पड़ पाता है; सोचता है कि ख्वाब तो नहीं था!

चित्रौर में एक ठाकुर साहब किताब पढ़ रहे थे। पढ़ते-2 उन्हें लगा कि मैं वहाँ आ गया हूँ। उन्होंने पत्नी को कहा कि साहिब आए थे; कहाँ गये? वो बोली कि नहीं। वो बोला कि मैंने देखा। ये चीजें होती हैं।

कभी प्रेतात्माएँ भी आकर मुलाकात कर लेती हैं।

छः शरीरों में देखते हैं कि कौन-सा शरीर कहाँ-2 जा सकता है। स्थूल शरीर यहीं पृथ्वी पर काम कर सकता है। आप चाहें कि जम्मू में बैठकर कलकत्ता में देखें तो दिखेगा; पर शरीर यह नहीं होगा। कोई कहता है कि क्राइस्ट तीन दिन बाद जी उठा था। मैंने पादरियों आदि से बात की; पूछा, पर कोई सही-सही जवाब नहीं दे पाया। मैंने पूछा कि यदि जी उठे थे तो जीवन जारी क्यों नहीं रखा? फिर कहाँ गये? किसी के पास जवाब नहीं था। कहा कि शिष्य ने देखा। मैंने कहा कि उनका अन्तर्वाहक शरीर देखा था।

अखनूर में मेरे भतीजे का शरीर छूटा तो वो खुद मेरे पास आया और बताया कि मेरा शरीर छूट गया है। तब मैंने जाकर देखा तो सच में दीवार गिर गयी थी और उसका शरीर छूट गया था। फिर बाद में उसकी बहन ने बोला कि एक दिन मैं सो रही थी तो मुझे जगाया और कहा कि मैं मरा नहीं हूँ; देख न, मैं जिंदा हूँ। वो बाली कि यह ख्वाब नहीं था। फिर दो-चार नामियों को और मिला। कभी ऐसा समय होता है। 4-5 लोगों ने बोला कि बड़ा तेज़ था उसके पास। फिर मैंने उसे बुलाकर कहा कि तू अब किसी से भी न मिलेगा।

हिंदू धर्म में जलाते क्यों हैं? यह रहस्य है। हमारे धर्म में कुछ भी ग़लत नहीं है—न श्राद्ध, न अनुष्ठान; पर सब निरंजन के दायरे में हैं। हम ग़लत नहीं कह रहे हैं। न किसी पंथ के गुरु के लिए कहा कि डाकू है, केवल कहा है कि निरंजन तक की भक्ति कर रहे हैं। इतना ही बोला है। यह नहीं कहा कि गंदे चरित्र का है। हमने नहीं बोला। हमने यूँ कहा कि संत-मत नहीं है। क्योंकि भूत-प्रेत भी मान रहे हैं, अन्य कर्मकाण्ड भी कर रहे हैं।

तो हमारे धर्म में ग़लत कुछ नहीं है। एक कारण है। पार्थिव शरीर को जलाते क्यों हैं? क्योंकि आत्मा शरीर के छूटने के बाद भी उसके गिर्द मण्डराती है; वापिस आना चाहती है। आत्मा को बताते हैं कि तेरा शरीर हमने जला दिया है; यह ख़त्म हो गया है; अब इसकी ममता नहीं कर।

तू भटकना छोड़कर अपने गन्तव्य की ओर चल। इसलिए शरीर जलाते हैं कि बताते हैं कि तेरा पिंजड़ा खत्म कर दिया है।

फिर गरुड़-पुराण क्यों पढ़ते हैं? सभी गरुड़-पुराण का पाठ करते हैं। गरुड़-बोध में साहिब ने गरुड़ जी को आत्मज्ञान दिया है। 10-11 दिन तक गरुड़-पुराण पढ़ा जाता है। इतने दिन तक वो वहीं रहती है। वो किसी को दिखती नहीं, पर वो सबको देखती है। उसे सुनाते हैं। मैंने ऐसी हज़ारों देखी हैं। आप भी देख सकते हैं। एकाग्र होकर मरने वाले का ध्यान करें तो दिख जायेंगी। पर ऐसा क्यों करना? सुरति में बड़ी शक्ति है। तभी तो सभी ध्यान एकाग्र करने को बोल रहे हैं। साहिब कह रहे हैं—

सुरति से देख सखी वो देश ॥

तो गरुड़-पुराण में आत्मा की कथा है। इसलिए पढ़ते हैं कि आत्मा सुने और उस लोक में पहुँचे।

साहिब धर्मदास से कह रहे हैं—

**प्रथम गरुड़ से भेंट जब भयऊ। सत्य नाम कह बोल सुनयऊ ॥
धर्मदास सुनु कह्यो बुझायी। जेहि विधि से ताही समझायी ॥**

कहा कि मैंने सत्य नाम का संदेश दिया।

तब गरुड़ जी ने पूछा कि आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं?

**कह ज्ञानी है नाम हमारा। दीक्षा देन आयऊ संसारा ॥
सत्यलोक से हम चलि आये। जीव छुड़ावन जग महँ आये ॥
सत्यपुरुष मोहि आज्ञा दीन्हा। सत्य शब्द हम लेइ तब लीन्हा ॥**

कहा कि मैं अमर-लोक से आया हूँ। सत्यपुरुष ने मुझे जीवों को छुड़ाकर ले आने का हुकुम दिया है।

यह सुनकर गरुड़ जी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा—

**सुनत गरुड़ अचम्भो माना। सत्य पुरुष आही को आना ॥
प्रत्यक्ष देव कृष्ण कहावें। दश औतार सो धरि धरि आवें ॥**

कहा कि यह सत्य-पुरुष कौन हैं? कृष्ण ही तो प्रत्यक्ष देवता कहे जाते हैं और वही अवतार धारण करके आते हैं।

तब साहिब ने कहा—

तब हम कहा सुनहु तुम स्याना । सत्य पुरुष तुम नहिं पहचाना ॥
 अवतारन का कहो विचारा । इनते साहिब रहै नयारा ॥
 जाकर कीन्ह सकल विस्तारा । सो साहिब नहिं जग औतारा ॥
 योनी संकट वह नहिं आवे । वह तो साहिब अछय रहावे ॥
 जहाँ लगे जो जग में आये । तहाँ लगि सबही अंश कहाये ॥

कहा कि तुम सत्य-पुरुष को नहीं जानते हो । वो साहिब अवतारों से न्यारा है । उसी का सारा विस्तार है । वो संसार में अवतार धारण करके नहीं आता है । वो माया का शरीर लेकर नहीं आता है । वो गर्भवास में नहीं आता । जो संसार में आता है, वो सब अंश कहा जाता है । क्योंकि जो भी संसार में माता के पेट से आया और माया का शरीर धारण किया, वो नष्ट भी होगा; पर वो साहिब अछय है ।

ताते साहिब अछय है , तीन लोक सों न्यार ।

योनि संकट ना आवई, ना वह लेइ औतार ॥

वो तीन लोक से परे है । माया में नहीं आता ।

तबही गरुड़ जो बोलहिं बानी । कौने देश बसत है ज्ञानी ॥
 हम वाहन हैं कृष्ण के भाई । तिनकी गति तुमहूँ नहिं पाई ॥
 तीनि लोक के ठाकुर आही । तिनके आगे कौन को शाही ॥
 तीनि लोक के ठाकुर कहिये । तिनके और कौन को गहिये ॥
 सोई मोहि अब देहु बतायी । मोरे मन चिंता समुहायी ॥
 दूसर कौन सो देहु बतायी । हमरे मन गुमान नहिं आयी ॥

गरुड़ जी को विश्वास नहीं हुआ तो कहा कि मैं तो कृष्ण जी का वाहन हूँ, पर तुम उन्हें नहीं जानते हो । वो तो तीन लोक के स्वामी हैं । उनके सिवा और कौन है?

साहिब ने कहा—

सुनहु गरुड़ यह वचन हमारा । वह साहिब है सबसे न्यारा ॥

यह तो सबै ईश्वरी माया। उपजहिं विनसहिं बहुरि विलाया॥
 वह नहिं आवे नहीं जाहीं। वह तो सदा अजर घरमाहीं॥
 उनकी आज्ञा इन पर आवें। तब इन गरभ वास सो पावें॥
 तुम पर सदा कृष्ण असवारी। काहे न दाया करहिं विचारी॥
 हम तो शब्द संदेशी आये। योनी संकट नहिं निरमाये॥
 तब हम उसको तत्व लखावा। होइ विदेह तब वचन सुनावा॥

साहिब ने कहा कि वो साहिब ईश्वरी माया से न्यारा है। वो न कहीं आता है, न कहीं जाता है। न वो कभी उत्पन्न होता है, न कभी नष्ट होगा।

ऐसे में तब अमर-लोक और आत्मा के विषय में बड़ी बात हुई। वही ज्ञान गरुड़-पुराण में है। इसलिए उसका महत्व है।

जब भी शरीर छूटता है तो क्या करते हैं कि पहले भूमि पर लिटा देते हैं। फिर स्नानादि करवाते हैं। फिर मुँह पर चद्दर डाल देते हैं और निजि लोग देखने आते हैं। फिर शोक के लिए घड़ा आदि लाते हैं और रिश्तेदार, पास-पड़ोस वाले इकट्ठा होते हैं। गंगाजल के मिश्रण से स्नान करवाते हैं ताकि प्रेतात्मा पास में न आए।

अब हम क्या कर रहे हैं? हम कह रहे हैं कि गुरु-मंत्र करना, प्रेतात्माएँ नहीं आयेंगी।

तो फिर श्मशान में ले जाकर गायत्री मंत्र बोलकर क्रियाएँ की जाती हैं; घड़ा फोड़ा जाता है; गंगा जल छिड़का जाता है। पूर्व में शीश रखा जाता है। श्मशान में जाकर भी गंगा जल छिड़का जाता है ताकि प्रेतात्माएँ उसे मित्र बनाकर न ले जाएँ।

अब हम गुरुमंत्र करते हैं, क्योंकि गुरुमंत्र के आगे कोई प्रेतात्मा आयेगी ही नहीं।

तो फिर बाद में अस्थियाँ भी गंगा जी में छोड़ने जाते हैं। क्योंकि शरीर से प्रेम होने के कारण उसके नष्ट होने पर भी अस्थियों तक जाती है प्रेतात्मा। उसे विसर्जित कर देते हैं ताकि प्रेतात्मा वहाँ अन्दर न जा सके।

हमारे यहाँ दृष्टि डलवाते हैं। यह भी इसलिए कि प्रेतात्मा न आ सके। पर कर्मकाण्डी परेशान करते हैं और भटका देते हैं। जब हंसा ही निकल गया तो क्या करना!

हंसा निकला ताल सुखाना ॥

तो आत्मा मण्डराती है। घर से निकलते हैं तो इच्छा करके जाते हैं कि फ़लाना काम करके वापिस आना है। अब रास्ते में किसी कारण से शरीर छूट जाए तो घर में मोह रह जाता है। इसलिए कहा कि हर समय गुरु में ध्यान रखना। नहीं तो वहीं घूमेगी आत्मा।

तो गरुड़-पुराण 11 दिन तक इसलिए करते हैं कि उसे अभी भी यकीन नहीं होता है कि मेरा शरीर छूट गया है। गरुड़-पुराण सुनने से उसे आत्मज्ञान हो जाता है कि मैं तो शरीर नहीं हूँ।

कबीर-सागर के अन्दर गरुड़-बोध में आत्मज्ञान है। साहिब ने गरुड़ को आत्मज्ञान दिया। देवी-भागवत-पुराण कोई नहीं पढ़ रहा है; स्कन्ध पुराण कोई नहीं पढ़ रहा है। क्योंकि साहिब ने गरुड़ जी को जो आत्मज्ञान दिया, वो है उसमें।

एक बार गरुड़ जी ने विष्णु जी से प्रार्थना की; कहा कि मैं आपको लिए-लिए घूमता रहता हूँ; मुझ पर भी अपनी कृपा करो; आत्मा का ज्ञान दो। विष्णु जी ने कहा कि पृथ्वी पर एक आदमी तुम्हें आत्मा का ज्ञान दे सकता है और वो है-मुनीन्द्र। तो उसमें पूरे तत्व का ज्ञान है। साहिब और गरुड़ का संवाद है उसमें।

कई धुरंधर जानते भी हैं, पर पेट पालना उनकी मजबूरी है। इसलिए चाहते हैं कि वहाँ तक न पहुँचे कोई भी। साहिब-बंदगी पंथ में पहुँचने से रोका जाता है। क्योंकि धंधा ही चौपट हो जाता है पाखण्डियों का।

हमारी नक़ल पूरी-पूरी की जाती है। पर उनकी बात में वजन नहीं लगता है। बोलते साहिब के दोहे हैं, पर बात का अर्थ कुछ और ही निकालने लग जाते हैं; अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। घूमकर फिर पाखण्ड की तरफ आ जाते हैं।

रात को सोते समय भी गुरु का ध्यान करके सोना। ऐसे में रात

में भी गुरुदर्शन ही करते रहेंगे। यदि प्यास लगी हो और बिना पानी पिए ही सो गये तो सपने में भी पानी ही ढूँढ़ते फिरेंगे। यदि पेशाब करने की इच्छा हुई और आप बिना किये सो गये तो पूरी रात पेशाबघर ही ढूँढ़ते रहेंगे। तो गुरु का ध्यान करके सोओगे तो क्या वहाँ नहीं घूमोगे!

एक आदमी था। अपनी बेटी को कहा कि पानी लाना। वो पानी लेने गयी। इतने में टी.वी. लगा था। करेंट पड़ी और उसका शरीर छूट गया। लड़की कहती है कि पापा जब भी मिलते हैं, पानी माँगते हैं। क्योंकि उस समय सुरति पानी की तरफ थी।

तो अन्य कर्मकाण्ड भी करते हैं। पितर-तर्पण आदि भी करते हैं। मैं कहता हूँ कि इन सबकी ज़रूरत ही नहीं है। फिर अच्छे लोगों को खिलाया जाता है। ब्राह्मणों को इसलिए खिलाते हैं कि ब्रह्म में रमण करने वाला है तो वहाँ तक पहुँच जायेगा। इसलिए यू.पी. में एक बड़ी अच्छी बात है कि यदि ब्राह्मण माँस, शराब आदि का सेवन करने वाला हो तो उसके हाथ का पानी तक नहीं पीते हैं।

अब मैं कहता हूँ कि भण्डारा कर दो। वो कहते हैं कि घर में करें। मैं कहता हूँ कि आश्रम में करो तो अच्छा है। इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं तो आपका भण्डारा खाता नहीं हूँ; आप ही तो खायेंगे। यह इसलिए कि हमारे यहाँ बड़ी निर्मल आत्माएँ हैं।

आपके पास बड़ी शक्तियाँ हैं। आत्मा इसे जान रही है। पर मन आभास करवाता रहता है कि कुछ नहीं है। आत्मा कहती है कि बहुत कुछ, बहुत कुछ।

जो रिश्तेदार तंग करते हैं, उनकी भूल नहीं है। क्योंकि उन्हें शुरू से यही पढ़ाया गया है। मुझे अपनी माँ को समझाने में 18 साल लग गये थे। वो ठाकुर पूजा करती थी। मुझे चिढ़ आती थी, क्योंकि रोटी बन जाती तो भी आधा घण्टा रुकना पड़ता था। माँ पहले झूला झुलाती थी, ठाकुर जी को भोग लगाती थी, तब हमें मिलता था। बच्चों को भूख लगी होती है।

मैं तो कण्ट्रोल में हूँ; नहीं तो मुझे भी लोगों ने पता नहीं क्या-क्या बना देना था। एक ने मुझे बाँसुरी दी। मैंने क्या करनी! एक ने चाँदी

का मुकुट दिया। अब मैं मुकुट पहनना है! मुझे तो लोगों ने कान्हा का नाना बनाना था। मैं अपनी सीमा में हूँ; आप कुछ भी करें।

छोटे भाई की शादी थी; कहा कि कोर्ट-पेंट पहनना। मैंने कहा कि मैं नहीं पहनूँगा। वो बोला कि फौज में तो पहनते थे। मैंने कहा कि वो मजबूरी थी। वो बोला कि फिर मैं सेहरा भी नहीं पहनूँगा। मैंने कहा कि यह तो अच्छी बात है; मैं तो चाहता हूँ कि तू उलझनों में मत फँस। फिर कहा कि आप शादी में नाचना। मैंने कहा कि वो तो मैं कभी नहीं करूँगा। वो बोला कि फिर मैं शादी ही नहीं करूँगा। मैंने कहा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है। मैं तो चाहता हूँ कि तू इस झमेले में पड़ ही नहीं।

एक बिहारिन माई ने सत्संग में खड़े होकर अपनी भाषा में कहा कि आप सत्संग बंद करो और भजन गाओ। आप जो घड़ा लेकर भजन गाते हैं, वो बड़ा अच्छा लगता है। पता है, अगर मैं नाचूँगा तो बड़ा प्यारा नाचूँगा। एक लड़की नाच रही थी। मैंने कहा—यह क्या नाच रही है; मैं नाचकर बताता हूँ। मैं नाचा तो उसको हँस-हँस के पेट में दर्द हो गया। वो बोली कि यह भी कोई नाच है! आपका कुछ भी दिख नहीं रहा है—न बाजू, न टाँगें। मैंने कहा कि तुमने ऐसा डाँस देखा क्या? तूने बड़े डाँस देखे होंगे, पर इतना कभी नहीं हँसी होगी। देखा, मेरा डाँस कितना निराला है। कुछ मोटे-मोटे गुरुजी होते हैं और नाचने लगते हैं। डाँस मोटा आदमी कर ही नहीं सकता है। तो फिर सब कहने लगे कि गुरुजी हमें भी वो नाच दिखाओ। मैंने कहा कि मैं कोई नर्तक नहीं हूँ। फिर साहिब तो कह रहे हैं—

नाचना कूदना ताल पीटना, रांडिया खेल है भक्ति नाहिं ॥

मैं नाटक नहीं करना है। यदि मैं बालों को कर्लिंग करता तो आपका ध्यान मेरे बालों की तरफ ही होना था, यदि मैं मेरे कुर्ते पर कुछ छापा पड़ा होता तो आपका ध्यान बार-बार वहीं जाना था। मैं चाहता हूँ कि आपका ध्यान मेरे ज्ञान की तरफ हो; अन्य जगह न उलझे। बाहर भ्रमित नहीं करना है।

तो छः शरीर हैं। इसलिए आप ध्यान में बैठें, क्योंकि—

समझ पड़े जब ध्यान धरे ॥

हम स्थूल शरीर से दुनिया के काम कर सकते हैं; पर यह उड़ने में सक्षम नहीं है। सूक्ष्म शरीर सपने में मिलता है। विचार तो करो कि कितने काम करते हैं! भागते भी हैं, ठगी भी कर लेते हैं। सपने में तमाम चीजें होती हैं। बड़ा अज्ञात-सा शरीर है। निकलकर जाते हैं, पर पता नहीं है। पूरा जीवन हो गया स्वप्न देखते-देखते, पर ज्ञान नहीं है कि क्या है, कैसे मिलता है।

फिर तीसरा है—कारण शरीर। हरेक इस्तेमाल कर रहा है। आंतरिक दुनिया बड़ी निराली है। तीसरे का भी प्रयोग करते हैं। पक्का। सभी कर रहे हैं। बड़ा एकाग्र शरीर है। कभी किसी को गुमसुम देखते हैं तो हिलाते हैं; कहते हैं कि कहाँ हो? यह अवस्था सभी की आती है। जिसका ध्यान कर रहा था, वहीं पहुँचा था। यह क्या चीज थी? बड़ी ख़ास चीज़ थी। यह चला गया था कारण शरीर।

कभी लगता है कि किसी का ध्यान घूम रहा है। यह कैसा सिस्टम था कि जिसका ध्यान किया जाए, उसी को लगता है कि उसका ध्यान घूम रहा है, बाकी को नहीं। तो आप कहते हैं कि उसका ध्यान आ रहा है। फिर कुछ देर में वो खुद वहाँ पहुँच जाता है। वो अचानक आ जाता है। आप सोचते हैं कि यह क्या हुआ! इतने में मन भुला देता है।

एक दिन भानूमती कह रही थी कि साहिब जी, जब आप बाहर चले जाते हो तो राँजड़ी को सूना कर जाते हो। तब दिल नहीं लगता है। बड़ी मुश्किल होती है। पर जब आने वाले होते हो तो पूरी चेतनता हो जाती है। मैंने कहा कि जब मैं जाता हूँ तो मेरा पूरा ध्यान वहाँ होता है। पर आने से पहले यहाँ का ध्यान होता है।

तो जब भी गहरे चिंतन में चले जाते हैं तो जहाँ का चिंतन होता है वहाँ चले जाते हैं।

जात न लागे बार ॥

वो सात समुद्र पार भी पल में पहुँच जाती है। तो चौथा है—महाकारण शरीर। जो गुड़िया ने बोला कि वो डेक को बंद करके वापिस

शरीर में आई, वो यही महाकारण शरीर है। यह साधकों को मिलता है। इससे वे कुछ भी कर लेते हैं। पर यह ऐसे नहीं मिलता है। दूध में घी है, पर मथे बिना नहीं मिलता। इस तरह यह शरीर भी साधारण नहीं है। पाँचवाँ महायोगेश्वरों को मिलता है। वो है ज्ञान-देही। इसे पाकर वे ब्रह्मनिष्ठ कहलाते हैं। छठा, आँखों के बिना देखता है, पैरों के बिना चलता है। यानी यह शुद्ध ध्यान है। इसके द्वारा देख भी सकते हैं, चल भी सकते हैं, काम भी कर सकते हैं।

इसमें बैठकर हमारे पूर्वजों ने यात्राएँ कीं। सुनने को मिलता है; कोई गप्प नहीं है। नारद विष्णु लोक, शिवलोक आदि कहीं भी चले जाते थे। यह गप्प नहीं है। सुनने को आता है कि वशिष्ठ आदि इंद्रलोक में चले जाते थे। लोग सोचते हैं कि शायद यह कल्पना थी। नहीं! इसमें सुरति का खेल है। सुरति में बड़े रहस्य हैं, बड़ी ताकतें हैं। इसे संभालना है; गुरु में लगाए रखना है।

एक लड़का था। वो माँ को रोज़ तंग करता था। कभी कहता कि मलाई खानी है, कभी कहता कि दही खानी है, कभी कहता कि बर्फी खानी है। माँ बना देती थी। एक दिन उसके बाप ने कहा कि तू माँ को तंग करता रहता है। तू ऐसा किया कर कि दूध पी लिया कर; उसी में सब कुछ है। इस तरह गुरु का ध्यान कर लेना; पूरे मामले इसी में हैं। वेद भी गवाही दे रहा है।

ध्यान मूलम् गुरु रूपम्, पूजा मूलम् गुरु पादकम्।

मंत्र मूलम् गुरु वाक्यम्, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा॥

पर लोग हैं कि बिना तर्क के ही बहस करने लगते हैं। एक तेली था। वो जाट को छेड़ता था; कहता था—जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट ॥ जाट को गुस्सा आ गया। वो चिढ़ गया। उसने कहा—तेली रे तेली, तेरे सिर पर कोल्हू ॥ तेली ने कहा—जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट तो मुहावरा है, जँचता है, पर तेरी बात जँच नहीं रही है। जाट ने कहा कि चुप रह; उसके वज़न से दब जायेगा। यह हुई तर्क रहित बात। यह नहीं कर रहे हम। हमारी हर बात तर्कसंगत है।



मन तरंग में जगत भुलाना

कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग खोजे बन माहिं ।

ऐसे घट घट साईया, मूरख जानत नाहिं ॥

वो सर्वशक्तिमान हमसे अभिन्न है, हममें निवास कर रहा है। पर कैसी विडम्बना है कि तो भी हम उसके अस्तित्व को समझ नहीं पा रहे हैं। इसका मतलब है कि कुछ चीजें, कुछ ताकतें इस शरीर में रह रही हैं, जो हमें उसकी अनुभूति नहीं करने दे रही हैं। वो आत्मा की भी अनुभूति नहीं करने दे रही हैं।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे ।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए ॥

आत्मरूप को देखने में व्यक्तित्व की बाधा है। जो महसूस कर रहे हैं कि मैं हूँ, मैं फ़लाना हूँ, यह अनुभूति हमें अपनी आत्मा तक नहीं पहुँचने दे रही है। गुरु नानक देव जी कह रहे हैं—

नानक हौंमैं रहा अड़ाई ॥

यह 'मैं' केवल 'मैं' शब्द नहीं है। इसका अर्थ है—व्यक्तित्व, जिसकी हम अनुभूति कर रहे हैं। जो कह रहे हैं कि मैं हूँ, इसी का पूरा झमेला है। परमात्मा और हमारे बीच में 'मैं' की ही दीवार है, जो उसकी अनुभूति नहीं होने दे रही है। यही सुख-दुख अनुभव कर रहा है; यही अनुभव कर रहा है कि मेरा घर है; यही मित्र और शत्रु बनाता है। यह अनुभूति जो हो रही है, यह मन है। इसलिए साहिब कह रहे हैं—

तेरा बैरी कोई नहीं तेरा बैरी मन ॥

देखते हैं कि इसमें क्या है? क्या यह केवल मन ही है या आत्मा का भी मिश्रण है? इसमें आत्मा भी शामिल है, पर प्रमुख चीज़ है—मन। हमारी आत्मा ने अपने को व्यक्तित्व मान लिया, अपने को शरीर मान लिया। यह व्यक्तित्व क्या काम कर रहा है? यह आत्मा नहीं हो सकता है। इसमें राग-द्वेष भी है। कभी बुरा भी मान जाता है। क्रोध भी है। किसी से मार-काट भी कर लेता है। इसमें वासना भी है। कभी वासना से सराबोर हो जाती है। लोभ भी है। कभी ठगी भी करने लगता है। इसी में मोह भी है। मेरा बेटा, मेरी पत्नी करने लगता है। इसी में अहंकार भी है। किसी ने कुछ कह दिया तो जीवन-भर के लिए दुश्मनी। यह बहुत बड़ा धोखा है। इसी में दुनिया उलझी है। यही बोल रहा है। आत्मा इसी में उलझ गयी; इसी को अपना स्वरूप मान लिया।

चार अंतःकरण के संग आत्मा खराब।

जैसे नीच प्रसंग से, ब्राह्मण पीये शराब॥

आत्मा निर्मल है, पर व्यक्तित्व हावी हो गया है। यह विषमता रही। यह व्यक्तित्व अपने को महसूस कैसे कर रहा है? इसका आधार है—आत्मा। आत्मा की ताकत के बिना इसका वजूद नहीं है। तरंग मन की है, पर कृत आत्मा का होता है। मन कहता है कि आम खाना है; आत्मा खाने चल पड़ती है। इस मन की ताकत का एक रहस्य है। यह कैसे चलता है? आधार क्या है? अज्ञान। जब आत्मा अपने को समझ लेती है तो मन कोई भी क्रिया नहीं कर सकता है। वर्तमान में यह क्या क्रिया कर रहा है? मन ने कहा कि आम खाना है। इसे लागू करती है—आत्मा। आत्मा टाँगों से चलकर वहाँ तक पहुँचने के लिए हुक्म देती है; मुँह को चूसने के लिए हुक्म देती है। आत्मा की ताकत के बिना कुछ भी काम नहीं हो सकता है। यानी एक विरोधी ताकत हमें विचलित कर रही है।

जैसे हमारे विरोधी हमें रुकावटें देने की सोचते हैं। मिश्रीवाला में दुपहर को सत्संग होता था तो पास में एक ने मंदिर बना दिया। फिर जब भी सत्संग होता, तूते लगा देने। मैं परेशान नहीं होता हूँ। एक दिन

एक पंडित वहाँ गया। वो नामी नहीं था। उसने वहाँ जाकर उसे खूब डाँट लगाई; कहा कि इनके गुरु जी महीने में एक बार आते हैं और तुम हो कि बदतमीजी करते हो। यह क्या हरकत है? बंद करो इसे। यानी संसार में अच्छे लोग भी हैं; कुछ समझदार लोग भी हैं। जब भी ऐसे लोग कुछ गंदी हरकत करते हैं तो उन्हें क्या संदेश जाता होगा! जो उस पंडित जी की तरह अच्छे लोग होते हैं, वो सोचते होंगे कि जब भी गुरु जी आते हैं, ये लोग रुकावटें देते हैं। चित्रौर की भी यही कहानी है। यह सब वे एक डर के कारण करते हैं। वे चाहते हैं कि लोग इनकी बात न सुन पाएँ। क्योंकि जानते हैं कि इनकी बात सुनेंगे तो इनके पास चले जायेंगे, फिर हमारा धंधा ही चौपट हो जायेगा। यह काम छोटे-छोटे ही नहीं कर रहे हैं, बड़े-बड़े पंथ वाले भी करते हैं। क्योंकि जानते हैं कि यदि साहिब-बंदगी में चला गया तो हमारा छल, कपट समझ जायेगा और फिर हमारे चंगुल में कभी नहीं फँस पायेगा।

तो इस तरह मन भी रुकावट डालता है। क्योंकि यदि आत्मा एकाग्र हो गयी तो अपने को जान लेगी और फिर मन का काम खराब हो जायेगा। उसका छल, कपट सब समझ आ जायेगा और वो मन के चंगुल से निकल जायेगी। जैसे हमारे विरोधी लोगों को भ्रमित करते हैं कि साहिब-बंदगी में नहीं जाना है, ऐसे ही मन भी भ्रमित करता है।

मन जीव को भरमावे सोई। मन का कहा न कीजै कोई ॥

इसके बीच आत्मदेव बैठा भ्रमित हो रहा है। यह मन आत्मदेव को भ्रमित कर रहा है। आत्मा आँख बंद करके इसकी आज्ञा का पालन किये जा रही है। क्योंकि भूलवश इसने मान लिया है कि व्यक्तित्व मैं हूँ।

जब भी व्यक्तित्व को जानने की कोशिश करते हैं तो मन इसी तरह परेशान करता है। कभी दुनिया की तरफ ले जायेगा, कभी अगली-पिछली बातों की याद दिलायेगा, कभी तरंगें भेजेगा और फिर व्यक्ति इन्हीं तरंगों में बह जायेगा।

मन तरंग में जगत भुलाना ॥

उन तरंगों में ले जाता है।

पता है, आपका विरोधी आपको मजबूत बनाता है। इसलिए मेरा उनसे कोई बैर नहीं है। हमारे पंथ का कम समय में जो विकास हुआ, इसका कारण विरोधी ही हैं।

कुछ ने कुल्ले फूँके तो कितना फ़ायदा हुआ! मैं परेशान नहीं हुआ, पर मेरी संगत में जिद्द आई। जब कुल्लों की जगह पक्के मकान बनाना शुरू किये तो उनका सहयोग 100 प्रतिशत रहा। सारी में कुल्ला फूँका तो हॉल बनाने पर सब जुट गये। ऐसे नहीं जुटना था, पर तब एक जिद्द के कारण जुट गये। वे पक्के हो गये। यह पक्का किया विरोधियों ने। विरोधियों ने जितना काम किया, वो बताने में भी नहीं आ सकता है। कुंजवाणी में कुल्ला फूँका; अखनूर में भी फूँका। रखबंधू में फूँका तो एक करोड़ रुपया लगाकर चारदीवारी भी करवाई और पक्का भी बनाया। संगत ने ही तो बनाया। विरोधियों के बल पर ही संगत ने पूरा-पूरा सहयोग दिया। प्रचार भी इन्हीं विरोधियों के कारण हुआ। तभी तो साहिब कह रहे हैं—

निंदक मेरा मत मरो, जिओ आदि जुगादि।

कबीर सतगुरु पाइया, निंदक के परसादि॥

यह सतर्क करता है, जागरूक करता है। देखते हैं कि इस व्यक्तित्व का रहस्य क्या है। यह एक धोखा है। यह एक रेत के पहाड़ की तरह है। हवाएँ चलती हैं तो पहाड़ समतल में बदल जाते हैं और जहाँ समतल होता है वहाँ पहाड़ बन जाता है। इस तरह मन रेत के पहाड़ की तरह है। यह बाधक बनकर आत्मा के आगे आता है। सुख-दुख क्यों अनुभव हुआ? जब भी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हुई तो दुख हुआ। इच्छा हुई क्यों? यह मन ने की। इसका मतलब है कि विचार से देखें तो दुख और सुख के पीछे मन ही होता है। हमारी आत्मा के ऊपर बड़े तगड़े आवरण हैं। जैसे सोचने लगते हैं तो मन कोई-न-कोई चिंतन पैदा कर देता है। जब मैं कौन हूँ, जानने की कोशिश करते हैं तो मन जगत के पदार्थों की ओर ले जाता है। वो एलर्ट है, एक पल भी नहीं छोड़ रहा है।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे ।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए ॥

आप विचार करें। थोड़ा झाँककर देखें कि कितनी रुकावटें, कितना व्यवधान दे रहा है मन। जितनी भी युद्धें, विवाद आदि हो रहे हैं, मन के कारण हैं। तभी तो साहिब कह रहे हैं—

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीहृत पंडित काजी ॥

साहिब कह रहे हैं कि इस संसार का आधार ही मन है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

यह समझ नहीं आ रहा है। यह कहता है कि तमाचा मारो। पर यदि आप विचार कर लें तो बच सकते हैं। हम जितने भी काम कर रहे हैं, मन ही तो कर रहा है। इन्हीं से फिर सुख और दुख हो रहे हैं।

पी.टी. ऊषा को किसी ने पूछा कि आपका इतना स्टेमिना कैसे है? उसने बताया कि वो समुद्र किनारे रेत पर प्रेक्टिस करती थी। वहाँ तो पाँव पीछे की ओर जाते हैं। वीरेंद्र सहवाग पहले जब प्रेक्टिस करता था तो बैट के साथ बोरे में पत्थर बाँधकर प्रेक्टिस करता था।

दुनिया में सुख ढूँढ़ना तो बेवकूफी है। क्योंकि—

नानक दुखिया सब संसार ॥

क्यों? क्योंकि एक जाता है तो दूसरा आ जाता है। इनकी गिनती नहीं है। जल के वेग से बुदबुदे बनते रहते हैं। इस तरह सुख दुख आते रहते हैं। यदि थोड़ा सुखी होना चाहते हो तो दुखों से संघर्ष करने की क्षमता बढ़ा लो। पूरी समस्याओं का हल करके मजे से जीना चाहोगे तो यह नहीं होगा। जितना संघर्ष करना सीख लोगे, उतना सुखी हो जाओगे।

जो सुख को चाहो सदा तो शरण नाम की लेह ॥

तो यह मन जीव को दुखों के सागर की ओर ले जा रहा है। पर इसे कोई समझ नहीं पा रहा है।

जीव के संग मन काल रहाई। अज्ञानी नर जानत नाहीं ॥

अर्थात् सभी जीवों को नचा रहा है और किस-किस को क्या

क्या व्यवधान डाले? हम शास्त्रों में देख रहे हैं कि बड़े-बड़े ऋषियों ने तप किया, पर इसने तपस्या भंग कर दी। कौन भंग करवा रहा था? आत्मा नहीं जान रही है कि एक मन है, जो इन कार्यों के लिए प्रेरित कर रहा है।

पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै ॥

खामोश होकर देखना। आप ध्यान में बैठना तो भी यह नहीं सोचना कि अब यह चीज़ दिखे, अब उड़ूँ। एकाग्र होकर आप मन को देखना कि यह कहाँ जा रहा है, कैसे भ्रमित कर रहा है। जब आप मन को समझ जायेंगे कि यह कैसे-कैसे धोखा दे रहा है तो फिर हर समय सावधान रहेंगे। फिर आपकी अजपा-समाधि की अवस्था बन जायेगी, कभी ग़फलत में नहीं रहोगे।

खावता पीवता सोवता जागता, कहैं कबीर सो रहै माहिं ॥



चक्रिया सब रागन की रानी ॥

एक पट धरती चले, एक चले असमानी।
काल निरंजन पीसन लागे, सवालाख की घानी ॥
बड़े-बड़े इस जग में पिस गये, पिस गये योगी जिंदा।
छप्पन कोटि यादवा पिस गये, परे काल के फंदा ॥
नौ भी पिस गये दस भी पिस गये, पिस गये सहस अठासी।
कथनी कथ-कथ पिस गये भक्ता, भये गर्भ के वासी ॥

एक हंस के मन जो आई

मनुष्य ने बनावटी भाषा का सृजन किया है। पशु लोग स्वाभाविक भाषा बोलते हैं। एक गूँगा आदमी जो भाषा बोल रहा है, वही इंसान की स्वाभाविक भाषा है। पापा, मम्मा आदि तो बच्चे को सिखाया गया और वो सीख गया। गाय रंभाकर अपने भाव प्रकट कर देती है कि मेरे बच्चो को मत ले जाओ। वास्तव में भाषा एक आवाज़ है, जिसमें भाव छिपा हुआ है और भावों को जान लेना ही भाषा का ज्ञान है।

पर कहीं बच्चे बिना आवाज़ के आंगिक चेष्टाओं द्वारा भी अपने भावों को प्रकट कर देते हैं कि नाराज़ हैं या कुछ चाहिए। आत्मा की भाषा ऐसी है, जिसमें बोलना नहीं है। इसे ही शब्द रहित शब्द कहते हैं। वहाँ अमर-लोक में यही भाषा है।

एक हंस के मन जो आई। दूसर हंस समझ पुनि जाई॥

सुरति की भाषा यही है। यह मूक भाषा है। इस सुरति तक मन अपनी तरंगों को भेजता है और माया में उलझा देता है। जो अनहद शब्द है, उसमें भी माया का खेल होता है, क्योंकि आवाज़ दो के बिना नहीं हो सकती है। शरीर की कोशिकाओं के संपर्क से ही अनहद शब्द होते हैं।

शरीर में आत्मा सात सुरति के रूप में रह रही है। अभी सुरति के कारण संसार के पदार्थों में आनन्द मिलता प्रतीत होता है। वो आनन्द संसार की चीज़ों में नहीं है, सुरति में है। जो चीज़ परमात्मा में है, वही इस सुरति में है।

आत्म में परमात्म दरशो ॥

आत्मा में परमात्मा उसी तरह से है, जैसे जल में शीतलता है, आग में तपश है। उसी तरह आत्मा से परमात्मा अभिन्न है। सूर्य हम तक किरणों के द्वारा पहुँचा, इसी तरह आत्मा में परमात्मा दर्शता है।

इसलिए इस आत्मा में आनन्द भरा पड़ा है। पर मन इस सुरति को पल-पल संसार के पदार्थों में घुमाता रहता है। साहिब का यह शब्द बड़ा सार्थक है।

तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय ॥
कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावे कोय ॥



तहाँ अनहद की घोर, शब्द झनकार है।
लाग रहे सिद्धि साधु, न पावत पार है ॥

जो जिसके शरणागति तिसको ताकी लाज

जो जिसके शरणागति, तिसको ताकी लाज ॥

साहिब कह रहे हैं—

जो मेरे शरणागति आई। तिसको रखूँ मैं प्राण की नाई ॥

कह रहे हैं कि शरणागति में आए हुए प्राणी को प्राणों की तरह रखता हूँ।

मेरे प्रवचनों में कहीं क्रिया योग, कमाई आदि का महत्व नहीं मिलेगा। तपस्या का महत्व नहीं मिलेगा। अगर महत्व है तो शरणागति का। संतत्व की धारा सगुण-निर्गुण धारा से अलग बोल रही है।

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।

अटपट चाल कबीर की, मौसे कही न जाय ॥

हमें भक्ति को ठीक से समझने की ज़रूरत है। भक्ति के धातु को समझने की ज़रूरत है। पहला सगुण-भक्ति को देखते हैं। हम निंदक नहीं हैं सगुण-भक्ति के। हम शुद्ध अध्यात्म की बात कह रहे हैं। पर भक्ति में दोष आ गये।

यह एक धर्म की समस्या नहीं है। सबमें व्यवसायिकता आ गयी। सभी में यह बात आई है। यह नहीं कि एक धर्म बेइमान हो गया। अगर भ्रष्टाचार आया तो सभी में आया; अगर हिंसा आई तो सभी में आई; अगर कमी आई तो सभी में आई। अगर इंसान ठगी करने लगा तो यह

नहीं कि हिंदू करने लगा या मुसलमान करने लगा। यह चीज़ सभी में आई। अगर पाप कर रहा है तो सभी कर रहे हैं। सभी तो साथ रह रहे हैं दुनिया में। ऐसा नहीं है कि हिंदू लोग पाखण्ड कर रहे हैं तो बुद्धिस्ट नहीं कर रहे हैं। हम एक धर्म, एक जाति को दोष नहीं दे सकते हैं। अगर साकार-भक्ति की तरफ नज़र डालते हैं तो ठगी भी थोड़ी-2 दिख रही है। क्यों दिख रही है! कोई हत्या के नाम पर डरा कर लूट रहा है, कोई ग्रहों के नाम पर डरा कर लूट रहा है। कोई देवी-देवताओं के नाम पर लूट रहा है। अगर हम सभी धर्मों के स्थानों को देखें तो वहाँ जो बैठे हैं, वो बाल-बच्चों के लिए बैठे हैं। वो कोई ज्ञानी-ध्यानी नहीं हैं। यह चीज़ सभी धर्मों में है। हमें ईमानदार होकर, निष्पक्ष होकर चिंतन करना होगा कि यह चीज़ सभी कर रहे हैं। साहिब कह भी रहे हैं—

पेट के कारण करे गुरुवाई। पीढ़ी सहित नरक में जाई ॥

आप दूर न जाएँ। यह व्यापार है। यानी इंसान ने धर्म को जीविका उपार्जन का साधन बनाया। कोई भी धर्म-स्थान जायज़ जगह पर नहीं बना है; पब्लिक के धन से बने हैं; किसी एक के नहीं हैं; चंदा करके बनाए गये हैं। चाहे फिर वो मंदिर हो, गुरुद्वारा हो, चर्च हो या गिरजाघर हो। सबकी यही कहानी है। फिर पब्लिक के धन से सृजन होता है। वहाँ जो बैठा, अपना कब्ज़ा कर लिया। पीछे दो कमरे भी बना लेता है। वहाँ अपने परिवार का पालन करने लगा। यह निजि हो गया। फिर बाद में उसका बेटा आ जाता है। पहले लोग समर्पित मिलते थे। बुल्लेशाह ठीक ही कह रहे हैं—

ठाकुर द्वारे ठग हैं बसदे, बिच मसीदा धावड़ी।

मंदिर दे बिच पोस्ती बसदे, आशिक रहन अलग ॥

वो यह कोई व्यंग्य नहीं कर रहे हैं। उन्होंने इन चीज़ों को अनुभव किया। साहिब ने जो भी कहा, उनमें वज़न है। तो इनके अलावा अन्य तरीके भी होते हैं।

एक माता अपने तीन बच्चों के टिबड़े लाई। साथ में 300 रूपये

लाई। वो बोली कि इनका पढ़ाई में मन नहीं लगता है। मैंने पूछा कि तूने नाम लिया है? कहा-हाँ। मैंने कहा कि अभी भी झंझटों में है न! उसे किसी ने कहा होगा कि ग्रह का प्रकोप है। एक माई अपनी एम. ए. पास लड़की को लाई और टिबड़ा (जन्म पत्री) भी लाई। वो बोली कि यह पढ़ती है तो याद नहीं रहता है; शनि का प्रकोप है। वाह, कैसा शनि है कि बच्चा जो पढ़ रहा है तो भुला रहा है, याद नहीं रहने दे रहा है। नहीं, शनि महाराज उसे नहीं भुला रहा है। कुछ शातिर लोग शनि की आड़ में पैसे लूटना चाहते हैं। उसे किसी ने कहा कि 1600 रुपये लाओ, हम उपचार कर देंगे। फिर कुछ न कहेगा शनि।

हम कहाँ पहुँच गये हैं! तो माई तीन पत्रियाँ लाई थी। मैंने कहा कि पहले 300 रुपये वापिस ले। मैं फ्रीस नहीं लेता हूँ। मैं ज्योतिष-विद्या भी जानता हूँ। पर ये सब देखना नहीं चाहता, क्योंकि जिसने नाम ले लिया, उसे ग्रह लगेंगे ही नहीं तो देखना क्या है! फिर भी जो देखता हूँ, वो मजबूरी होती है। कोई बड़ा परेशान आ जाए तो मजबूरी में देख लेता हूँ।

ये ग्रह क्या हैं? जन्म-पत्री क्या है? कैसे देखते हैं? पहले देखा जाता है कि बालक का जन्म कहाँ हुआ; कितने बजे हुआ। फिर देखते हैं कि उस समय ग्रहों की दशा क्या थी यानी मंगल कहाँ था, शनि कहाँ था। मान लो कि मंगल ग्रह जन्म के समय पृथ्वी के बहुत नज़दीक था तो वो उसकी जन्मकुण्डली का स्वामी बनता है। हो सकता है कि उस समय बंगाल में जो बच्चा हुआ, वो मंगली हो पर जब हिमाचल में हुआ तो हो सकता है कि वहाँ चंद्र नज़दीक हो। इसलिए पहले जन्म-स्थान की ज़रूरत है। फिर राशी देखी जाती है। 12 राशियाँ हैं। मान लो कि मंगल है तो जब मंगल कठिन स्थिति की तरफ जाने वाला होता है तो देखकर बता देते हैं कि अब कठिन समय आने वाला है। यानी आने वाले समय का भी पता चल जाता है।

कभी पूछते हैं कि कौन-सा काम करे? मान लो कि सिंह राशि

है और शनि है तो वो खतरे वाले काम करेगा। उसकी रुचि वहाँ होगी। मान लो, कन्या राशि वाला है तो वो खतरे वाले काम नहीं करना चाहेगा। धनु वाला चालाक होगा। फिर मिलान किया जाता है। अब किसी की मूषक है तो दूसरे की बिलाव है तो उनकी नहीं बनेगी। किसी की सर्प है तो दूसरे की नेवला, तो भी नहीं बनेगी। तो यह बहुत बड़ा विज्ञान है। कम-से-कम मैथ में एम. ए. चाहिए। पर लोग यह धंधा कर रहे हैं। पहले सही बताते थे, पर अब नक़ल करके बता देते हैं; पता कुछ होता नहीं है।

ख़ैर, नामी को तो इन चीज़ों की ज़रूरत ही नहीं है। क्योंकि नाम के बाद ग्रह कुछ नहीं कर सकते हैं। जब गुरु पर सारा भार सौंप दिया तो फिर इनमें नहीं उलझना है।

जीवन का सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में।

है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में॥

यही भाव होना चाहिए। तो मैंने माई को कहा कि च्यवनप्राश खिलाओ बच्चों को, ट्यूशन पढ़ाओ, वो नालायक हैं। शनि कुछ नहीं कर रहा है। वो तो कह रहे हैं कि शनि नहीं पढ़ने दे रहा है। इतना-इतना सामान लाओ, तप करो, तब पढ़ने देगा। माई पहले यह सब करती आई थी। तो किसी ने सलाह दी कि ग्रह-दशा तो दिखाओ।

मैं आपके पास शुद्ध चीज़ पहुँचा रहा हूँ। बड़े-2 डायरेक्टर, लेक्चरर भी नामी हैं। एक ने कहा कि डॉ० लोग बहुत अधिक लूटते हैं। मैंने तो अपने नामियों को कह दिया है कि भ्रमित करके धन नहीं लेना है। पहले डॉ० के पास मरीज़ जाता था तो कहते थे कि दुखी आ गया है। पर अब कहते हैं कि ग्राहक आ गया है। अब नेता लोगों की सहायता से सबने अपने अपने निजी कालेज खोल लिये हैं; कोचिंग सेंटर खोल लिये हैं। यह सब व्यवसाय के लिए ही तो है। बड़ी मोटी-2 रक़म ले रहे हैं। बच्चे बड़ी डोनेशन देकर पढ़ रहे हैं। सरकार के पास इतनी नौकरियाँ नहीं हैं। तो बैंक वाले कह रहे हैं कि लोन लो। तो बच्चे कहीं नर्सिंग होम तो कहीं कुछ खोल लेते हैं। डॉ० रखे हैं। तनखाह नहीं निकल रही है।

एक नामिन आई; उसने हास्पिटल खोला। वो बोली कि आपकी राह पर चलकर कमाना मुश्किल है। क्योंकि डॉ० लोगों का काम ही यही है कि मरीज को भ्रमित करके धन लेना। थोड़ी-सी बीमारी हो तो आप्रेशन के लिए बोलना। सब इसी तरह करते हैं। जो जरूरी नहीं हैं, वो-वो टेस्ट लिखते हैं। बड़े मँहगे होते हैं। जैसे वकील मुकद्दमा खत्म नहीं होने देना चाहता है, ऐसे ही डॉ० भी मरीज को छूटने नहीं देना चाहता है। यदि इंसान सच्चाई की राह पर चलेगा तो कुछ तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। पर यदि झूठ पर चलेगा तो आत्मा का हनन हो जायेगा।

एक ने मुझे 40 लाख की ज़मीन दी। पटवारी 5 हजार रुपये फ़रद काटने के माँग रहा था। 2 साल हो गये, पड़ी रहने दी, पर घूस नहीं दी।

तो जिस बिंदू पर हैं, हिलने नहीं देना चाहते हैं। डॉ० आपको बाहर निकलने नहीं देना चाहता है। बाबा जी आपको नहीं निकलने देना चाहता है।

दसों दिशा में लागी आग, कहें कबीर कहाँ जड़यो भाग॥

तो सभी मत-मतान्तर व्यवसायिक तौर पर भक्ति की बात कर रहे हैं। जितने भी धर्म के धर्म-स्थान हैं, वहाँ बैठे लोग अच्छे नहीं हैं। कोई भी धर्म-स्थान बनता कैसे है? पब्लिक के पैसे से बनता है। पर वो अगुआ धन-संग्रह करके उस स्थान का सृजन करता है। फिर वो वहाँ पुजारी, ज्ञानी, मौलवी, महन्त आदि बनकर बैठता है। उससे आने वाली आय वो अपने निजी तौर पर इस्तेमाल करता है। बहुतायत उनकी है, जो यह काम धन के लिए करते हैं।

पेट के कारण करे गुरुवाई। पीढ़ी सहित नरक में जाई॥

वो सब पेट के लिए यह काम करते हैं। यह बात समझ आती है। धीरे-धीरे वो स्थान निजी हो जाता है। यहाँ समस्या एक धर्म की नहीं है। यह सभी में है। जो हमें कल्याण का संदेश दे रहे हैं, क्या उनकी रहनुमाई में आत्मकल्याण कर सकेंगे!

अंधा अगुआ तेहि गुण माहिं । बहु अंधा तेहि पाछे जाहिं ॥

इसके साथ एक चीज़ और देखते हैं कि केवल इतना ही नहीं है कि पेट पालने का धंधा किया जाता है। पर वो धोखा भी कर रहे हैं, छल भी कर रहे हैं। कुछ समय पहले बहुत बड़ा यज्ञ हुआ; चारों ओर पब्लिक दौड़ाई गयी, जो धन इकट्ठा कर रही थी। चंदे के लिए काफ़ी लोग लगे थे। रसीद बुक कइयों के पास थी। उसने सोचा कि यदि चंदे का आधा भी देंगे तो भी ठीक है। और सब धन कमाने के लिए जुट गये। लड़के-लड़कियाँ सब चंदा करने लगे। कहने लगे कि द्वापर के बाद यह पहला यज्ञ है। वो जबरन भी वसूल करने लगे। फिर वहाँ हवन कुण्ड बनाए गये। 1100-1500 रुपये फ़ीस थी। करोड़ों रुपये लूटकर महात्मा जी निकल पड़े। उनकी आमदनी देखकर सतवा करने वाले शास्त्री, चेले आदि की आँखें खुल गयीं; सोचा कि हम तो ऐसे ही लगे हुए हैं। उन्होंने सतवा करना बंद कर दिये और यज्ञ करने लगे। पर बाद में यज्ञ फलाप हो गये और फिर शास्त्री लोगों ने सतवा और यज्ञ दोनों करना शुरू किये ताकि कोई भी बचकर न जा सके।

अब मेरा सवाल है कि कितने लोगों में बदलाव आया! कितने लोग नैतिकता की तरफ आए! नैतिकता की बात पर चुटकुला याद आ गया। कहीं एक बस में एक बूढ़ी स्त्री चढ़ी। बस भरी हुई थी; कोई सीट नहीं थी। वो खड़ी रही। एक स्त्री और खड़ी थी। वो बोली कि देखो, आज नैतिकता का अभाव हो गया है। वो भाषण करने लगी। एक नौजवान खड़ा हो गया। इतने में, जो भाषण कर रही थी, वो खुद वहाँ बैठ गयी। यह है हमारी नैतिकता! वो नैतिकता का पाठ पढ़ा रही थी। इस पर साहिब कह रहे हैं—

कहंता नर बहुता मिले, गहंता मिले न कोय ।

वह कहंता बह जाने दे, जो नहीं गहंता होय ॥

इसलिए जब भक्ति की तरफ नज़र डालें तो पता चल रहा है कि भ्रमांक लोग इसका संचालन कर रहे हैं।

बंधे को बंधा मिला, गाँठ छुड़ावे कौन।

अँधे को अँधा मिला, राह दिखावे कौन॥

जब व्यापक दृष्टि से देखें तो बाहरी भक्ति लोग पेट पालने के लिए कर रहे हैं। मैं बताना चाह रहा हूँ कि मुझे पैसे की ज़रूरत नहीं है, पेट पालने की ज़रूरत नहीं है। मैं 40 साल पहले पेट पालने वाला धंधा किया है। जब मैं फौज में भर्ती हुआ था तो वो था पेट पालने वाला धंधा। अब 8 हजार रुपये पेंशन मिलती है। इसी से खाता हूँ। मैं फ़ालतू खाता नहीं हूँ; आराम की जिंदगी जीता नहीं हूँ। प्लेन में यात्रा करता हूँ तो 500 रुपये की डाइट होती है। मैं कुछ भी नहीं लेता हूँ। एक लड़की पूछने लगी कि आप कुछ नहीं ले रहे हैं। मैंने कहा कि आप जूठन उठाते हैं, वेज और नानवेज दोनों उन्हीं हाथों से परोसते और उठाते हो। मैं पानी भी अपना ही लेकर जाता हूँ। केवल एक टायलेट का इस्तेमाल कर लेता हूँ।

तो जिस चीज़ के लिए बोल रहा हूँ, वो भी शुद्ध है। मैं समाज में सुधार के लिए बोल रहा हूँ। जो पैसा संगत देती है, उसमें से एक नया पैसा भी ग़लत इस्तेमाल नहीं होने देना चाहता हूँ। मैं जो सिद्धांत अपनी संगत को बता रहा हूँ, पहले खुद उनपर चल रहा हूँ।

चुनावों के समय सभी महात्मा किसी-न-किसी का प्रचार करते हैं। मैं किसी का ऐम्बैसेडर नहीं बनता हूँ।

कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी माँगे खैर।

न काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर॥

तो हम इन साकार, निराकार भक्तियों से हटकर शरणागति की बात कर रहे हैं। हम कह रहे हैं कि अपनी कमाई से कुछ नहीं होगा; जो कुछ होगा, कृपा से ही होगा। मैंने जो वस्तु दी, वो आपको सुरक्षा भी देगी।

अद्भुत नाम सदा रखवाला॥

नाम देकर रूह को सुरक्षित कर दिया।

नव ग्रह का बस नहीं चलाई। सबै विघ्न सदा टल जाई ॥

संसार-सागर से पार होने का सूत्र नाम ही है। हम संसार-सागर से बिना नाम के किसी भी कीमत पर पार नहीं हो सकते हैं। किसी भी तरह नहीं। तो यह कैसा नाम है? यह एक दिव्य चेतना है। इसके जागने से ही हमारा व्यक्तित्व प्रकाशित होगा। तभी हम अन्दर के शत्रुओं को समझ पायेंगे। आत्मदेव को बाँधने वाला पैदा नहीं हुआ है। आत्मा को कोई कैद नहीं कर सकता है। यह कैद होने वाली चीज़ ही नहीं है। यह नित्य है। यह कैद नहीं हो सकती है। पर यह अपनी शक्ति से अपना नाश कर रही है। इसमें दोष नहीं आ सकते हैं। इसमें से कुछ निकाला नहीं जा सकता है; इसमें कुछ डाला नहीं जा सकता है। बड़ा ही निराला तत्व है। इसमें से कुछ न्यूनाधिक नहीं हो सकता है। यह बड़ी अनूठी है। यह निराली है। इसलिए कहा गया—

**ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो माया वश भयो गुसाईं। बंध्यो जीव मरकट की नाई ॥**

सिर्फ यह आत्मा मन का अनुकरण कर रही है। मन कह रहा है कि घूमने चलो तो यह घूमने चल रही है। आत्मा न कह दे तो मन कुछ नहीं कर सकता है। मन की अपनी मूल उर्जा नहीं है। आत्मा की मूल उर्जा है। मन की शक्ति का आधार आत्मा है। वो कह भर सकता है कि घूमने चलना है। पर यह काम मन नहीं कर सकता है। इसलिए आत्मा अपनी ताकत के द्वारा ही भ्रमित हो रही है।

**आपा को आपा ही बंध्यो ॥
जैसे सुनहा काँच मंदिल मां, भरमत भूँकि पर्यो ॥
जैसे गज फटिक शिला पर, दसनन आनि अर्यो ॥
जैसे नाहर कूप में, अपनी प्रतिमा देख पर्यो ॥
मरकट मूठि स्वाद न बिसरे, घर घर नटत फिरो ॥
कहत कबीर नलनी के सुगना, तोहि कवने पकरो ॥**

यह बात इस बात को इंगित करती है कि आत्मा को बंधन में डालने वाला कोई नहीं है। यह अपने आप में पूर्ण है।

हंसा तू तो सबल था, अटपट तेरी चाल।

रंग कुरंग ते रंग लिया, अब क्यों फिरत बेहाल ॥

जब नाम की ताक़त आती है तो यह चेतन हो जाती है। इसके अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है।



शब्द न जानउ गुरु का, पार परऊ कित बाट।
ते नर डूबे नानका, जिनका बड़-बड़ ठाट ॥

साहिब अमृत वाणी

सतगुरु शब्द सुधारें

ना हरि भजसि न आदत छूटी ॥
शब्दहि समुझि सुधारत नाहीं, आँधर भये हियहु की फूटी ॥
पानी माहिं पषाण की रेखा, ठोंकत उठे भभूका ॥
सहस घड़ा नित उठि जल ढारै, फिर सूखे का सूखा ॥
सेतहिं सेत सितंग भौ, सैन बाहु अधिकाई ॥
जो सन्निपात रोगियन मारै, सो साधुन सिद्धि पाई ॥
अनहद कहत कहत जग बिनसै, अनहद सृष्टि समानी ॥
निकट पयाना यमपुर धावै, बोलै एकै बानी ॥
सतगुरु मिलैं बहुत सुख लहिये, सतगुरु शब्द सुधारैं ॥
कहहिं कबीर ते सदा सुखी हैं, जो यह पदहिं बिचारै ॥

यह मनुष्य न तो प्रभु की भक्ति करता है और न ही उसकी बुरी आदतें छूटती हैं। ज्ञान की बातों को समझने पर भी यह सुधरता नहीं है, क्योंकि यह अन्दर की आँख से अँधा है। जिस तरह पानी में कोई पत्थर पड़ा हुआ हो और उसे निकालकर चोट की जाए तो भी उसमें से आग ही निकलती है। पत्थर पर हजारों घड़े पानी रोज़ डालो, पर वो फिर सूखे का सूखा ही रहता है, कठोर ही बना रहता है। इसी तरह अज्ञानी मनुष्य की हालत है, चाहे कितनी भी ज्ञान की बातें सुनाओ, कोई असर नहीं होता है। उम्र के साथ-साथ बाल सफ़ेद होते जाते हैं और शरीर के अंग

दुर्बल होते जाते हैं और ऐसे में आलस्य भी बढ़ता जाता है। काम, क्रोध आदि जिन मानसिक रोगों से संसार के लोग ग्रसित रहते हैं, उन्हें साधु लोग जीत लेते हैं। दुनिया अनहद शब्द में उलझ गयी है। पर अनहद शब्द की बातें करने वाले नष्ट हो गये, मृत्यु का समय निकट आने पर भी वे समझ नहीं पाते हैं कि वे मोक्ष को प्राप्त नहीं हुए हैं। साहिब कह रहे हैं कि यदि सद्गुरु मिल जाएँ तो उनके शब्द (नाम) से ही जीव अन्दर के शत्रुओं से बचकर सुधर सकता है और तभी उसे सच्चा आत्मसुख मिल सकता है।



मिले न बुझावनहारा

नरहरि लागि दौं विकार बिनु इंधन, मिले न बुझावनहारा ॥
 मैं जानों तोहि से व्यापै, जरत सकल संसारा ॥
 पानी माहिं अगिन को अंकुर, जरत बुझावै पानी ॥
 एक न जरे जरें नौ नारी, युक्ति न काहू जानी ॥
 शहर जरे पहरू सुख सोवै, कहै कुशल घर मेरा ॥
 पुरिया जरै वस्तु निज उबरै, बिकल राम रंग तेरा ॥
 कुबज पुरुष गले एक लागा, पूजि न मन की सरधा ॥
 करत विचार जन्म गौ खीसे, ई तन रहत असाधा ॥
 जानि बूझि जो कपट करतु है, तेहि अस मन्द न कोई ॥
 कहहिं कबीर तेहि मूढ़ को, भला कौन विधि होई ॥

मनुष्य के भीतर विषय-विकारों की आग लगी हुई है, पर उसे बुझाने वाले कोई सद्गुरु नहीं मिल रहे। इसमें मनुष्य की अपनी ही भूल है, क्योंकि आत्मा में ये विकार नहीं हैं। सारा संसार ही इस आग में जल रहा है। पानी में आग का अंश रहता है, क्योंकि अग्नि से ही पानी की उत्पत्ति है, पर पानी जलती हुई आग को बुझा देता है। इसी तरह मन से ही इन विषय-विकारों की उत्पत्ति है, पर मन को सद्गुरु में लगाकर

विषय-विकारों की इस आग को बुझाया जा सकता है। यह काया तो जल जाती है, पर वासना नष्ट नहीं होती। उसे समाप्त करने की युक्ति कोई नहीं जानता है। मनुष्य तो इस तरह बेफ़िक्र है जैसे किसी शहर में आग लगी हो और पहरेदार मजे से सो रहे हों; उन्हें आग लगने की ख़बर ही न हो। यदि विषय वासनाएँ जल जाएँ, विकार नष्ट हो जाएँ तो आत्म-तत्त्व का कल्याण हो जाए। नपुंसक पुरुष मिल जाए तो स्त्री की चाह पूरी नहीं होती। ऐसे ही सच्चे सद्गुरु नहीं मिलता तो न ही अन्दर के विकार नष्ट होते हैं और न ही सच्चा सुख मिलता है। मनुष्य सच्ची शांति का विचार करता ही रह गया और जिंदगी घिस गयी; तन को साधा नहीं जा सका। जो मनुष्य ज्ञान होने पर भी जानबूझ कर विषय-विकारों में उलझते हैं, उनके समान मूर्ख कोई नहीं है।



सतगुरु मेरे आये

आज सुबेलो सुहावनो, सतगुरु मेरे आये।
चन्दन अगर बसाये, मोतियन चौक पुराये॥
सेत सिंघासन बैठे सतगुरु, सुरति निरत करि देखा।
साध कृपा ते दरसन पाये, साधु संग बिसेखा॥
घर आँगन में आनन्द होवै, सुरति रही भरपूर।
झारि झारि पड़ै अमीरस दुर्लभ, है नेड़े नहिं दूर॥
द्वादस मद्ध देखि ले जोई, बिच है आपै आपा।
त्रिकुटी मध तू सेज निरखि ले, नहिं मंतर नहिं जापा॥
अगम अगाध गती जो लखिहै, सो साहिब को जीवा।
कहै कबीर धरमदास से, भेंटि ले अपनो पीवा॥

सद्गुरु के घर पधारने पर वातावरण सुहावना हो गया है। साधु संतों का संग पाकर परमात्मा रूपी प्रियतम को पाने का अवसर प्राप्त हो जाता है। जो उनकी शरण में आकर उस अगम प्रभु को पहचान लेता है, वो साहिब का जीव हो जाता है।



गुरु के हाथ काहे न बिकानो

हम तो एक ही करि जानो ॥
 दोय कहै तेहि को दुबिधा है, जिन सतनाम न जानो ।
 एकै पवन एक ही पानी, एकै जोति समानो ॥
 इक मिट्टी कै घड़ा गढ़ै ला, एकै कोहँरा सानो ॥
 माया देखि के जगत भुलानो, काहे रे नर गरबानो ॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के हाथ काहे न बिकानो ॥

मैंने तो उस प्रभु को एक ही करके जाना है। जो दो कहता है, वो दुविधा में है; वो सत्य नाम को नहीं जानता है। वास्तव में पवन और पानी एक ही हैं और एक ही में समा जायेंगे। एक ही मिट्टी से शरीर रूपी घड़ा बनता है और उसे बनाने वाला एक ही कुम्हार है। माया देखकर सारा संसार मोहित हो गया है। हे मनुष्य! तू क्यों घमण्ड करता है? तू इस माया से छूटने के लिए गुरु के हाथों क्यों नहीं बिक जाता!



योगिया बहुरि गुफा नहिं आवै

योगिया फिरिगौ नगर मँझारी, जाय समान पाँच जहाँ नारी ॥
 गयेउ देशान्तर कोई न बतावै, योगिया बहुरि गुफा नहिं आवै ॥
 जरि गयो कन्थ धजा गई टूटी, भजि गयो डंड खपर गयो फूटी ॥

योगी लोग अन्दर की दुनिया में खूब घूमते हैं। पर उन्हें यह कोई नहीं बताता कि जब शरीर को त्यागकर जाना पड़ेगा तो फिर भँवर गुफा में नहीं आ सकेगा। क्योंकि तब शरीर जला दिया जायेगा, स्वाँस टूट जायेगी, मेरुदण्ड नष्ट हो जायेगा और खोपड़ी भी फूट जायेगी। यानी शरीर में स्थित जिन स्थानों को योगी ने सत्य मान रखा है, वो तो नाशवान् हैं।



तेरो को है रोकनहार

तेरो को है रोकनहार, मगन से आव चल ॥
 लोक लाज कुल की मर्यादा, सिर से डारि अली।
 पटक्यो भार मोह माया को, निर्भय राह गही ॥
 काम क्रोध हंकार कलपना, दुरमति दूर करी।
 मान अभिमान दोऊ धर पटक्यो, होइ निसंक रली ॥
 पाँच पचीस करे बस अपने, करि गुरु ज्ञान छड़ी।
 अलग बगल के मारि उड़ाये, सनमुख डगर धरी ॥
 दया धर्म हिरदे धरि राख्यो, पर उपकार बड़ी।
 दया सरूप सकल जीवन पर, ज्ञान गुमान भरी ॥
 छिमा सील संतोष धीर धरि, करि सिंगार खड़ी।
 भई हुलास मिली जब पिय को, जगत बिसारि चली ॥
 चुनरी सबद विवेक पहिरि के, घर की खबर परी।
 कपट किवरिया खोल अंतर की, सतगुरु मेहर करी ॥
 दीपक ज्ञान धरे कर अपने, पिय को मिलन चली।
 बिहसत बदन रु मगन छबीली, ज्यों फूली कँवल कली ॥
 देख पिया को रूप मगन भइ, आनन्द प्रेम भरी।
 कहै कबीर मिली जब पिय से, पिय हिय लागि रही ॥

तुझे रोकने वाला कोई नहीं है, इसलिए तू मग्न होकर परमात्मा रूपी प्रियतम की राह पर चल। तू लोक-लाज और कुल-मर्यादा को सिर से उतार दे। तू मोह-माया का भार उतार कर निर्भय होकर परमात्मा की राह दृढ़ता से पकड़। काम, क्रोध, अहंकार आदि को दूर कर और गुरु के ज्ञान रूपी छड़ी से काम, क्रोध आदि पाँच चोरों और शरीर की पचीस प्रकृतियों को वश में कर। अपने हृदय में दया का भाव रख और दूसरों का उपकार कर। तू छिमा, संतोष, धैर्य आदि का श्रृंगार करके मार्ग में खड़ी हो। ऐसे में संसार को त्यागकर जब प्रियतम के पास चलेगी और

बड़ा सुख पायेगी। तू विवेक की चुनरी ओढ़कर अपने घट के शत्रुओं की खबर ले, उन्हें पहचान। तू अन्दर के कपट को छोड़ दे, तभी सद्गुरु मेहर करेंगे। परमात्मा रूपी प्रियतम से मिलने जाना है तो अपने दिल में ज्ञान का दीपक जला ले। जैसे कली खिलती है, ऐसे ही तेरा बदन भी प्रियतम को पाकर खिल उठेगा। तू प्रियतम का रूप देखकर आनन्द में मगन हो जायेगी। तू जब प्रियतम से मिलेगी तो उनके हृदय से लग जायेगी।



दिल में खोजि दिलहि में खोजो

अल्लाह राम जियो तेरी नाई, जिन्ह पर मेहर होहु तुम साई ॥
 क्या मुण्डी भुईं शिर नाये, क्या जल देह नहाये ॥
 खून करे मिस्कीन कहाये, अवगुण रहे छिपाये ॥
 क्या वजू जप मंजन कीये, क्या महजिद शिर नाये ॥
 हिन्दू बरत एकादशी चौबिस, तीस रोजा मुसलमाना ॥
 ग्यारह मास कहो किन टारे, एक महीना आना ॥
 जो खुदाय महजीद बसतु है, और मुलुक केहि केरा ॥
 तीरथ मूरत राम निवासी, दुइमा किनहुँ न हेरा ॥
 पूरब दिशा हरि को वासा, पश्चिम अल्लह मुकामा ॥
 दिल में खोजि दिलहि में खोजो, इहै करीमा रामा ॥
 वेद कितेब कहा किन झूठा, झूठा जो न बिचारे ॥
 सब घट एक एक कै लेखे, भय दूजा के मारे ॥
 जेते औरत मर्द उषाने, सो सब रूप तुम्हारे ॥

हे जीव! अल्लाह और राम भी तेरे समान ही हैं। यानी उनमें भी आत्मा है। तू जिस पर मेहर कर दे, उसी को परमात्मा बना देता है। पत्थरों को माथा टेकने से क्या लाभ! शरीर को नदियों में स्नान करवाने से भी कुछ लाभ न होगा। बलि और कुर्बानी के नाम पर यह मनुष्य जीव-हत्या करता है और अपने इस दोष को छिपाने के लिए अपने को फ़क़ीर

कहलाता है। वुजू, जप, स्नान आदि करने से और मंदिर-मसजिद आदि में सिर झुकाने से तो कुछ होने वाला है नहीं। हृदय में तो कपट समाया हुआ है, इसलिए मक्के आदि जाकर नमाज़ अदा करने से भी कुछ न होगा। साल भर में 24 एकादशी व्रत रख लेते हैं, 30 दिन रोज़ा रख लेते हैं। इस तरह साल में एक महीना ही पवित्र है क्या! बाकी दिन किसने अपवित्र कर दिये? यदि खुदा मसजिद में बसता है तो बाहर जो मुल्क है, वो किसका है? यदि राम तीर्थ, मूर्ति आदि में ही निवास करता है तो बाहर के संसार में कौन रहता है? सब पाखण्ड में ही उलझे हुए हैं, सत्य की खोज कोई नहीं करता। कोई पूर्व की ओर मुख करके पूजा करता है तो कोई पश्चिम की ओर मुँह करके नमाज़ अदा करता है। वास्तव में वो प्रभु तो दिल में निवास करने वाला है, इसलिए उसकी खोज करना चाहते हो तो दिल में करो। वेद और कितेब को किसने झूठा कहा है? झूठा तो वो है, जो उनपर विचार नहीं करता है। हे मनुष्य, सबमें एक जैसी आत्मा देख और दूसरों पर अत्याचार करने से भय कर। संसार में जितने भी स्त्री-पुरुष हैं, उन सबमें तुम्हारी ही तरह आत्मा है।



सतगुरु साहिब आये मेरे पहुना

आज दिन के मैं जाऊँ बलिहारी ॥
 सतगुरु साहिब आये मेरे पहुना। घर आँगन लगै सुहौना ॥
 साध संत लगे मंगल गावन। भये मगन लखि छबि मन भावन ॥
 चरन पखारूँ बदन निहारूँ। तन मन धन सब गुरु पर वारूँ ॥
 जा दिन आये साध धन सोई। होत अनन्द परम सुख होई ॥
 सुरति लगी सतनाम की आसा। कहैं कबीर दासन कर दासा ॥

सद्गुरु के घर आने पर घर सुहावना लग रहा है। ऐसे में उनके चरण पखार कर तन, मन, धन सब उनपर वार देने का जी चाहता है। अब

तो दासों का दास हो गये हैं यानी अहंकार का त्याग हो गया है और उस साहिब के नाम में ही सुरति लग गयी है।



अजहूँ तेरा ना गयो

दरस तुम्हारे दुर्लभ, मैं भड़ हूँ दीवानी॥
 ठाँव ठाँव पूजा करें, मिलि सखी सयानी।
 पिय कै मरम न जानही, सब भर्म भुलानी॥
 बैस गई पिय ना मिले, जरि जात जवानी।
 आइ बुढ़ापा घेरि लियो, अब का पछितानी॥
 पानन सी पियरी भई, दिन दिन पियरानी।
 आग लगै उहि जोबना, सोवै सेज बिरानी॥
 अजहूँ तेरा ना गयो, सुमिरो सतनामा।
 कहै कबीर धर्मदास से, गहु पद निर्बाना॥

हे प्रभु! मैं तो पगली हो गयी हूँ, इसलिए तुम्हारे दर्शन दुर्लभ हो गये हैं। मैं तो जगह-जगह माथा मार रही हूँ और प्रियतम का भेद नहीं जान पा रही हूँ, भ्रम में भूली हुई हूँ। मेरी उम्र तो ज्यों ही बीत गयी, पर प्रियतम नहीं मिले। मेरी जवानी भी समाप्त हो गयी और बुढ़ापे ने घेर लिया है। अब पछिताने से क्या लाभ! उस जवानी को आग लगे, जिसमें बेगानी सेज में ही सोती रही अर्थात् सच्चे साहिब रूपी प्रियतम को छोड़ अन्य देवी-देवों में ही उलझी रही। साहिब समझा रहे हैं कि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, तू सत्यनाम का सुमिरन कर और निर्वाण पद को प्राप्त कर।



सतगुरु है रंगरेज

सतगुरु है रंगरेज, चुनरि मेरी रंग डारी॥

स्याही रंग छुड़ाइ के, दियो मजीठा रंग।
 धोये से छूटै नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग॥
 भाव के कुण्ड नेह के जल में, प्रेम रंग दइ बोर।
 चसकी चास लगाइ के रे, खूब रंगी झकझोर॥
 सतगुरु ने चुनरी रंगी रे, सतगुरु चतुर सुजान।
 सब कुछ उन पर वार दूँ रे, तन मन धन औ प्रान॥
 कहै कबीर रंगरेज गुरु रे, मुझ पर हुए दयाल।
 सीतल चुनरी ओढ़ि के रे, भइ हों मगन निहाल॥

सद्गुरु रूपी रंगरेज ने शरीर रूपी चुनरी को अपने रंग में रँग लिया है। काला रंग छुड़ाकर पक्का रंग दिया है, जो धोने से भी छूटता नहीं है बल्कि दिन-दिन उजला होता जाता है। ऐसे सद्गुरु पर तन, मन और धन वार देना है। साहिब कहते हैं कि ऐसी चुनरी ओढ़कर जीवात्मा मगन हो गयी है।



जो तू पिय की लाड़ली

जो तू पिय की लाड़ली, अपना करिले री।
 कलह कल्पना मेट के, चरनन चित दे री॥
 पिय को मारग कठिन है, खाँड़े की धारा।
 डिगमिगै तो गिरि पड़ै, नहिं उतरे पारा॥
 पिय को मारग सुगम है, तेरो चाल अनेड़ा।
 नाचि न जानै बावरी, कहै आँगन टेढ़ा॥
 जो तू नाचन नीकसी, तो घूँघट कैसा।
 घूँघट का पट खोलि दे, मत करै अँदेसा॥
 चंचल मन इत उत फिरै, पनिबर्त जनावै।
 सेवा लागी आन की, पिय कै पावै॥

यदि तू साहिब रूपी प्रियतम की प्यारी है तो मन की सब कल्पनाएँ मिटाकर सद्गुरु के चरणों में ध्यान लगा और उन्हें अपना बना ले। प्रियतम का मार्ग तो बड़ा ही कठिन है। यह तो तलवार की धार पर चलने के समान है। यदि डिगमिग चाल से चली तो गिर पड़ेगी और पार नहीं उतर पायेगी। इसलिए भक्ति मार्ग में दृढ़ होकर चलना। पर वास्तव में प्रियतम का मार्ग सुगम ही है; तेरी चाल ही गलत है। यह तो वैसा ही है जैसे नाचना तो आता नहीं है और कहती है कि आँगन ही टेढ़ा है। अगर तूने नाचने का पेशा चुना है तो फिर घूँघट क्यों करती है! सब संदेह मिटाकर घूँघट को खोल दे। अर्थात् जब साहिब को पाने के लिए भक्ति मार्ग में कदम रख दिया है तो फिर निंदा से मत घबरा। तेरा मन तो चंचल होकर इधर-उधर भाग रहा है अर्थात् तू अन्य देवी-देवों में भूली हुई है। यदि तू अपने प्रियतम को छोड़कर दूसरे की सेवा में लगी हुई है तो ऐसे में साहिब रूपी प्रियतम कैसे मिलेंगे!



गुरु दियो बौराइ

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो, गुरु दिहलैं जगाइ ॥
 चरन कँवल कै अंजन हो, नैना लेलूँ लगाइ।
 जा से निदिया न आवै हो, नहिं तन असलाइ ॥
 गुरु के वचन निज सागर हो, चलु चली हो नहाइ।
 जनम जनम के पपवा हो, छिन में डारब धुवाइ ॥
 वहि तन कै जग दीप कियो, स्तुत बतिया लगाइ।
 पाँच तत्त कै तेल चुआये, ब्रह्म अगिन जगाइ ॥
 सुमति गहनवाँ पहिरलौं हों, कुमति दिहलौं उतार।
 निर्गुन मँगिया सँवरलौं हो, निर्भय सेंदुर लाइ ॥
 प्रेम पियाला पियाइ के हो, गुरु दियो बौराइ।

बिरह अग्नितन तलफै हो, जिय कछु न सुहाइ॥
ऊँच अटरिया चढ़ि बैठलुँ हो, जहँ काल न खाइ।
कहै कबीर विचारि के हो, जम देखि डराइ॥

मैं अज्ञान की नींद में सोई हुई थी कि सद्गुरु ने आकर जगा दिया। अब तो उनके चरण कँवलों को अंजन की तरह आँखों में लगा रखा है, जिससे नींद भी नहीं आती है और न ही शरीर ही सुस्त पड़ता है। अब तो गुरु के शब्दों के सागर में ही नहाती रहती हूँ, जिससे जन्म-जन्म के पाप पल में धुल जाते हैं। इस तन को दीपक के समान करके पाँच तत्वों का तेल चुवाकर हृदय में ब्रह्म अग्नि को प्रकट कर दिया है। इस तरह कुमति को दूर करके सुमति को अपना लिया है। गुरु ने प्रेम का प्याला पिलाकर पागल कर दिया है। अब तो उन्हीं के बिरह में तन तड़पता रहता है और हृदय में उनके सिवाय कुछ सूझता नहीं है। अब तो ऊँची अट्टारी पर चढ़ गयी हूँ, जहाँ से काल पकड़कर नहीं खा सकता है। वो देखकर भयभीत हो जाता है।



पिंड ब्रह्मण्ड के पार है, सत्य पुरुष निजधाम।
सार शब्द जो कोई गहै, लहै तहां विश्राम॥

पुस्तक सूची

हिन्दी में

- | | |
|--|---|
| 1. परा रहस्या | 18. सहजे सहज पाइये |
| 2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु | 19. रोगों से छुटकारा |
| 3. पावन प्रार्थनाएँ | 20. सद्गुरु महिमा |
| 4. सद्गुरु चालीसा | 21. भक्ति के चोर |
| 5. वार्षिक डायरी | 22. अनुरागसागर वाणी |
| 6. सद्गुरु भक्ति | 23. भक्ति सागर |
| 7. कहाँ से तू आया और कहाँ
तुझे जाना रे? | 24. हरि सेवा युग चार है, गुरु
सेवा पल एक |
| 8. सत्संग सुधारस | 25. सत्य नाम के पटतरे उबरे
पतित अनेक |
| 9. नाम अमृत सागर | 26. काग पलट हंसा कर दीना |
| 10. अमृत वाणी | 27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग
खोजे बन माहिं |
| 11. सद्गुरु नाम जहाज़ है | 28. गुरु पारस गुरु परस है |
| 12. चल हंसा सतलोक | 29. गुरु अमृत की खान |
| 13. कोटि नाम संसार में तिनते
मुक्ति न होय | 30. शीश दिये जो गुरु मिले तो
भी सस्ता जान |
| 14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला
कोय | 31. मूल सुरति |
| 15. गुरु सुमिरै सो पार | 32. भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरु सत्य धर्मदासा |
| 16. तीन लोक से न्यारा | |
| 17. सेहत के लिए ज़रूरी | |

- | | |
|---|--|
| 33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी | 43. सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल |
| 34. गुरु संजीवन नाम बतावे | 44. निराले सद्गुरु |
| 35. नाम बिना नर भटक मरे | 45. कुँजड़ों की हाट में हीरे का क्या मोल |
| 36. रोगों की पहचान | 46. जीवड़ा तू तो अमर लोक का पड़ा काल बस आई हो |
| 37. यह संसार काल को देशा | 47. मुझे है काम 'सद्गुरु से जगत रूठे तो रूठन दे' |
| 38. न्यारी भक्ति | 48. जेहि खोजत कल्पो भये घटहि माहिं सो मूर |
| 39. साहिब तेरी साहिबी सब घट रही समाय | 49. आत्म ज्ञान बिना नर भटके |
| 40. जाप मरे अजपा मरे अनहद भी मर जाए | |
| 41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के निदान में | |
| 42. सुरति समानी नाम में | |



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के.)